चरनदासजी की बानी

पहिला भाग

जिस में

पहिले इन महात्मा का संक्षेप में जीवन चरित्र और उनके अनुभव की महिमा और सब संतों व साध महात्माओं के मार्ग के मूल तत्व की एकता दिखाई है

और

बानी में उक्त महात्मा के ग्रंथ से अति मनोहर और हृदय बेधक भजन, चौपाई, दोहे आदिक, कई प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों से चुनकर मुख्य २ अंगों और रागों के अनुसार यथा क्रम रक्खे गये हैं

और

गूढ़ कड़ियों व कड़े या अनूठे शब्दों के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं

PRINTED AND PUBLISHED AT THE
BELVEDERE STEAM PRINTING WORKS, ALLAHABAD,
BY SACHCHIDANANDA.

1908.

सफ़हा १३६] [दाम ।।)।।

निवेदन

संत बानी सीरीज़ (श्रेणी वा माला) के छपने की सूचना पहिले दी जा चुकी है और यह जताया गया है कि इसका अभिप्राय जक्त प्रसिद्ध महात्माओं की बानी वा उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियां हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय से ऐसे हस्त लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहां तक पिछले पांच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मंगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। जहां तक बन पड़ता है सर्व साधारण के उपकारक शब्द चुनकर और कई लिपियों का मुकाबला करके ठीक रीति से शोध कर संग्रह किये जाते हैं, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भांति बेसमझे और जांचे छाप दिये जायं। शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारण की समझ योग्य और ऐसे मनोहर और हृदय बेधक हों जिनसे आंख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

दो बरस से यह पुस्तक माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवनचरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम मात्र नहीं हैं।

अंगों का सूचीपत्र।

सूची शब्दों की।

॥ भेंट ॥

चरनदास जी की बानी उन के जीवन चरित्र के साथ आप साहिबों की भेंट करने में हम यहां कुछ और लिखने की ज़रूरत नहीं समझते सिवाय इस के कि बाबू सरजू प्रसाद मुआफ़ीदार तेरही मुआफ़ी (ज़िला बांदा) को धन्यवाद दें जिन्हों ने इस पुस्तक की तैयारी और नये ढंग की तर्तीब में पूरी तरह पर मदद दी है। जो कि उन के बुज़ुर्ग लोग चरनदास जी के ही मत के हैं इस से उन के पास बहुत पुराने शुद्ध ग्रंथ इन महात्मा का और दूसरा मसाला इन का जीवन चरित्र लिखने के लिये मौजूद था।

चरनदास जी का संक्षेप जीवन चरित्र और उन की गति की महिमा और सब संतों और साधों के मूल तत्व (उसूल) की एकता का वर्णन।

गुरु चरनदास जी का जन्म राजपूताना के मेवात देश के डेहरा नामी गांव में एक प्रसिद्ध दूसर कुल में हुआ था, जन्म का दिन भादों सुदी ३ मंगलवार सम्बत १७६० विक्रमी मुताबिक़ सन १७०३ ईसवी के था और ७९ बरस की उमर तक प्रेमाभक्ति का सदाबर्त चलाकर सम्बत १८३९ में दिल्ली में चोला छोड़ा जहां उनका स्थान अब तक बना हुआ है। यह ७९ बरस का समय बड़े तखड़ पखड़ और उखाड़ पछाड़ का था जोकि साध या संत के बिराजमान होने का एक लक्षण है। सन १७०७ अर्थात इन के प्रगट होने के चार बरस पीछे तक औरंगज़ेब दिल्ली के तख़्त पर था और इस ज़ालिम बादशाह की दारुण पीड़ा और महरट्टों के साथ घोर संग्राम का हाल इतिहास से जाना जा सकता है। उस के मरने पर बहादुरशाह का तख़्त पर बैठना और पांच बरस तक उसको सिक्खों के साथ लगातार लड़ाइयां भी प्रसिद्ध हैं। फिर सन १७१२ और १७१९ के बीच में तीन बादशाह हुए और सन १७१९ में मुग़ल ख़ानदान फिर गद्दी पर आया और मुहम्मद शाह का निपुंसक राज शुरू हुआ जो मरता जीता सन १७४८ तक सिसकता रहा। इसी बादशाहत में सन १७३८ में नादिरशाह का हमला हुआ जिसने लूट मार कर लोहू की नदी बहा दी और कितने देशों के भिखमंगा बना दिया और स्त्रियों की हुर्मत

ली। १७४८ से ५४ तक अहमदशाह का राज रहा और उसके पीछे आलमगीर सानी पांच बरस तक गद्दी पर था और सन १७५९ में शाहआलम बादशाह हुआ जो चरनदास जी के गुप्त होने के समय तक नाम मात्र को राज करता रहा। इसके ज़माने में अबदालियों की चढ़ाई और पानीपत की लड़ाई हुई। अंगरेज़ों अर्थात ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकार की दृढ़ता इसी के समय में हुई और सन १७७४ से १७८५ तक प्रतापी लाट वारन हेस्टिंगज़ हिन्दुस्तान का गवर्नर जेनरल रहा।

यह सब तवारीख़ी हाल हैं और इन के लिखने का इतना ही अभिप्राय है कि चरनदास जी के समय में हिंदुस्तानियों की पूरी गढ़त हुई और उनका बल तोड़ कर परमार्थ में लगने की थोड़ी बहुत योग्यता पैदा की गई।

चरनदास जी का घरऊ नाम रनजीतसिंह, उनके पिता का नाम मुरलीधर और माता का कुंजो था। जब यह सात बरस के थे एक दिन इन के पिता जंगल में गये (जैसा कि वह कभी २ सुमिरन ध्यान के लिये जाया करते थे) और फिर वहां से न लौटे। घर वालों ने बहुत खोज की पर सिवाय उन के कपड़ों के जो जंगल में एक जगह रक्खे मिले और कुछ पता न चला। तब चरनदासजी को उनकी मा के साथ उन के नाना जो दिल्ली में रहते थे अपने घर ले आये।

चरनदास जी को बालपन ही से परमार्थ का चाव था। लिखा है कि १९ बरस की अवस्था में इन को जंगल में जहां यह भगवंत के बिरह में व्याकुल होकर रो रहे थे शुकदेव मुनि मिले और शब्द मार्ग का उपदेश दिया। चरनदास जी बारह बरस तक दिल्ली में अभ्यास करते रहे और इस के पीछे लोगों को उपदेश देना आरंभ किया।

उनके निकट वर्ती शिष्य ५२ थे जिन को बावन गद्दियां अलग अलग आज कल वर्तमान हैं परंतु इन के गुरुमुख चेले गुसाईं युक्तानंद जी समझे जाते थे उनकी चेलियों में सहजो बाई और दया बाई की भक्ति बड़ी प्रचंड थी जो कि उनकी कोमल और अपूर्व बानी से टपकती

चरनदास जी के विषय में बहुत से करामात के कौतुक कहे जाते हैं जो उनके शिष्य रामरूप जी की बनाई हुई "गुरु भक्ति प्रकाश" नामक पोथी में लिखे हैं परंतु उन में से कोई ऐसे नहीं हैं जिन से उनकी महिमा ऐसों के चित्त में बढ़े जो साध गति की समर्थता को जानते हैं इस लिये उन को विस्तार के साथ लिखना आवश्यक नहीं तो भी नमूने की तरह दो तीन लिख दिये जाते हैं। कहा जाता है कि (१) चरनदास जी ने अपनी मा को साक्षात भगवान के दर्शन कराये। (२) नादिर शाह ने विरोध से इनको क़ैद में रक्खा जहां से वह गुप्त हो गये। फिर उसने दूसरी बार पकड़वा कर अपने सामने बेड़ी हथकड़ी और तौक़ डलवाकर कारागार में बंद करके कुंजी दरवाज़े के ताले की अपने पास रख ली, रात को चरनदास जी ने नादिर शाह के सोने के कमरे में प्रगट होकर उस के सिर पर लात मारी कि बादशाह कांपने लगा और चरनों पर गिर कर क्षमा मांगी। (३) शाह आलमगीर सानी के मरने की तिथि और घड़ी उन्होंने दो बरस पहले से बता दी थी-इत्यादि

पर ऐसी करामातें महात्मा चरनदास जी सरीखे भारी गति के पुर्ष के लिये महा तुच्छ बात है क्योंकि पूरे साध की अपने

* सहजो बाई की बानी हम छाप चुके हैं, दया बाई की आगे कभी छपैगी।

भगवंत से एकता हो जाती है अर्थात दोनों में कोई भेद नहीं रहता।

सब सच्चे साधों और संतों ने गुरू और नाम की महिमा गाई है और कहा है कि बिना इन दोनों की मुख्यता किये किसी साधन से जीव का पूरा उद्धार नहीं हो सकता। उन सब का मार्ग एक है अर्थात शब्द अभ्यास, क्योंकि "गुरू" से उन का अभिप्राय शब्द अभ्यासी और शब्द सरूपी गुरू से है चाहे वह किसी पंथ और जात में हों और 'नाम' का मतलब धुन्यात्मक नाम है जिस की धुनि आप से आप घट घट के ऊंचे देश में हो रही है। चरनदास जी पूरे साध गुरू थे जैसा कि इस पुस्तक के सारांश निरूपन अंग के शब्दों को समझ कर पढ़ने से विदित होता है। वहां कहा है कि सतगुरु वही है जो **शब्द** की चोट करता है और **नाम** वह है जो लिखने पढ़ने और बोलने में नहीं आता है अर्थात धुन्यात्मक नाम। परंतु इस भेद को उनके अनुयाइयों में से भी बिरले समझते हैं। यही हाल कबीर साहब, गुरु नानक, पलटू साहब, जगजीवन साहब, दरिया साहब और दूसरे महात्माओं के मतों का है। पर याद रखना चाहिये कि उन के चलाने वाले महापुरुष और महात्मा थे और जो एक मत के अनुयायी दूसरे मत के आदि आचार्य या उस मत की निंदा करते हैं वह अनसमझता से मानो अपने आचार्य और अपने मत की निंदा करते हैं और अपने को महा पातकी बनाते हैं।

यह सलाह उन लोगों के हित के लिये है जो साधों या संतों के पंथ में हैं निरे पंडितों और विद्वानों के लिये नहीं है जिन की आंखों पर ऊंची जाति और विद्या बुद्धि के अहंकार का परदा पड़ा हुआ है। यह बेचारे क्या करें क्योंकि सब साधों और संतों ने जाति पांति करम भरम, मूरत पूजा और शास्त्रों की

बहिरमुखी करतूत का निषेध ज़ोर देकर किया है जिससे न केवल इन के जाति अभिमान पर चोट लगती है बरन जीविका में भी खलल पड़ता है इस लिये वह विरोध के घाट पर आ बैठते हैं।

चरनदास जी ने भी और साधों संतों की तरह बाहरी कार्रवाई और अटक भटक का खंडन किया है और यद्यपि बानी में जोग बैराग ज्ञान आदिक सब साधन कहे हैं परन्तु सिद्धांत में नाम और गुरु भक्ति ही को सब से ऊंचा रक्खा है और इसका इशारा अपनी बानी के समाप्त की चौपाई में किया है

अद्भुत ग्रंथ महा सुख दाई। ताकी महिमा कही न जाई॥
ता में जोग ज्ञान बैरागा। प्रेम भक्ति जा में अनुरागा॥
निर्गुन सर्गुन सब हीं कहिया। फिर गुरु चरन कमल में रहिया॥
जो कोइ पढ़ि २ अर्थ बिचारै। आप तरै औरन को तारै॥

नीचे लिखी हुई कड़ियों में चरनदास जी ने बेद, पुरान, देवतावों की पूजा, तीरथ, बरत, करम भरम, इत्यादि की असल हैसियत दिखला कर गुरु भक्ति और नाम को दृढ़ाया है

शब्दों की कड़ियां

छर ही नाद बेद अरु पंडित छर ज्ञानी अज्ञानी। ब्रह्मा सेस महेसर छर हीं छर ही त्रिगुन माया। छर ही सहित लिये औतारा छर हूं तक जहँ माया। चरनदास सुकदेव बतावैं निःअच्छर है सब सूं न्यारा।	भेद बानी अंग का शब्द ९
सब जग पांच तत्व का उपासी। परम तत्व पाचो से आगे गुरु सुकदेव बखानैं।	भेद बानी अंग का शब्द ३
बिरंच महादेव से मीन बहुतै जहां होय परगट कभी गोत मारा। तासु में बुदबुदे अंड उपजैं मिटैं गुरु दई दृष्टि जा सूं निहारा।	भेद बानी अंग का शब्द १३

शब्दों की कड़ियां

किरिया कर्म भर्म उरझे रे ये माया के भटके । ज्ञान ध्यान दोउ पहुंचत नाहीं राम रहीमा फटके । जग कुल रीत लोक मरजादा मानत नाहीं हटके ।	अनहद शब्द की महिमा के अंग का शब्द १२
साधो घूंघट भर्म उठाय होली खेलिये । बेद पुरान लाज तजि बेरी इन में ना उरझै री ।	करम भरम के निषेध अंग का शब्द २
गुरु दूती बिन सखी पीव न देखो जाय । भवैं तुम जप तप करि देखो भावें तीरथ न्हाय । बेद पुरान सबै जो ढूंढे स्रुति इस्मृति सब धाय । आनि धर्म औ क्रिया कर्म में दीन्हो मोहि भरमाय ।	भेद बानी अंग का शब्द १

चरनदास जी की बानी

सतगुरु महिमा

गुरु महिमा

॥ दोहा ॥

गुरु समान तिहुं लोक में और न दीखै कोय ।
नाम लिये पातक नसै ध्यान किये हरि होय ॥१॥
गुरु ही के परताप सूं मिटै जगत की ब्याध ।
राग दोष दुख ना रहै उपजै प्रेम अगाध ॥२॥
गुरु के चरनन में धरो चित बुध मन हंकार ।
जब कुछ आपा ना रहै उतरै सबही भार ॥३॥
तुम दाता हम मंगता श्री सुकदेव दयाल ।
भक्ति दई ब्याधा गई मेटे जग जंजाल ॥४॥
किसू काम के थे नहीं कोई न कौड़ी देह ।
गुरु सुकदेव कृपा करी भई अमोलक देह ॥५॥
को है कोइ न जानता गिनती में नाहिं नांव ।
गुरु सुकदेब कृप करी पुजने लागे पांव ॥६॥
सीधो पलक न देखते छूते नाहीं छांहिं ।
गुरु सुकदेव कृपा करी चरनोदक ले जाहिं ॥७॥

दूसर के बालक हुते भक्ति बिना कंगाल ।
गुरु सुकदेव कृपा करी हरिधन किये निहाल॥८॥

जा धन कूं ठग न लगै धारी* सकै न लूट ।
चोर चुराय सकै नहीं गांठ गिरै नहिं छूट॥९॥

बलिहारी गुरु आपने तन मन सदके† जांव ।
जीव ब्रह्म छिन में किये। पाई भूली ठांव ॥१०॥

जब सूं गुरु किरपा करी दरसन दीन्हे मोहिं ।
रोम रोम में वै रमे चरनदास नहिं कोय ॥११॥

जाति बरन कुल मन गये गया देह अभिमान ।
अपने मुख सूं क्या कहूं जगही करै बखान ॥१२॥

॥ सतगुरु शब्द ॥

सतगुरु मेरा सूरमा करै शब्द की चोट ।
मारै गोला प्रेम का ढहै भरम का कोट ॥१३॥

मुख सेती बोलन थका सुनै थका जो कान ।
पावन सूं फिरवा थका सतगुरु मारा बान ॥१४॥

मैं मिरगा‡ गुरु पारधी§ शब्द लगायो बान ।
चरनदास घायल गिरे तन मन बीधे प्रान ॥१५॥

शब्द बान मोहिं मारिया लगी कलेजे माहिं ।
मारि हंसे सुकदेव जी बाकी छोड़ी नाहिं ॥१६॥

*धरकार की जात जो प्रायः लुटेरू होते हैं । †न्यौछावर।
‡हिरन। §शिकारी ।

सतगुरु शब्दी तेग* है लागत दो करि देहि ।
पीठ फेरि कायर भजै सूरा सनमुख लेहि ॥१७॥
सतगुरु शब्दी सेल† है सहै धमूका साध ।
कायर ऊपर जो चलै तौ जावै बरबाद ॥१८॥
सतगुरु शब्दी तीर है तन मन कीयो छेद ।
बेदरदी समझै नहीं बिरही पावै भेद ॥१९॥
सतगुरु शब्दी लागिया नावक‡ का सा तीर ।
कसकत है निकसत नहीं होत प्रेम की पीर ॥२०॥
सतगुरु शब्दी बान है अँग अँग डारे तोड़ ।
प्रेम खेत घायल गिरे टांका लगै न जोड़ ॥२१॥
सतगुरु शब्दी मारिया पूरा आया वार§ ।
प्रेमी जूझै खेत में लगा न राखा तार ॥२२॥
ऐसी मारी खैंच कर लगी वार§ गइ पार ।
जिनका आपा ना रहा भये रूप ततसार‖ ॥२३॥
सतगुरु के मारे मुए बहुरि न उपजै आय ।
चौरासी बंधन छुटैं हरिपद पहुंचै जाय ॥२४॥

॥ सतगुरु बचन ॥

सतगुरु के बचनों मुए धन्य जिन्हों के भाग ।
त्रैगुन¶ ते ऊपर गये जहां दोष नहिं राग ॥२५॥

*तलवार । †भाला । ‡गांसी । §घाव । ‖उसीकी तरह ।
¶तीन गुणों का मंडल ।

बचन लगा गुरुदेव का छुटे राज के ताज* ।
हीरा मोती नारि सुत गज घोड़ा अरु बाज†॥२६॥
बचन लगा गुरु ज्ञान का रूखे लागे भोग ।
इन्द्र कि पदवी लौ‡ उन्हैं चरनदास सब रोग॥२७॥

॥ उपदेश गुरु भक्ति का ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के आगे राखै माथा ।
कहै पाप दुख मेटो नाथा ॥
मैं आधीन तुम्हारो दासा ।
देहु आपने चरनन बासा ॥

यह तन मन लै भेंट चढ़ायो ।
अपनी इच्छा कुछ न रहायो ॥
जो चाहै सो तुमहीं करो ।
या भांडे में जो कुछ भरो ॥

रवैभ धूप छांह में डारौ ।
भावै बोरो भावै तारौ ॥
गुन पौरुष कुछ बुधि नहिं मेरी ।
सब बिधि सरन गही प्रभु तेरी ॥

*मुकुट । †कर, महसूल । ‡तक ।

मैं चकई अरु तुम कियो डोरा ।
मैं जो फिरूं सब तुम्हरे जोरा ॥
मैं अब बैठा नाव तुम्हारी ।
आसा नदी से करिये पारी ॥२८॥

॥ दोहा ॥

गुरु के आगे जाय करि ऐसे बोलै बोल ।
कछू कपट राखै नहीं अरज करै मन खोल ॥२९॥
यह आपा तुम कूं दिया जित चाहो तित राखि ।
चरनदास द्वारे परो भावै झिड़की लाखि ॥३०॥

॥ चौपाई ॥

रिद्धि सिद्धि फल कछू न चाहूं ।
जगत कामना को नाहिं लाऊं ॥
और कामना मैं नाहिं राखूं ।
रसना नाम तुम्हारो भाखूं ॥
चौरासी में बहु दुख पायो ।
ता ते सरन तिहारी आयो ॥
मुक्ति होन की मन में आवै ।
आवागवन सूं जीव डरावै ॥
प्रेम प्रीति में हिरदा भीजे ।
यही दान दाता मोहिं दीजे ॥

अपना कीजै गहिये बाहीं ।
धरिये सिर पर हाथ गुसाईं ॥
चरनदास को लेहु उबारे ।
मैं अंडा तुम सेवनहारे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

अंडा जब आगे गिरै तब गुरु लेवैं सेइ ।
करैं बराबर आपनो सिख को निस्सन्देह ॥३२॥
अपना करि सेवन करैं तीन भांति गुर देव ।
पंजा* पच्छी कुंज मन कछुवा दृष्टि जु भेव ॥३३॥
जो वै बिछुरैं घड़ी भी तौ गंदा होइ जाय ।
चरनदास यौं कहत हैं गुरुको राखि रिझाय ॥३४॥
पितु सूं माता सौगुना सुत को राखै प्यार ।
मन सेती सेवन करै तन सूं डांट अरु गार†॥३५॥
माता सूं हरि सौ गुना जिन से सौ गुरुदेव ।
प्यार करैं औगुन हरैं चरनदास सुकदेव ॥ ३६॥
कांचे भांडे‡ सूं रहै ज्यों कुम्हार को नेह ।
भीतर सूं रच्छा करै बाहर चोटै देह ॥ ३७ ॥
दृष्टि पड़े गुरुदेव की देखत करैं निहाल ।
औरै मति पलटैं तबै कागा होत मराल§ ॥३८॥

* साधारन चिड़िया अपने अंडे को पंजा रख कर सेता है, कुंज चिड़िया मन यानी ध्यान से, और कछुवा दृष्टि से ।
† गाली । ‡ बरतन । § हंस ।

दया होय गुरुदेव की भजै* मान अरु मैन† ।
भोग बासना सब छुटै पावै अति ही चैन ॥३९॥
जब सतगुरु किरपा करैं खोलि दिखावैं नैन ।
जग झूठा दीखन लगै देह परे की सैन‡ ॥४०॥

॥ अष्टपदी ॥

गुरु बिन और न जान मान मेरो कहो ।
चरनदास उपदेस बिचारत ही रहो ॥
बेद रूप गुरु होहिं कि कथा सुनावहीं ।
पंडित को धरि रूप कि अर्थ बतावहीं ॥
कल्पबृच्छ गुरुदेव मनोरथ सब सरैं ।
कामधेन गुरुदेव छुधा तृस्ना हरैं ॥
गुरु ही सेस महेस तोहि चेतन करैं ।
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु होय खाली भरैं ॥
गंगा सम गुरु होय पाप सब धोवहीं ।
सूरज सम गुरु होय तिमिर हरि§ लेवहीं ॥
गुरु ही को करि ध्यान नाम गुरु को जपो ।
आपा दीजै भेंट पुजन गुरु ही थपो ॥
समरथ श्री सुकदेव कहा महिमा करौं ।
अस्तुति कही न जाय सीस चरनन धरौं ॥ ४१ ॥

*भागै । †काम । ‡ दूर का इशारा जो भ्रम सा मालूम होता है ।
§ खींच ।

॥ महिमा गुरु सेवा ॥

॥ दोहा ॥

हरि सेवा कृत सौ बरस गुरु सेवा पल चार ।
तौ भी नहीं बराबरी बेदन कियो बिचार ॥४२॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की सेवा साधू जानै ।
गुरु सेवा कहा मूढ़ पिछानै ॥
गुरु सेवा सबहुन पर भारी ।
समझ करो सोई नर नारी ॥
गुरु सेवा सूं बिघन बिनासै ।
दुरमति भाजै पातक नासै ॥
गुरु सेवा चौरासी छूटै ।
आवागवन का डोरा टूटै ॥
गुरु सेवा सूं प्रेम प्रकासै ।
उनमत होय मिटै जग आसै ॥
गुरु सेवा परमातम दरसै ।
तिरगुन तज चौथा पद परसै ॥
श्री सुकदेव बतायो भेवा ।
चरनदास कर गुरु की सेवा ॥

जोग दान जप तीरथ नाना।
गुरु सेवा बिन निरफल जाना॥
गुरु सेवा बिन बहु पछितैहै।
फिर फिर जम के द्वारे जैहै॥
गुरु सेवा बिन कौन उतारै।
भव सागर सूं बाहर डारै॥
गुरु सेवा बिन जड़ का करिहै।
का की नाव बैठ कर तरिहै॥
गुरु सेवा बिन कछु नहिं सरिहै।
महा अंध कूपन में परिहै॥
गुरु सेवा बिन घट अंधियारा।
कैसे प्रगटै ज्ञान उजारा॥
नरक निवारन श्री सुकदेवा।
चरनदास करि तिन की सेवा॥ ४३॥

हरि से गुरु की अधिकता

॥ दोहा ॥

हरि रूठैं कुछ डर नहीं तू भी दे छुटकाय।
गुरु को राखौ सीस पर सब बिधि करैं सहाय॥ ४४॥

॥ अष्टपदी ॥

गुरु को तजि हरि सेव कभी नहिं कीजिये।
बेमुख को नहिं ठौर नरक में दीजिये॥

गुरु निंदक नहिं मुक्ति गर्भ फिरि आवई।
चौरासी लख भुक्ति महा दुख पावई॥
प्रथम करै गुरु देख परखि चरनौं पड़ै।
उनकी धारन ध्यान टेक उर में धरै॥
गुरु को रामहि जान कृस्न सम जानिये।
गुरु नरसिंह औतार जो बावन मानिये॥
गुरु को पूरन जान जो ईस्वर रूपही।
सब कुछ गुरु को जान यह बात अनूपही॥
हरि गुरु एकहि जान यह निस्चय लाइये।
दुबिधा ही को बोझ जु बेगि बगाइये॥
धर्म पिता गुरु जान जु दृढ़ता राखिये।
लाज सकुच करि कान * ढीठता नाखिये† ॥
मेरा यह उपदेस हिये में धारियो।
गुरु चरनन मन राखि सेव तन गारियो‡ ॥
जो गुरु झिड़कैं लाख तौ मुख नहिं मोड़ियो।
गुरु से नेह लगाय सबन सों तोड़ियो॥
जो सिष सांचा होय तौ आपा दीजियो।
चरनदास की सीख समझ कर लीजियो॥
मो को श्री सुकदेव यही समझाइया।
बेद पुरानन माहिं जो यों हीं गाइया॥४५॥

* शर्म। † न धारो। ‡ बहा देना।

जगतगुरु, सतगुरु और शिष्य निर्णय

॥ कनफूंका गुरु ॥

॥ दोहा ॥

कनफूंका गुरु जगत का राम मिलावन और ।
सो सतगुरु को जानिये मुक्तिदिखावनठौर ॥४६॥
गलियारे* गुरु फिरत हैं घर घर कंठी देत ।
और काज उनकूं नहीं द्रव्यक मावन हेत ॥४७॥
गुरु मिलते ऐसे कहैं कछू लाय मोहिं देहु ।
सतगुरु मिल ऐसे कहैं नाम धनी का लेहु ॥४८॥

॥ सतगुरु ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु डंका देत हैं भक्ति धनी की लेहु ।
पहिले हम कूं भेंटही सीस आपनो देहु ॥४९॥
ऐसा सतगुरु कीजिये जीवत डारै मारि ।
जन्म जन्म की बासना ताकूं देवै जारि ॥५०॥
भरम निवारन भय हरन दूर करन संदेह ।
सोता खोलै प्रेम का सोसमगुरुकरि लेहि॥५१॥
सतगुरु के लच्छन कहै ताकूं ले पहिचान ।
निरखिपरखिकरिदीजिये तनमनधनअरुप्रान॥५२॥

* गली गली ।

॥ शिष्य ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु ढूंढ़ा पाइये नहीं सुहेला* होय।
सिष भी पूरा कोइ हो सानी† माटी जोय ॥५३॥
जाति बरनकुल आस्रम मान बड़ाई खोय।
जब सतगुरु के पग लगै सांच सिष्य है सोय ॥५४॥

भक्तों की महिमा ॥

॥ दोहा ॥

भक्तों की अस्तुति किये तन मन हिया सिराय।
कलि का मैल रहै नहीं बुधि उज्जल हो जाय ॥१॥
साधन की सेवा करो चरन दास चित लाय।
जन्म मरन बंधन कटै जगतब्याधिछुटिजाय॥२॥
भक्तन की पदवी बड़ी इन्द्रहुं सूं अधिकाय।
तीन लोक के सुख तजे लान्हेव हरि अपनाय॥३॥
अनन भक्ति निहकामजो करै चरन सोइ दास।
चार मुक्ति बैकुंठ लौं सब से रहै निरास ॥४॥
प्रभु अपने मुख सूं कहेव साधू मेरी देह।
उनके चरनन की मुझे प्यारी लागै खेह‡ ॥५॥
आठ सिद्धि वे लें नहीं कनक कामिनीनाहिं।
मेरे संग लागे रहैं कभी न छोड़ैं बांहिं ॥६॥

---

*सहज † सभी हुई। ‡ख़ाक या धूल।

साध हमारी आतमा सब से प्यारे मोहिं ।
नारद निस्चै कीजिये सांच कहत हूं तोहिं ॥७॥
प्रेमी को रिनिया* रहूं यही हमारो सूल† ।
चारि मुक्ति दइ ब्याज में दै न सकूं अब मूल‡ ॥८॥
सर्बस दीन्हो भक्त को देख हमारो नेह ।
निर्गुन से सर्गुन भयो धरी पसू की देह§ ॥९॥
मेरे जन मो में रहैं मैं भक्तन के माहिं‖ ।
मेरे अरु मम संत के कुछभी अंतर नाहिं ॥१०॥
साध सोवै तहं सो रहूं भोजन संगहि जेंव¶ ।
जो बह गावै प्रेम सूं मैं हू ताली देंव ॥११॥
मम भक्ता जित जितफिरै गोहने** लागा जांव ।
जहां तहां रच्छा करौं भकतबछलमेरोनांव। १२।
भक्त हमारो पग धरै तहां धरूं मैं हाथ ।
लारे†† लागो ही फिरूं कबहु न छोड़ूं साथ ॥१३॥
मोकों बस कियो जो चहै भक्तन की करि सेव ।
उन में ह्वै कर मैं मिलूं करूं बहूत ही हेव ॥१४॥
प्रिथवी पावन‡‡ होत है सबही तीरथ आदि ।
चरनदास हरि यौं कहैं चरनधरैंजहंसाध ॥१५॥

---

*क़रज़दार । †उसूल, प्रण । ‡असल । §प्रहलाद भक्त की रक्षा को भगवान ने नरसिंह का अवतार धरा । ‖हृदय । ¶खाताहूं । **साथ । ††प्यार । ‡‡पवित्र ।

जिनकी महिमा प्रभु करैं अपने मुखसूं भाखि ।
तिन की कौन बराबरी बेद भरतुहैं साखि* ॥१६॥
जिनकी आसा करतु हैं स्वर्ग माहिँ सब देव ।
कबहूँ दरसन पाय हैं चरन कमल की सेव ॥१७॥
अपने अपने लोक में सभी करैं उत्साह ।
साधू काया छोड़कर गवन करै किसराह ॥१८॥
धन नगरी धन देस है धन पुर पट्टन† गांव ।
जहँसाधू जन उपजियो ताकीबलिबलिजायं॥१९॥
भक्त जो आवे जगत में परमारथ के हेत ।
आप तरै तारै परा‡ मंडे भजन के खेत ॥२०॥
भवसागर सूं तारिकर ले जावै बहु जीव ।
साधू केवट राम का पार मिलावै पीव। ।२१॥
साधू महिमा को कहै सोभा अधिक अपार ।
रसना दोय हजार§ से सेषहु जावैं हार ।।२२॥
तप के बरस हजार हों सत संगति घड़ि एक ।
तौभी सरवरि‖ ना करै सुकदेव कियाबिबेक॥२३॥
ऊंची पदवी साधु की महिमा कही न जाय ।
सुरनर मुनि जग भूपही देखत रहे लजाय ॥२४॥

॥ राग सारंग ॥

करौ नर हरि भक्त को संग ।
दुख बिसरै सुख होय घनेरो तन मन पलटै अंग ॥

*गवाही । †शहर । ‡सफ़ । §शेषनाग के हज़ार ज़बान हैं अगर दो हज़ार हो जायं तौ भी साधु महिमा न कर सकै । ‖बराबरी ।

हूं निःकाम मिलो संतनसूं नाम पदारथ मंग*।
जेहिपाये सब पातक नासैं उपजे ज्ञान तरंग ॥
जो वै दया करैं तेरे पर प्रेम पिलावैं भंग।
जाके अमल दरसहो हरि को नैनन आवै रंग ॥
उनके चरन सरनहीं लागो सेवा करो उमंग।
चरनदासतिनके पगपर सन आस करत हैं गंग ॥२॥

॥ विरह और प्रेम ॥

॥ चौपाई ॥

सब मत अधिकी प्रेम बतावैं।
जोग जुगत सूं बड़ा दिखावैं ॥
प्रेमहि सूं उपजै बैराग।
प्रेमहिं सूं उपजै मन त्याग ॥

प्रेम भक्ति सूं उपजै ज्ञाना।
होय चांदना मिट अज्ञाना ॥
दुरलभ प्रेम जु हाथ न आवै।
हरि किरपा कर दें तौ पावै ॥

प्रेम प्रीत के बस भगवाना।
सकल सास्तर कियो बखाना ॥

*मांगो।

भक्त हिये में प्रेम जो जागै ।
तौ हरि दरसत रहैं जो आगे ॥
सकल सिरोमनि प्रेमहिं जानो ।
चरनदास निस्चै मन आनो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम बराबर जोग ना प्रेम बराबर ज्ञान ।
प्रेम भक्ति बिन साधिबो सबही थोथा ध्यान ॥२॥
प्रेम छुटावे जक्त सूं प्रेम मिलावै राम ।
प्रेम करै गति और हीं ले पहुंचै हरि धाम ॥३॥
प्रेमो जन हरि आप हो आपा निकसै नाहिं*
गुरु सुकदेव दिखावईं समझ देखि मन माहिं ॥४॥
हिरदै माहीं प्रेम जो नैनौं झलकै आय ।
सोइ छका हरि रस पगा वा पग परसो धाय ॥५॥
गद गद बानी कंठ में आंसू टपकै नैन ।
वह तो बिरहिन राम की तलफत है दिन रैन ॥६॥
हाय हाय हरि कब मिलैं छाती फाटी जाय ।
ऐसा दिन कब होयगा दरसन करौं अघाय ॥७॥
बिन दरसन कल ना पड़ै मनुआं धरै न धीर ।
चरनदास की राम बिन कौन मिटावै पीर ॥८॥
पीव बिना तौ जीवना जग में भारी जान ।
पिया मिलैं तौ जीवना नहीं तो छूटै प्रान ॥९॥

* आपा का निशान बाक़ी नहीं रहता । † होठ ‡ सांस ।

मुख पियरो सूखे अधर* आंखें खरी उदास।
आह जो निकसै दुखभरी गहिरे लेत उसास ॥१०॥
वह बिरहिन बौरी भई जानत ना कोइ भेद।
अगिन बरै हियरा जरै भये कलेजे छेद ॥११॥
अपने बस वह ना रही फँसी बिरह के जाल।
चरनदास रोवत रहै सुमिर २ गुन ख्याल॥१२॥
वा तन को बिरहा लगो ज्यों घुन लागो दार।
दिन दिन पीरी होत है पिया न बूझै सार ॥१३॥
वे नहिं बूझैं सार ही बिरहिन कौन हवाल।
जब सुधि आवै लाल की चुभत कलेजे भाल† ॥१४॥
पीव चहै कै मत चहै वह तौ पी की दास।
पिय के रंग राती रहै जग सूं होय उदास ।१५।
पी पी करते दिन गया रैनि गई पिय ध्यान।
बिरहिन के सहजै सधै भक्ति जोग अरु ज्ञान ॥१६॥
बिरहिन एकै राम बिन और न कोई मीत।
आठ पहर साठी§ घड़ी पिया मिलन की चीत॥१७॥
जाप करै तौ पीव का ध्यान करै तौ पीव।
पिव बिरहिन का जीव है जिव बिरहिन का पीव॥१॥

॥ राग बिहागरा ॥

सुधि बुधि सब गइ खोय री मैं इस्क दिवानी।
तलफत हूं दिन रैन ज्यों मछली बिन पानी ॥

---

* होंठ। † सांस ‡ कांटा। § चौंसठ।

बिन देखे मोहिं कल न परत है देखत आंख सिरानी*।
सुधि आये हिय में दव† लागे नैनन बरखत पानी॥
जैसे चकोर रटत चंदा को जैसे पपिहा स्वांती।
ऐसे हम तलफत पिय दरसन बिरहबिथा यहिभांती॥
जब ते मीत बिछोहा हूवा तब ते कछु न सुहानी।
अंग अंग अकुलात सखी री रोम रोम मुरझानी॥
बिन मनमोहन भवन अंधेरो भरि २ आवै छाती।
चरनदास सुकदेव मिलावो नैन भये मोहिं घाती‡ ॥१९

॥ राग सोरठ ॥

हमारो नैना दरस पियासा हो।
तन गयो सूखि हाय हिये बाढ़ी जीवत हूं वहि आसा हो॥
बिछुरन थारो‖ मरन हमारो मुख में चलै न ग्रासा§ हो।
नींद न आवै रैनि बिहावै¶ तारे गिनत अकासा हो॥
भये कठोर दरस नहिं जाने तुमकूं नेक न सांसा** हो
हमरी गति दिन २ औरै ही बिरह बियोग उदासा हो॥
सुकदेव पियारे मत रहु न्यारे आनिकरो उर बासा हो।
रनजीता†† अपनो करि जानो निज करि चरनन दासा हो॥ २० ॥

---

*सीतल हुई †आग। ‡दुखदाई। §तेरा। ‖लुक़मा या कौर। ¶बीतती है। **फ़ुरसत। ††चरनदास जी का मा बाप का रक्खा हुआ नाम।

॥ राग सोरठ ॥

अंखियां गुरु दरसन की प्यासी ।
इक टक लागी पंथ निहारूं तन सूं भई उदासी ॥
रैन दिना मोहिं चैन नहीं है चिन्ता अधिक सतावै ।
तलफत रहूं कल्पना भारी निस्चल बुधि नहिं आवै ॥
तन गयो सूख हूक* अति लागी हिरदै पावक बाढ़ी ।
खिन में लेटी खिन में बैठी घर अंगना खिन ठाढ़ी ।
भीतर बाहर संग सहेली बातन ही समझावैं ।
चरनदास सुकदेव पियारे नैनन ना दरसावैं ॥२१॥

—o—

मन, इन्द्री, और पांच बिरोधियों के बिकार और उनके मोड़ने का उपदेश॥

॥ दोहा ॥

बहु बैरी घट में बसैं तू नहिं जीतत कोय ।
निस दिन घेरे ही रहैं छुटकारा नहिं होय ॥१॥
मनही खेलै खेल सब मन ही कर अभिमान ।
मन हीह जग ह्वै रहेव अब सुन मन का ज्ञान॥२॥

॥ मन ॥

बहु रूपी बहु तरंग यह बहु तरंग बहु चाव ।
बहुत भांति संसार में करि करि घने उपाव ॥३॥

*शूल का दर्द ।

आवै क्रोध तरंग जब होत जुबा* के रूप।
काम लहर कबहूं उठै ताको होत ,सरूप ॥४॥
लोभ कामना जब उठै जभी लोभ रंग होय।
मोह कल्पना के उठे मोह बरन होय सोय ॥५॥
या मन के जाने बिना होय न कबहूं साध।
जक्त बासना ना छुटै लहै न भेद अगाध ॥६॥
तैं मन कूं जाना नहीं करा न या की सार।
चौरासी छूटी नहीं उपजा बारम्बार ॥७॥
मन ने आयु गंवाइया ज्ञान बुझायो दीव।
करमलगोभरमतफिरो मिलो न अपने पीव ॥८॥
दौरि दौरि रस ओर हीं होय रहा कंगाल।
नातरु आगे भूप था ऊंचा बड़ा दयाल ॥९॥
पांचो इन्द्री स्वाद में भयो निपट आधीन।
राज बड़ाई सब नसी भयो मूढ़ मतिहीन ॥१०॥
सरकिजायबिषओरहीं बहुरि न आवै हाथ।
भजन माहिं ठहरै नहीं जो गहि राखूं नाथ† ॥११॥
मन निस्चल आवै नहीं निकसि २ भजि जाय।
चरनदास यों कहत हैं काहू की न बसाय ॥१२॥
पचि हारे ज्ञानी तपी रहे बहुत सिर मार।
मन परेत सूं डर लगै लै डूबै मंझ धार ॥१३॥

*जबान। †नकेल।

यह मन भूत समान है दौड़ैं दांत पसार ।
बांस गाड़ि उतरै चढ़ै सब बल जावै हार ॥१४॥
भजै* तौ जानिन दीजिये घेरि घेरि करि लाव ।
या मन कूं परचाय के ध्यानहिं माहिं लगाव॥१५
और कहूं बिधि दूसरी सुनियो चित्त लगाय ।
राम नाम मन सूं जपै चंचलता थकि जाय ॥१६॥
पवन रुकै जब मन थकै और दृष्टि ठहराय ।
ऐसी साधन साधिये गुरु गम भेद मिलाय ॥१७॥
इन्द्री रोके मन रुकै अरु उत्तम बिधि येहु ।
चरनदास यों कहत हैं यह साधन करि लेहु ॥१८॥
इन्द्रिन कूं मन बसि करै मन कूं बसि करै पौन ।
अनहद बसि करै बायु कूं अनहद कूं ले तौन ॥१९॥
या कूं नाम समाधि है मन ता में ठहराय ।
जन्म जन्म की बासना ता कूं दग्ध† कराय ॥२०॥
इन्द्री पलटै मन बिषै मन पलटै बुधि माहिं ।
बुधि पलटै हरि ध्यान में फेरि होय लय‡ जाहिं ।२१।
दग्ध बासना होय जब आवा गवन नसाय ।
कहैं गुरू सुकदेव जी मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥२२॥
जगत बासना के तजे माया कूं न बसाय ।
कर्म छुटै मिटै जीवता मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥२३॥

* भागै । † जलाना । ‡ तद्रूप ।

फँसे न इन्द्री स्वाद में चरन कमल में ध्यान ।
पर आसा कोइ ना रहै लगै न माया बान ॥२४॥
सब में अधिको ज्ञान है ता से ऊंचो ध्यान ।
ध्यान मिलावै पीव कूं पावै पद निरबान ॥२५॥
ध्याता* ध्येय† कैसे मिलै होय न बिच में ध्यान ।
तीनो एक हुए बिना लहै न पद निरबान ॥२६॥

चौपाई

मन कूं सतसंगति लै जावो ।
कानों हरि जस‡ कथा सुनावो ॥
भांति भांति के रँग ललचावै ।
तौ हरि के रंग क्यों न रंगावै ॥
तौ या को ज्ञानी ही कीजै ।
जक्त ओर जाने नहिं दीजै ॥
कै दीजै हरि ही कूं ध्यानू ।
राम भक्ति में या कूं सानू ॥
कै कीजै यह जोगी पूरा ।
याहि सुनावो अनहद तूरा ॥
या मन कूं कीजै बैरागी ।
या कूं कीजै सरबस त्यागी ॥

* ध्यान करने वाला । † जिसका ध्यान करता है । ‡ महिमा ।

जग रँग उतरि ब्रह्म रँग लागै।
जा ते कर्म भर्म भय भागै॥
चरनदास सुकदेव बतावैं।
मन फेरन की राह दिखावैं॥ २७॥

॥ इन्द्रियों का बर्णन ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रिन के बस मन रहै मन के बस रहै बुद्ध।
कहो ध्यान कैसे लगै ऐसा जहां बिरुद्ध॥२८॥
जित जित इन्द्री जात है तित मन कूं ले जात।
बुधि भी संगहि जात है यह निस्य करि बात॥२९॥
जित इन्द्री मन हूं गया रही कहां सूं बुद्धि।
चरनदास यौं कहत हैं करि देखो तुम सुद्धि॥३०॥
इन्द्री मन के बस करै मन करै बुधि के संग।
बुधि राखै हरि पद जहां लागै ध्यान अभंग॥३१॥
इन्द्री मन मिलि होत है बिषय बासना चाह।
उपजै जैसे काम हीं नारी मिलि अरु नाह*।३२।
इन्द्रिन सूं मन जुदा करि सुरति निरति करि सोध।
उपजै ना बिष बासना चरनदास कर बोध॥३३॥
इन्द्री रोके ते रुकैं और जतन नाहिं कोय।
मन चंचल रिझवार है रसिक सवादी होय॥३४॥

*पुरुष।

चलौ करै थिर ना रहै कोटि जतन करि राख।
यह जबहीं बस होयगा इन्द्रिनके रसनाख*॥३५॥
न्यारे न्यारे चहत हैं अपने अपने स्वाद।
इन पांचौ में प्रीत है कछू न बाद बिबाद॥३६॥
दुर्जन के फूटे बिना तेरी होय न जीत।
चरनहिदासबिचारिकरि ऐसी कहिये रीत॥३७॥
जुदी जुदी पांचौ कहूं एक एक का भेद।
जो कोइ इन कूं बस करै सबहीं छूटै खेद॥३८॥

१ आंख इन्द्री

दीपकप्रियानिहारिकरि गिरै पतंग ज्यों जाय।
कछू हाथ आवै नहीं उलटो आप जराय॥३९॥
ऐसी इन्द्री आंख की सो अपनी नहिं होय।
गुरु सुकदेव बतावई चरनदास सुन लोय॥४०॥
दरसन कीजै साध का कै गुरु का कर लोय।
जहं तहं ब्रह्महिं देखिये दुबिधादुरमतिखोय॥४१॥
बैरी मिंतर एकसा एकै रूपक रूप।
ऐसी होवै दृष्टिहीं जब समझै मन भूप॥४२॥

* छोड़दे या भुलादे।

२ कान इन्द्री

॥ दोहा ॥

मन दै सुनिये हरि कथा सुनिये हरि जस कान।
ताहि बिचार जो कीजिये होय भक्ति को ज्ञान ॥४३॥
सुनि सुनि उपजै सुबुधि हीं लागै हरि को रंग।
सुनि सुनि उपजै कुबुधि हीं खोटी उठै तरंग ॥४४॥
ऐसी इन्द्री कान की जाके जुगल सुभाव।
कथा कीरतन हीं सुनो करि करि कोटि उपाव।४५।
बचन सुनो गुरु साध के मन को लावो मोर।
बिषय बासना सूं निकसि आवै हरि की ओर॥४६॥
सरवन इन्द्री में कहे दोनो अंग दिखाय।
जिह्वा इन्द्री कहत हैं चरनदास चितलाय ॥४७॥

३ जिह्वा इन्द्री

॥ दोहा ॥

कुटिल जो इन्द्री जीभकी चाहै खट रस स्वाद।
या बस होइ औगुन करै जन्म जाय बरबाद ॥४८॥
जिह्वा के जीते बिना गये जन्म सब हार।
चरनदास यों कहत हैं भये जगत में ख्वार ४९॥
बंसी डारी ताल में मछरी लागी आय।
जिह्वा कारन जिव दियो तलफ तलफ मरि जाय।५०।

तजा न जिह्वा स्वाद कूं वा संग दीन्हे प्रान ।
जो कोइ ऐसा जगत में सो अज्ञानी जान ॥५१॥
या सूं ले हरि नाम हीं गुनाबाद हीं भाख ।
जो बोले तौ सांच हीं नाहीं मुख में राख ॥५२॥
मीठा बचन उचारिये नवता* सबसूं बोल ।
हिरदयमाहिंबिचारिकरि जबमुखबाहरखोल॥५३॥
बिना स्वाद हीं खाइये राम भजन के हेत ।
चरनदास कहैं सूरमा ऐसे जीतौ खेत ॥ ५४ ॥
जो बोलै तौ हरि कथा मौन गहै तौ ध्यान ।
चरनदास यह धारना धारै सो सज्ञान ॥५५॥

४ त्वचा इन्द्री

॥ दोहा ॥

त्वचासोइन्द्री काम की नित ही खेलै दाव ।
पसु पंछी सुर नर असुर फँसेआपकरि चाव॥५६॥
त्वचा स्वाद सब बस भये फंदे जगत के माहिं ।
जो कोई निकसो चहै सोभीनिकसैनाहिं॥५७॥
धोखे की हथनी लखी आयो गज ललचाय ।
खंदक माहीं रुकि गयो सीसधुनैपछिताय ॥५८॥
जंगल में आनंद सूं बहुतै केलि कराय ।
अब तौ द्वारे भूप के परो बंध में आय ॥५९॥

*आधीनता से ।

ऐसे ही ये नर फँदे देखि कामिनी रूप ।
जन्म गंवायो दुख भरो पड़ो अबिद्या कूप ॥६०॥
करी न हरि की भक्ति हीं गुरु सेवा तजि दीन्ह ।
सुनी न हरि की गुन कथा सतसंगति नहिं कीन्ह ॥६१॥
फिरि ऐसो कब होयगो पावै मानुष देह ।
अब तो चौरासी बिषै जाय कियो उन ग्रेह* ॥६२॥
जीतो इन्द्री त्वचा को कहियो श्री सुकदेव ।
यासे तप हीं कीजिये चरनदास सुन लेव ॥६३॥

५ नासिका इन्द्री

॥ दोहा ॥

सुगंध ओर हरखै नहीं दुरगन्धै न रिसाय ।
ऐसी जीतै नासिका मन भंवरा ठहराय ॥६४॥
समझन कूं तुक एक है भूलन कूं तुक लाख ।
गुन औगुन इन्द्री कहे सो तू मन में राख ॥६५॥
जो इन्द्रिन के बसि भयो बांधो नरकै जाय ।
चौरासी भरमत फिरै गर्भयोनि दुख पाय ॥६६॥
जो इन्द्रिन के बसि भयो पावै ना आनंद ।
बार बार जग माहिं हीं छूटै ना संबंद† ॥६७॥
भक्ति माहिं चित ना लगै सब हीं बिगड़ें काम ।
जो इन्द्रिन के बसि भयो ताको मिलै न राम ॥६८॥

* घर । † सम्बन्ध ।

चरनदास यों कहत हैं इन्द्री जीतन ठान ।
जग भूलै हरि कूं मिलै पावै पद निर्बान ॥६९॥

पांच बिरोधियों का बर्णन

॥ दोहा ॥

जोग तपस्या भक्ति नष्ट कूं गाड़न बिपांच ।
जीवत दुख दें जक्त में मुए नरक दें आंच ॥७०॥
काम क्रोध मोह लोभ ये और पांचवां गर्ब ।
राज करैं बसुधा बिषै इन बस कीन्हे सर्ब ॥७१॥

१ काम

॥ चौपाई ॥

यह काम बुरा रे भाई । सब देवै तन बौराई ॥
पंचौं में नाक कटावै । वह जूती मार दिलावे ॥
मुंह काला गधे चढ़ावै । बहु लोग तमासे आवै ॥
भिड़का ज्यों डोले कुत्ता । सब हीं के मन सूं उत्ता* ॥
कोइ नीके मुख नहिं बोलै । सरमिंदा हो जग डोलै ॥
वह जीवत नरक मंझारी । सुन चेतौ नर अरु नारी ॥
काम अंग तजि दीजै । सत संगति हीं करि लीजै ॥
अस कहैं चरन हीं दासा । हरि भक्तन में कर बासा ॥७२॥

*उतरा हुआ ।

॥ दोहा ॥

तन मन जारे काम हीं चित कर डावांडोल ।
धरम सरम सब खोय के रहै आप हिये खोल ॥७३॥
नर नारी सब चेतियो दीन्हो प्रगट दिखाय ।
पर तिरिया पर परुस हो भोग नरक को जाय ॥७४॥

॥ राग सोरठ ॥

अरे नर पर नारी मत तक रे ।
जिनजिनओर*तकोडायन की, बहुतन कूं गइ भखरे ॥
दूध आक† को पात कटैया‡, झाल अगिन की जान ।
सिंह मुछारे बिष कारे को, ऐसे ताहि पिछानो ॥
खानि नरक की अति दुखदाई, चौरासी भरमावै ।
जनम जनम कूं दाग लगावै, हरि गुरु तुरत छुटावै ॥
जग मेंफिरि फिरि महिमा खोवै, राखै तन मन मैला ।
चरनदाससुकदेव चितावैं, सुमिरो राम सुहेला ॥७५॥

॥ दोहा ॥

पर नारी कै आपनी दोनों बुरी बलाय ।
घर बाहर की आग ज्यों देवै हाथ जलाय ॥७६॥

२ क्रोध

॥ दोहा ॥

क्रोध महा चंडाल है जानत सब कोय ।
जाके अंग बरनन करूं सुनियोसुरतसमोय ॥७७॥

---

*तरफ़। † मदार। ‡ भटकटैया जो एक कांटेदार झाड़ होती है।

जेहिं घट आवै धूम सूं करै बहुत ही ख्वार।
पति खोवै बुधि कूं हनै कहा पुरुस कह नार ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

वह बुद्धि भ्रष्ट करि डारै। वह मारहिं मार पुकारै॥
वह सब तन हिंसा छावै। कहिं दया न रहने पावै॥
वह गुरु सूं बोलै बेंड़ा। साधौं सूं डोलै ऐंड़ा॥
वह हरि सूं नेह छुटावै। वह नरक माहिं लै जावै॥
वह आतम घाती जानौ। वह महा मूढ़ पहिचानौ॥
सोंटों की मार दिलावै। कबहूं कै सीस कटावै॥
वह नीच कमीना कहिये। ऐसे सूं डरता रहिये॥
वह निकट न आवन दीजै। अरु छिमा अंक* भरि लीजै॥
जब छिमा आय कियो थाना। तब सब ही क्रोध हिराना॥
कहैं गुरु सुकदेव खिलारी। सुन चरनदास उपकारी॥७९॥

३ मोह

॥ दोहा ॥

मोह बड़ा दुख रूप है ताकूं मारि निकास।
प्रीत जगत की छोड़ दे जब होवै निर्बास ॥८०॥
जग माहीं ऐसे रहो ज्यों अंबुज† सर‡ माहिं।
रहै नीर के आसरे पै जल छूवत नाहिं ॥८१॥

* गोद। † कमल। ‡ तलाब।

जग माहीं ऐसे रहो ज्योंजिह्वा मुखमाहिं।
घीव घना भच्छन करै तौभीचिकनीनाहिं।।८२।।
ऐसा हो जो साध हो लिये रहै बैराग।
चरन कमल में चित धरै जगमें रहै न पाग।।८३।।
मोह बली सब सूं अधिक महिमा कही न जाय।
जा कूं बांधो जग सबै छूटै ना बौराय।।८४।।
स्वारथ ही के सब सगे कुटुंब मित्र कुल गोत।
परमारथ समझावहीं जो दयाल गुरुहोत।।८५।।
परमारथ में दुख मिटै कलह कल्पना जाय।
स्वारथ माहीं सुख नहीं तामेंचित नलगाय।।८६।।
स्वारथ में चिन्ता घनी जो ह्वां करिहै ग्रेह।
बिना आग की चिता में जीवत जरि है देह।।८७।।
चिन्ता घट में नागिनी ताके मुख हैं दोय।
निस दिन खाये जात है जानसकतनहिंकोय।८८।
जा घट चिन्ता नागिनी तामुखजप नहिं होय।
जो टुक आवै याद भी उहींजायफिरिखोय।८९।।
चिन्ता ही सूं लगत है चरनदास उर आग।
तहां ध्यान हरि चरन कूं कैसे ही अब लाग।।९०।।
जक्त बासना के बिषै घर चिन्ताका जान।
जग की आसा छोड़िकर हरिसुमिरनहीठान।९१।

आसा नदिया में चलै सदा मनोरथ नीर।
परमारथ उपजै बहै मन नहिं पकरै धीर॥९२॥
धीर बिना नहिं ध्यान है निस्चल जप नहिं होय।
जो चाहै हरि भक्ति कूं जक्त बासना खोय॥९३॥
जब लग जग सूं प्रीति है तब लग दुक्ख अपार।
भय भारी चिन्ता घनी भवन पिछानौदार*॥९४॥
जग सूं छुटि बाहर परै उसी समय सब चैन।
उपजै आनंद परम हीं तहँ कुछ लेन न देन॥९५॥
रहै एक हरि भक्ति हीं बाधा सब छुटि जाहिं।
जबै राम अपनो करैं बेगहिं पकरैं बांहिं॥९६॥

४ लोभ

लोभ नीच बर्नन करूं महा पाप की खानि।
मंत्री जा का झूंठ है बहुत अधर्मी जानि॥९७॥
तृस्ना जाकी जोय† है सो अंधा करि देय।
घटी बढ़ी सूझै नहीं नहीं काल का भेय॥९८॥
दम्भ मकर छल भगल जो रहत लोभ के संग।
मुए नरक ले जायंगे जीवत करैं अतंग‡॥९९॥
देहैं धर्म छोड़ाय हो आन धर्म ले जाय।
हरि गुरु ते बेमुख करैं लालच लोभ लगाय॥१००॥

* सूली। †स्त्री। ‡ दुखी, हैरान।

चहूं देस भरमत फिरैं कलह* कल्पना साथ ।
लोभ खंभ उठि उठि लगैं दोऊ पसारे हाथ १०१ ॥
चींटी बांदर खगन† कूं लोभ बहुत दुख दीन ।
या कूं तजि हरि कूं भजै चरनदासपरबीन ॥१०२॥
लोभ घटावै मान कूं करै जगत आधीन ।
धर्म घटा भिषूल‡ करै करै बुद्धि को हीन ॥१०३॥
लोभ गये ते आवई महा बली संतोष ।
त्याग सत्य कूं संग ले कलह निवारन सोक १०४॥
घट आवै संतोष ही काह चहै जग भोग ।
स्वर्गआदि लौं सुख जिते सब कूं जानै रोग ॥१०५॥
संतोषी निर्मल दसा रहै राम लौ लाय ।
आसन ऊपर दृढ़ रहै इत उत कूं नाहिं जाय १०६॥
काहू से नाहिं राखिये काहू बिधि की चाह ।
परम संतोषी हूजिये रहिये बेपरवाह ॥१०७॥
चाह जगत की दास है हरि अपना न करै ।
चरनदास यों कहत हैं ब्याधा नाहिं टरै ॥१०८॥

५ अहंकार ।

॥ दोहा ॥

अभिमानी चढ़िकरगिरे गये बासना माहिं ।
चौरासी भरमत भये अबहीं निकसैं नाहिं ॥१०९॥

---

* लड़ाई । †पक्षी । ‡गंदा ।

अभिमानी मींजे गये लूट लिये धन बाम*।
निरअभिमानी हो चले पहुंचे हरि के धाम॥११०॥
चरनदास यों कहत हैं सुनियो संत सुजान।
मुक्ति मूल आधीनता नरक मूल अभिमान॥१११॥
मन में लाय बिचार कूं दीजै गर्ब निकार।
नान्हापन तब आय हैं छूटै सकल बिकार॥११२॥

॥ चौपाई ॥

रूपवंत गरबावै।
कोइ मो सम† दृष्टि न आवै॥
तरुनापा गर्बाना।
वह अंधरा होवै राना॥
कहै धन मद में परबीना।
सब मेरे ही आधीना॥
कहै कुल अभिमानी सूचा।
मैं सब जातिन में ऊंचा॥
वह बिद्या गर्ब जो भारी।
करै बाद बिबाद अनारी॥
अरु भूप करै अभिमाना।
उन आपै हों कूं जाना॥

*स्त्री, माया। † मुझ सा।

उन काल नहीं पहिचाना ।
सो मार करै घमसाना ॥
गुरु सुकदेव चितावैं ।
तोहि परगट नैन दिखावैं ॥
जम बांधि पकरि ले जावैं ।
वै बहुतै त्रास दिखावैं ॥
जब कहां जाय अभिमाना ।
मोर नीका सुन यह ताना ॥
फिर डारै नरक मंझारी ।
सुन चेतौ नर अरु नारी ॥
तौ मद मत्सर* तजि दीजे ।
साधौं के चरन गहीजै ॥
हरि भक्ति करौ चित लाई ।
जब सकल ब्याधि छुटि जाई ॥
करि जात बरन कुल दूरा ।
हो सतसंगति में पूरा ॥
जब मुक्ति धाम कूं पावै ।
फिर गर्भ जोनि नहिं आवै ॥
कहैं गुरु सुकदेव बखानो ।
यह चरनदास मति आनो ॥ ११३ ॥

---

* बिरोध ।

॥ दोहा ॥

पांचो उतरैं भूत जब हूं हो ब्रह्म अरूप।
आनंद पद को पाइ हो जित है मुक्ति सरूप॥११४॥

॥ चौपाई ॥

पांचो चोर महा दुख दाई।
सो या जग में देहिं फंसाई॥
तन मन कूं बहु ब्याधि लगावैं।
कायक बाचक पाप चढ़ावैं॥
फिर चौरासी माहिं फिरावैं।
जठर* अगिन में ताहि तपावैं॥
जन्म मरन भारी दुख पावै।
मनुष देहि का सर्बस जावै॥
तीन लोक में डोलै हाला।
सुर पुर मृत्यु और पाताला॥
कैसे मुक्ति धाम कूं पावै।
जो इन्द्रिन के बस होजावै॥
छूटै जब गुरु किरपा करैं।
चरनदास के सिर कर धरैं॥११५॥

* पेट अथवा गर्भ की आग।

॥ नवधाभक्ति* ॥

॥ अष्टपदी ॥

नवधा भक्ति संभारि अंग नौ जानि ले ।
सर्वन चितवन और कीर्तन मानि ले ॥
सुमिरन बंदन ध्यान और पूजा करो ।
प्रभु सूं प्रीति लगाय सुरति चरनन धरो ॥
होकरि दासहिं भाव साध संगति रलो ।
भक्तन की करि सेव यही मति है भलो ॥
आपा अर्पन देइ धीर्ज दृढ़ता गहो ।
छिमा सील संतोष दया धारे रहो ॥
यह जो मैंने कहा बेद का मूल है ।
जोग ज्ञान बैराग सबन का फूल है ॥
प्रेमी भक्त के ताप† पात‡ तीनौं नसैं ।
अर्थ धर्म काम मोछ सकल ता में बसैं ॥
जो राखै मन माहिं बिबेक बिचार कूं ।
पावै पद निर्बान बचै जग भार सूं ॥
कहैं गुरू सुकदेव मया के भाव सूं ।
चरनहि दासा होय सुनो बहु चाव सूं ॥ १ ॥

---

* नौ प्रकार की भक्ति । † त्रैताप यानी मन का दुख, देह का दुखं, और बाहर का दुख लड़ाई झगड़ा वग़ैरह ‡ त्रैपातक यानी संचित, प्रारब्ध, और क्रियमाण कर्म ।

राग सोरठ व गौरी व आसावरी

साधो नवधा भक्ति करौ रे ।
कलजुग में यह बड़ो पदारथ गहि गहि ताहि तरौ रे ॥
जे जे या सूं भये सिरोमन तिन के नाम सुनाऊं।
बढ़ै कथा बिस्तार कहूं तो याते सूच्छम गाऊं ॥
जन प्रहलाद तरो सुमिरन ते बन्दन सूं अक्रूर।
चरन कमल की सेवा सेती लछमी रहत हजूर ॥
चन्दन चर्चत हूं प्रथु राजा उतरो भौजल पार।
बलि राजा तन अर्पन कीन्हो सदा रहै हरि द्वार ॥
परम दास हनुमंत हुं उबरो उत्तम पदवी पाई।
सखा सुभाव तरौ है अर्जुन ताकी महिमा गाई ॥
मुक्त भयो है परीछित राजा सुन भागवत पुराना।
श्री सुकदेव मुनी से बक्ता हुए रूप भगवाना ॥
जोग ज्ञान बैराग सबन सूं प्रेम प्रीति है न्यारी।
चरनदास ने गुरु किरपा सूं सांची बात बिचारी ।२।

॥ दोहा ॥

नवो अंग के साध ते उपजै प्रेम अनूप।
रनजीता यौं जानिये सब धर्मन का भूप ॥३॥

अष्टपदी

वह करै काग सूं हंसा । इक रहै पिया का संसा ॥
वह जात बरनकुलखोवै । अरु बीज बिरहकाबोवै ॥
जोप्रेमतनिकाँचितआवै । वह औगुन सबै नसावै ॥
प्रेम लता जब लहरै । मन बिना जोगही ठहरै ॥
कोइ चतुर खिलारीखेलै । वह प्रेम पियाला झेलै* ॥
जो धड़ पै सीस न राखै । सोइ प्रेम पियाला चाखै ॥
तन मन सूं जो बौराई । वह रहै ध्यान लौ लाई ॥
वह पहुंचै हरि के पासा । योंकहैं चरन ही दासा॥४॥

ज्ञान मति बर्णन

प्रथम ज्ञान मार्ग के उपदेशी का निरूपन

गुप्त महा यह भेद हिये में राखिये ।
जो जड़ मूरख होय तासु नांहिं भाखिये ॥ १ ॥
हरि भक्ता अरु गुरुमुखी तप करने की आस ।
सतसंगी सांचा यती ताहि देहु पद दास ॥ २ ॥

॥ ब्रह्मज्ञान प्राप्ति का उपाय ॥

अष्टपदी

परबल इन्द्री जान सबन कूं बसि करै ।
सीत उस्न दुख सुख अस्तुति निन्दा हरै ॥
छोड़े ही हंकार बासना आस ही ।
अपने कारन बस्तु रखै नांहिं पास ही ॥

---

* उसके नशे को बरदाश्त कर सके ।

पूरी राखै पैज* धारना धारि के ।
गुरु आज्ञा गुरु सेव करै जु बिचारि के ॥
सकल मनोरथ कामना करै छीन ही ।
ऐसे जिज्ञासू कूं द्वारे तीन ही ॥
एक जो द्वारा त्याग दुजा जो उपाव ही ।
तीजा गुरु की निस्चय ऐसा सुभाव ही ॥
इन द्वारों में राह जो आगे की खुलै ।
लुटै थकै वह नाहिं सुखाला ही चलै ॥
जीवातम जो हंस कहावत है यही ।
याके हैं अस्थान जो तीनों ही सही ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपति परगट जानिये ।
तुरिया निज अस्थान गुप्त पहिचानिये ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

दूध मध्य ज्यों घीव है मेहंदी माहीं रंग ।
जतन बिना निकसै नहीं चरनदास सो ढंग ॥४॥
जो जानै या भेद कूं और करै परबेस ।
सो अबिनासी होत है छूटै सकल कलेस ॥५॥

॥ अष्टपदी

तन मथने को जतन कहूं अब जानिये ।
ज्यों निकसै तत सार बिलोवन ठानिये ॥
पहिले चक्कर जानि मूल† द्वारे बिषै ।
जित ही पावँ की एड़ी सूं बंध दे रेखै ॥

* टेक । † गुदा ॥

मूल* चक्र सों खींचि अपान चलाइये।
दूजे चक्कर पास जु आन फिराइये॥
दहिनी ओर सों तीन लपेटे दीजिये।
तीजे चक्कर माहिं गमन फिर कीजिये॥
चौथे चक्कर माहिं पवन जो लाइये।
बहुरी पंचवें चक्र में जिव पहुंचाइये॥
षष्टम चक्कर माहिं जु ताहि चढ़ाइये।
सो त्रिकुटी के मध्य तहां ठहराइये॥
रोके त्रिकुटी माहिं आनि कै बायु कूं।
षट चक्कर कूं छेदि चढ़ै जब धाय कूं॥
अपान बायु चढ़ि जाय वही अस्थान है।
प्रान बायु ह्वै जाय साधु कोइ जान है॥
रोकै प्रानहिं बायु तिरकुटी मध्यहीं।
करै ओं का ध्यान सीस में गह्व† हीं॥
यह तो ऊंचा ध्यान जु अधिक अनूपहीं॥
चरनहिं दासा होय जु ब्रह्म सरूपही।

॥ दोहा ॥

नाम ब्रह्म का है नहीं है तो वह ओंकार।
जानै आपन को वहीं मैं हीं तत्व अपार ॥७॥

*गुदा। †अंतरंग।

जीव ब्रह्म यों होत है रहै न कछू लगाव ।
चरनदास यों कहत हैं ऐसा किये उपाव ॥८॥
जो जीवातम सो भया परमातम अरु ब्रह्म ।
वा की सरवरि* को करै पाई परै न गम्म ॥९॥

॥ चौपाई ॥

जब हो एक दूसरा नासै ।
बंध मुक्ति की रहै न सांसै ॥
मृतक अवस्था जीवत आवै ।
करम रहित अस्थिर गति पावै ॥
जब कोइ मिंतर बैरी नाहीं ।
पाप पुन्य की परै न छाहीं ॥
हरि बिन और पिछान न कोई ।
तिन के इच्छा रही न दोई ॥
ज्ञान दसा ऐसे करि गाई ।
चरनदास सुकदेव बताई ॥१०॥

बाचक ज्ञानी

॥ चौपाई ॥

बाचक ज्ञानी बहुतक देखे ।
लच्छ ज्ञानी कोइ लेखे लेखे ॥
ज्ञानी बिगड़े बिषई होई ।
कथै एक अरु चाले दोई ॥

*बराबरी ।

बुरे करम औगुन चित लावै ।
भले करम गुन सब बिसरावै ॥
बिषय बासना के रंग राता ।
झूठ कपट छल बल मद माता ॥
इन्द्री बस मन हाथ न आवै ।
पाप करन सूं नाहिं डरावै ॥
ज्ञान कथै अरु बाद बढ़ावै ।
रहनि गहनि का भेद न पावै ॥
ब्रह्म बृत्ति का आवन भारी ।
चरनदास सुकदेव बिचारी ॥११॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान दसा आवन कठिन बिरला जानै कोय ॥
ज्ञान दसा जब जानिये जीवत मिर्त्तक होय ।१२।

सुमिरन का अंग

॥ दोहा ॥

प्रनऊं श्री सुकदेव कूं बानी कहूं अगाध ।
महिमा गाऊं नाम की सबमिलिसुनियोसाध।१।
ज्यों की त्योंही कहत हूं कछू न राखूं भेद ।
निश्चै आवै नाम की छूटैं सब ही खेद ॥२॥

कई बार जो जग करै जोग करै चित लाय।
चरनदास कहैं नाम बिन सभी अफल हो जाय ॥३॥
आठ धात में गुन नहीं जो पारस के माहिं।
तप तीरथ ब्रत साधना राम नाम सम नाहिं ॥४॥
ज्यों सेमर का सेवना ज्यों लोभी का धर्म।
अन्न बिना भुस कूटना नाम बिना यों कर्म ॥५॥
छोड़ै सब ही बासना हो बैठै निष्काम।
चरन कमल में चित धरै सुमिरै रामहिं राम ॥६॥
ऐसा हो जब साध हो तब रीझै करतार।
दरसन दे अपना करै कभी न छोड़ै लार ॥७॥
चार बेद किये व्यास ने अर्थ बिचार बिचार।
तामें निकसी भक्तिही राम नाम तत सार ॥८॥
जिन कहिया सुकदेव कूं सुनिया प्रेम प्रतीत।
तिन जग में परगट कियो जैसी चहिये रीत ॥९॥
ब्रह्म हत्या अरु नारि की बालक हत्या होय।
राम नाम जो मन बसै सब कूं डारै खोय ॥१०॥
ऐसा ही हरि नाम हीं मोहिं राम की सौंहि।
जाको होवै परख हीं सो समझै ह्यांलौंहिं। ११॥
नामहिं ले जल पीजिये नामहिं लेकर खाह।
नामहिं लेकर बैठिये नामहिं ले चल राह ॥१२॥

जब लग जागे राम कहु तन मन सूं यहि चीत।
चरनदास यों कहत हैं हरिबिनऔरनमीत ॥१३॥
तेरा तौ कोइ है नहीं मात पिता सुत नार।
ताते सुमिरौ राम कूं हे मन बारम्बार ॥१४॥
जेहि कारन भटकत फिरै घर २ करत सलाम।
तेरे तौ वे हैं नहीं हे मन सुमिरौ राम ॥१५॥
जीवत ही स्वारथ लगे मूए देह जराय।
हे मन सुमिरौ राम कूं धोखे काहि पराय* ॥१६॥
हाथी घोड़े धन घना चंद्र मुखी बहु नारि।
नाम बिना जम लोक में पावै दुक्ख अपार ॥१७॥
जब लग जीवै राम कहु रामहि सेती नेह।
जीव मिलैगो राम में पड़ो रहैगो देह ॥१८॥
अचरज साधन नाम का भक्ति जोग का जीव।
जैसे दूध जमाय कै मथिकरिकाढ़ाघीव ॥१९॥

सुमिरन विधि

॥ दोहा ॥

पांच बरस जप नाभि सूं रग रग बोलै राम।
देह जीव निज भक्त हो पहुंचै हरि के धाम ॥२०॥
त्रिकुटी में जप राम कूं जहां उजाला होय।
स्वांसा माहीं जपे ते दुबिधा रहै न कोय ॥२१॥

* पड़ा है।

गगन मंडल में जाप करि जित है दसवां द्वार ।
चरनदास यों कहत हैं सो पहुंचै हरिद्वार ॥२२॥

नाम उठाकर नाभि सूं गगन माहिं ले जाय ।
जहां होय परकास हीं सुकदेव दिया बताय ॥२३॥

मन हीं मन में जाप करि दरपन उज्जल होय ।
दरसन होवै राम का तिमिरजायंसबखोय।२४।

सुरत माहिं जो जप करै तन सूं न्यारा जौन ।
मिलै सच्चिदानंद में गहे रहै जो मौन ॥२५॥

सकल सिरोमनि नाम है सब धरमन के माहिं ।
अनन्य भक्त वह जानिये सुमिरन भूलै नाहिं ॥२६॥

आनि धरम मानै नहीं आनि देव नहिं ध्यान ।
ऐसे भक्त अनन्य को कोई पावै जान ॥ २७ ॥

राम नाम मुख सूं कहो राम नाम सुनि कान ।
रोम रोम हरि को रटो ऐसी गहिये बान* ॥२८॥

बिद्या माहीं बाद है तप के माहीं ऋद्धि ।
राम नाम में मुक्ति है जोग माहिं यों सिद्धि ।२९।

राम नाम में ये सबै रिद्धि सिद्धि औ मोछ ।
ऐसा इष्ट संभारिये चरनदासकहिसोछ† ।३०।

जाका कीया सब बना सात दीप नौ खंड ।
चरनदास यों कहत हैं तीन लोक ब्रह्मंड ॥३१॥

*आदत । † बिचार के ।

तो* कारन सब कुछ किया नाना बिधि सुख दीन्ह ।
तैं वाकूं जाना नहीं नाम न कबहूं लीन्ह ॥२॥
अबके औसर फिर बन्यो पाई मानुख देंहि ।
चरनदास यों कहत हैं राम नाम ही लेहि ॥३॥

पतिब्रता का अंग

॥ दोहा ॥

पतिब्रता वहि जानिये आज्ञा करै न भंग ।
पिय अपने के रंग रतै और न सोहै† ढंग॥१॥
अपने पिय कूं सेइये आन‡ पुरुस तजि देह ।
पर घर नेह निवारिये रहिये अपने गेह ॥२॥
अज्ञाकारी पीव की रहै पिया के संग ।
तन मन सूं सेवा करै और न दूजो रंग ॥३॥
रंग होय तौ पीव को आन पुरुष बिषरूप ।
छांह बुरी पर घरन की अपनी भली जु धूप ॥४॥
अपने घर का दुख भला पर घर का सुख छार§ ।
ऐसे जानै कुल बधू सो सतवंती‖ नार ॥५॥
पति की ओर निहारिये औरन सूं क्या काम ।
सबै देवता छोड़ि कै जपिये हरि का नाम ॥६॥
खसम तुम्हारो राम है इत उत रुख मत मारि ।
चरनदास यों कहत हैं यही धारना धारि ॥७॥

---

*तेरे । †नहीं अच्छा लगता । ‡दूसरा । §धूल, राख । ‖पतिब्रता ।

यह सिर नवै तो राम कूं नाहीं गिरियो टूट ।
आन देव नहिं परसिये यह तन जावो छूट ॥८॥
पतिब्रता कूं ब्रत गहो बिभिचारिन अंग टार ।
पति पावै सब दुख नसैं पावै सुक्ख अपार ॥९॥
जब तू जानै पीव हीं वह अपनो करि लेहि ।
परम धाम में राखि कर बांहपकरि सुख देहि ॥१०॥
यही सिखापन देत हूं धारो हिरदय माहिं ।
ऐसा पौधा बोइयो ताकी बैठै छाहिं ॥११॥
सतबादी सत सूं रहो सत हीं मुख सूं बोल ।
एक ओर हरि नाम रख एक ओर जग तोल ॥१२॥

॥ राग मंगल ॥

सोई सोहागिल नारि पिया मन भावई ।
अपने घर को छोड़ि न पर घर जावई ॥
अपने पिय का भेद न काहू दीजिये ।
तन मन सुरति लगाय के सेवा कीजिये ।
पति की अज्ञा चाल पाल पिय को कहो ।
लाज लिये कुलवंत जतन हीं सूं रहो ।
धनि २ है जग माहिं पुरुष बहु हित धरै ॥
सब सूं नायक* होय जो सिर बर† को करै ।

* बड़ा । † पति ।

पिय कूं चाहो रूप सिंगार बनाइये ।
पतिव्रता कुल दोय में सोभा पाइये ॥
नौधा बस्तर पहिरि दया रंग लाल है ।
भूखन बस्तर धारि विचित्तर बाल है ॥
रंग महल निर्दोष जहाँ झिलमिल नूर है ।
निरगुन सेज बिछाय सभी करि दूर भय ॥
मंदिर दीपक बाल बिन बाती घीव की ।
सुघर चतुर गुन रासि लाडिली पीव की ॥
कहैं गुरु सुकदेव यों बालम मोहिये ।
चरनदास ले सीख जो प्रेम समोइये ॥३॥

॥ राग सोरठ ॥

तू सदा सोहागिन नारी है ।
पिय के संग मिली मद पावै ताते लागत प्यारी है ॥
भंवर गुफा में मंवर बनायो बिन घृत जोती जारी है ।
सुखमन सेज महा सुखदाई भोगत भोग दुलारी है ॥
बस कियो कंता चलै न पंथा टोना डारो भारी है ।
आठ पहर तुम्हरे रंग राचो हम को मिलै न बारी है ॥
पति मन मानी सो पटरानी सोई रूप उजारी है ।
हम चारी जो सौति तुम्हारी तुम गुन आगे हारी है ॥
चरनहिं दास भई तोहिं सेवै लगी रहै नित लारी है ।
सुकदेवा सिर छत्र हमारो सो बस भयो तम्हारो है ॥

अनहद शब्द की महिमा और उसकी प्राप्ती का बिलास।

शब्द १

॥ अष्टपदी ॥

अनहद शब्द अपार दूर सूं दूर है।
चेतन निर्मल शुद्ध देह भरपूर है ॥ १ ॥
निःअच्छर है ताहि और निःकर्म है।
परमातम तेहि मानि वही परब्रह्म है ॥ २ ॥
याके कीने ध्यान होत है ब्रह्म हीं।
धारै तेज अपार जाहि सब भर्म हीं ॥ ३ ॥
वा पटतर* कोइ नाहिं जो यों हीं जानिये।
चांद सूर्य्य अरु सृष्टि के माहिं पिछानिये ॥ ४ ॥
याको छोड़ै नाहिं सदा रहै लीन हीं।
यही जो अनहद सार जानि परबीन हीं ॥ ५ ॥
यों जिव आतम जान जो अनहद लीन हो।
सो परमातम होय जीवता जाय खो ॥ ६ ॥
ध्यानी को मन लीन होय अनहद सुनै।
आप अनाहद होय बासना सब भुनै ॥ ७ ॥
पाप पुन्य छुटि जायं दोऊ फल ना रहैं।
होय परम कल्यान जो तिरगुन† ना गहैं ॥ ८ ॥

* बराबर। † सत रज तम अर्थात ब्रह्मा बिष्णु महेश।

शब्द २

॥ दोहा ॥

करते अनहद ध्यान के ब्रह्म रूप हो जाय।
चरनदास यों कहत हैं बाधासबमिटिजाय॥१॥
गगन मध्य जो कंवल है बाजत अनहद तूर।
दल हजार को कमल है पहुंचै गुरु मत सूर॥२॥
गगन मंडल के कमल में सतगुरु ध्यान निहार।
चरनदास सुकदेव परस के मेटै सकल बिकार॥३॥

शब्द ३

॥ छप्पै ॥

नौ नाड़ी को खैंचि पवन लै उर में दीजै।
बज्जर ताला लाय द्वार नौ बंद करीजै॥ १ ॥
तीनौं बंद लगाय अस्थिर अनहद आराधै।
सुरति निरति का काम राह चल गगन अगाधै॥२॥
सुन्न सिखर चढ़ि रहै दृढ़ जहां आसन करै।
भन चरनदास ताड़ी लगै सो राम दरस कलि-
मल हरै॥ ३ ॥

शब्द ४

॥ छप्पै ॥

मूल कमल में खेलि पिया को देखन चलिये।
उलटि बेधि खट चक्र जाइ सतवें से मिलिये॥१॥

प्रान अपान मिलाइ राह पच्छिम की लीजै।
बंक नाल कूं सोध प्रान लै ता में दीजै ॥ २ ॥
मेरु दंड चढ़ि जाय जब लोक लोक की गम परै।
भन चरनदास ब्रह्मंड में ब्रह्मदरसी दरसन करै ॥३॥

शब्द ५

॥ छप्पै ॥

दल असंख को कमल रूप जहं सत्त बिराजै।
अनंत भानु परकास जहां अनहद धुनि गाजै ॥१॥
सुन्दर छबि अति हंस संत जन आगे ठाढ़े।
जहं पहुंचै कोइ सूर बीर नीसान जो गाड़े ॥२॥
कमल मध्य जो तख्त है सोभा अपार बरनं कहा।
कहैं चरनदास उस तख्त पर आदि पुरुस अद्भुत महा ॥३॥

शब्द ६

॥ छप्पै ॥

छत्र फिरत नित रहत चंवर ढोरत जहं हंसा।
जहं दरसन करै सिष्य मिटै जुग जुग का संसा ॥१॥
आवा गमन ह्वै रहित मरन जीवन नहिं होई।
आनि मिलै जब चारि मुक्त कहियत है सोई ॥२॥
जहं अमर लोक लीला अमर फल अनेक तहं पावई।
भन चरन दास सुकदेव बल चौथा पद इमि गावई ॥३॥

भन = कहै।

शब्द ७

॥ छप्पै ॥

जहां चंद नहिं सूर जहां नहिं जगमग तारे।
जहां नहीं त्रैदेव त्रिगुन माया नहिं लारे ॥१॥
जहां वेद नहिं भेद जहां नहिं जोग जज्ञ तप।
जहांपवननहिंधरनि अगिन नहिं जहां गगन अप ॥२॥
जहां रात नहिं दिवस है पाप पुन्य नहिं व्यापई।
आदि अंत अरु मध्य है कहूं चरनदास ब्रह्म आप ही।३।

शब्द ८

॥ छप्पै॥

जहां काच नहिं ज्वाल भर्म नहिं तिमिर उजारा।
जहां राग नहिं द्वेस जहां नहिं कर्म अचारा ॥१॥
जहां काम नहिं क्रोध लोभ नहिं मोह नरेसा।
जहां मित्र नहिं सत्रु जहां नहिं देस बिदेसा ॥२॥
चरन दास इक ब्रह्म है और न दूजो कोइ तहां।
भया जीव सूं ब्रह्म जब जोग जुक्ति पहुंचै जहां ॥३॥

शब्द ९

॥ छप्पै ॥

जहां आतम देव अभेव सेव कबहू न करावै।
इच्छा दुई न द्रोह कर्म नहिं भर्म सतावै ॥

पानी।

जहं जाप ताप नहिं आप तहां नहिं रूप न रेखा।
जासु जाति नहिं पांति नारि नहिं पुरुस बिसेखा ॥२॥
पार ब्रह्म पूरन सदा है अखंड नहिं खंडिता।
भन चरनदास ताड़ी लगी सो सुन्न सिखर में मंडिता ३।

शब्द १०

॥ दोहा ॥

मन पवना बस कीजये ज्ञान जुक्ति सूं रोक।
सुरति बांधि भीतर धसै सूझै काया लोक ॥१॥
चरनदास यहि बिधि कही चढ़िवे कूं आकास।
सोध साधि साधन अगम पूरन ब्रह्म बिलास ॥२॥

शब्द ११

॥ राग सोरठ व आसावरी ॥

सतगुरु निज पुर धाम बसाये।
जित के गये अमर ह्वै बैठे भवजल बहुरि न आये ॥१॥
जोगी जोग जुक्ति करि हारे ध्यानी ध्यान लगावे।
हरि जन गुरु की दया बिना यों दृष्टि नहीं दरसावे ॥२॥
पंडित मुंडित चुंडित ढूंढ़ैं पढ़ि सुनि बेद पुरानै।
जा सूं वै सब पायो चाहैं सो तौ नेति बखानै ॥३॥
जंगम जती तपा सन्यासी सब हीं वा दिसि धावैं।
सुरति निरति की गम जहं नाहीं वै कहो कैसे पावैं॥४॥
देस अटपटा बेगम* नगरी निगुरे राह न पाया।
चरनदास शुकदेव गुरू ने किरपा करि पहुंचाया ॥५॥

* अगम।

शब्द १२

॥ राग सोरठ व नट व बिलावल ॥

सो नैना मेरे तुरिया तत पद अटके ।
सुरतिनिरतिकीगमनांहिंसजनीजहांमिलनकोलटके॥१॥
भूलो जगत बकत कछु औरै बेद पुरानन ठठके।
प्रीत रीति की सार न जानै डोलत भटके भटके ॥२॥
किरिया कर्म भर्म उरझे रे ये माया के झटके ।
ज्ञान ध्यान दोउ पहुंचत नाहीं राम रहीमा फटके ॥३॥
जग कुल रीति लोक मर्यादा मानत नाहीं हटके ।
चरनदास सुकदेव दया सूं त्रैगुन तजि के सटके ॥४॥

शब्द १३

॥ राग करखा ॥

पिंड ब्रह्मंड की सैल गुरु गम करी ।
परसिया जुक्ति सूं अलख राई ।
सहज ही सहज पग धरा जब अगम को ।
दसौ परकार झागड़* बजाई ॥ १ ॥
खोलि कपाट अरु बज्र द्वारे चढ़ो ।
कला के भेद कुंजी लगाई ।
पहिले महल पर जाय आसन किया ।
दूसरे महल की खबर पाई ॥ २ ॥

---

*बाजा ।

तीसरे महल पर सुरति जा बस रही ।
महल चौथे दुहा अर्मा गाई ॥
पांचवें महल को साध कोइ पाइ है ।
महल छटवां दिया गुरु बताई ॥ ३ ॥
सातवें महल पर कोटि सूरज दिपैं ।
आठवें महल अवगति गोसाईं ॥
रूप अद्भुत तहां देखि अचरज जहां ।
देखिया दरस तब बिपति जाई ॥ ४ ॥
सुकदेव की सहा सों धारना गहा सो ।
आपने पीव के भवन आई ॥
चरनदास आपा दिया प्रेम प्याला पिया ।
सीस सदके किया पूजि पाईं ॥ ५ ॥

शब्द १४

॥ राग जैजैवन्ती ॥

ऐसी जो जुगत जानै सोई जोगी न्यारा ॥ टेक ॥
आसन जो सिद्ध करै त्रिकुटी में ध्यान धरै ।
बिना तेल दिया बरै जोति हूं उजारा ॥१॥
संजम संभाल साधै मूल द्वार बंद बांधै ।
संखिनी उलटि साधै कामदेव जारा ॥ २ ॥
प्रान बायु हिये माहीं खैंचि कै अपान लाहीं ।
दोऊ नाके मिलि जाहीं ऐसा खेल धारा॥३॥

गाय ।

कुम्भक अथक राखै अनहद की ओर ताकै ।
सुखमन पैठि नाकै आगे जो बिचारा ॥ ४ ॥
खोलि कै कपाट सिरा कोऊ चढ़ै सूर बीरा ।
काम धेनु जावै तीरा अमी को उतारा ॥ ५ ॥
उन्मुनी जाय लागै निज ग्रह माहिं जागै ।
जनम मरन भागै छूटै जम भारा ॥ ६ ॥
गुरु सुकदेव कहैं करनी यहि बिधि लहै ।
चरनदास होय रहै आप को संभारा ॥ ७ ॥

बिनती और प्रार्थना

शब्द १

॥ राग मलार ॥

सतगुरु भौसागर डर भारी ।
काम क्रोध मद लोभ भंवर जित लरजत नाव हमारी ॥१॥
त्रिस्ना लहर उठत दिन राती लागत अति झकझोरा ।
ममता पवन अधिक डरपावै कांपत है मन मेरा ॥२॥
और महा डर नाना बिधि के छिन छिन में दुख पाऊं ।
अन्तर जामी बिनती सुनिये यह मैं अरज सुनाऊं ॥३॥
गुरु सुकदेव सहाय करो अब धीरज रहा न कोई ।
चरनदास को पार उतारो सरन तुम्हारी सोई ॥४॥

शब्द २

॥ राग रामकली ॥

पतित उधारन बिरद* तुम्हारो ।
जो यह बात सांच है हरि जू
तौ तुम हम कूं पार उतारो ॥१॥
बालपने औ तरुन अवस्था
और बुढ़ापे माहीं ।
हम से भई सभी तुम जानो
तुम से नेक छिपानी नाहीं ॥२॥
अनगिन पाप भये मन माने
नखसिख औगुन धारी ।
फिरि फिरि कै तुम सरनै आयौ
अब तुम को है लाज हमारी ॥३॥
सुभ करमन को मारग छूटो
आलस निद्रा घेरो ।
एकहिं बात भली बनि आई
जग में कहायो तेरो चेरो ॥४॥
दीनदयाल कृपाल विसंभर
श्री सुकदेव गोसाईं ।
जैसे और पतित घन तारे
चरनदास को गहियो बांहों ॥५॥

*कीर्ति ।

शब्द ३

॥ राग रामकली ॥

अर्ज सुनो जगदीस गोसाईं ।
ग्रह नछत्र अरु देव बिसार्यो
चरन कंवल की आयो छांहीं ॥१॥
सत बिस्वास यही हिये धार्यो
तोहिं न भूलूं एक घरी ।
इत उत सूं मन खैंच लियो है
काहू से कछु नाहिं सरी ॥२॥
अब चाहो सो करो प्रभु तुमहीं
द्वारे तुम्हरे सुरति अरी ।
भावै नर्क स्वर्ग पहुंचावो
भावै राखौ निकट हरी ॥३॥
अपनी चाह रही नहिं कोई
जब सूं तुम्हरी आस धरी ।
आनि भरोसा छांड़ दियो है
सकल बिकल* सब छार करी ॥४॥
यह आपा तुमहीं कूं दीन्ही
मेरी मो में कुछ न रही ।
आदि पुरुस सुकदेव सुनो जी
चरन दास यों टेर कही ॥५॥

*कष्ट ।

शब्द ४

॥ राग धनाश्री ॥

अब तुम करो सहाय हमारी ।
मन के रोग होय गये दीरघ तन के बड़े बिकारी ॥१॥
तुम सों बैद और को दूसर जाहि दिखाऊं नारी* ।
सजीवन मूल अमर हो जासों सो है दया तुम्हारी ॥२॥
क्रिया कर्म की औषधि जेती रोग बढ़ावन हारी ।
दीजै चूरन ज्ञान भक्ति को मेटो सकल बिथा री ॥३॥
जन के काज पियादे धावत चरन कंवल पर वारी ।
मैं भयो दास अधीन तुम्हारो मेरी करो संभारी ॥४॥
जो मोहिं कुटिल कुचालि जानि कै मेरी सुरति बिसारी ।
चरनदास है सुकदेव तेरो दुष्ट हंसैंगे भारी ॥५॥

शब्द ५

॥ राग केदारा ॥

अब की तारि देव बल बीर ।
चूक मो सूं परी भारी कुबुधि के संग सीर† ॥ १॥
भौ सागर को धार तीच्छन महा गंधीला‡ नीर ।
काम क्रोध मद लोभ भंवर में चित न धरत अब धीर ॥२॥
मच्छ जहं बलवंत पांचौ थाह गहिर गँभीर ।
मोह पवन झकोर दारुन दूर पैलव§ तीर ॥ ३ ॥

---

*नाड़ी, नब्ज़। † खेती। ‡बदबूदार। §फ़ासला।

नाव तौ मंझ धार भरमी हिये बाढ़ो पीर ।
चरनदास कोइ नाहिं संगी तुम बिना हरि हीर* ।।४।।

शब्द ६

।। राग बिलावल ।।

प्रभु जू सरन तिहारी आयो ।
जो कोइ सरन तिहारी नाहीं भरम भरम दुख पायो ।।१।।
औरन के मन देबी देवा मेरे मन तुहि भायो ।
जब सों सुरति सम्हारी जग में और न सीस नवायो।।२।।
नरपति सुरपति आस तुम्हारी यह सुनि कै मैं धायो ।
तीरथ बरत सकल फल त्याग्यो चरन कमल चित लायो।।३।।
नारद मुनि अरु सिव ब्रम्हादिक तेरो ध्यान लगायो ।
आदि अनादि जुगादि तेरो जस बेद पुरानन गायो।।४।।
अब क्यों न बांह गहो हरि मेरी तुम काहे बिसरायो ।
चरनदास कहैं करता तूही गुरु सुकदेव बतायो ।।५।।

शब्द ७

।। राग सोरठ ।।

अब जग फंद छोड़ावो जी हूं चरन कंवल को चेरो ।
पड़ो रहूं दरबार तिहारे संतन माहिं बसेरो ।।१।।
बिना कामना करूं चाकरी आठों पहरे नेरो ।
मनसब† भक्ति कृपा करि दीजै यही मोहिं बहुतेरो ।।२।।
खानेजाद कदीमो‡ कहियो तुही आसरो मेरो ।
झिड़क बिडारो तहूं न छोडूं सेवा सुमिरन तेरो ।।३।।

* सार । † दर्जा । ‡ पुराना गुलाम ।

काहू ओर आन देवन सूं रहो नहीं उरझेरो ।
जैसे राखो त्योंहीं रह हूं करि लीजै सुरझेरो ॥४॥
तेरे घर बिन कहूं न मेरो ठौर ठिकानो डेरो ।
मोसे पतित दीन कूं हरि जू तुम हीं करो निबेरो॥५॥
गुरु सुकदेव दया करि मोको ओर तिहारी फेरो।
चरनदास को सरनै राखौ यही इनाम घनेरो* ॥६॥

शब्द ८

॥ राग बिलावल ॥

तुम साहब करतार हो हम बंदे तेरे ।
रोम रोम गुनेगार हैं बखसो हरि मेरे ॥ १ ॥
दसौ दुवारे मैल है सब गंदम गंदा ।
उत्तम तेरो नाम है बिसरै सो अंधा ॥ २ ॥
गुन तजिकै औगुन कियो तुम सब पहिचानो ।
तुम सूं कहा छिपाइये हरि घट की जानो ॥३॥
रहम करो रहमान सूं यह दास तिहारो ।
भक्ति पदारथ दीजिये आवा गवन निवारो ॥४॥
गुरु सुकदेव उबारि लो अब मेहर करीजै ।
चरनहिं दास गरीब कूं अपनो करि लीजै ॥५॥

* बहुत ।

शब्द ९

॥ राग ढाकी ॥

तुव गुन करूं बखान यह मेरि बुद्धि कहां है ॥टेक॥
चतुर मुखी ब्रह्मा गुन गावैं तिनहुं न पायो जान ॥१॥
गुन गावत संकर जब हारे करने लागे ध्यान ॥२॥
गुनअपारकछुपार न पायो सनकादिक कथि ज्ञान ॥३॥
गुन गावत नारद मुनि थाके सहस मुखन सूं सेस ॥४॥
लीला को कछु वार न पायो ना परिमान न भेस ॥५॥
सक्ति घनी अनगिनित तुम्हारी बहुत रूप बहु नावं।६।
जबहि बिचारूं हिये में हारूं अचरज हेरि हिरावं ॥७॥
अतिअथाहकछुथाहनपाऊंसोचअचकरहिजावं ॥ ८ ॥
गुरु सुकदेव थके रनजीता मैं कहु कौन कहावं* ॥९॥

शब्द १०

॥ राग बिहाग ॥

राखो जी लाज गरीबनिवाज ।
तुम बिन हमरे कौन संवारै सबहीं बिगरैं काज ॥१॥
भक्तबछल हरि नाम कहावो पतित उधारनहार ।
करो मनोरथ पूरन जन को सीतल दृष्टि निहार ॥२॥
तुम जहाज मैं काग तिहारो तुम तजि अंत न जाउं ।
जो तुम हरि जू मारिनिकासोऔरठौर नहिं पाउं ॥३॥
चरनदास प्रभु सरन तिहारी जानत सब संसार ।
मेरी हँसी सो हँसी तुम्हारी तुम हूं देखु बिचार ॥४॥

* मैं कौन गिनती में हूं ।

शब्द ११

॥ राग सोरठ ॥

मो कूँ कछू न चहिये राम ।
तुम बिन सब हीं फीके लागैं
नाना सुख धन धाम ॥ १ ॥
आठ सिद्धि नौ निद्धि आपनी ।
और जनन को दीजै ॥
मैं तौ चेरो जन्म जन्म को ।
निज करि अपनो कीजै ॥ २ ॥
स्वर्ग फलन की मोहिं न आसा ।
ना बैकुंठ न मोच्छहिं चाहूं ॥
चरन कमल के राखौ पासा ।
यहि उर माहिं उमाहूं ॥ ३ ॥
भक्ति न छोड़ूं मुक्ति न मांगूं ।
सुन सुकदेव मुरारी ॥
चरनदास की यही टेक है ।
तजूं न गैल तुम्हारी ॥ ४ ॥

शब्द १२

॥ राग कल्यान ॥

सतगुरु पांचौ भूत उतारौ ।
जनम जनम के लागेहिं आये ।
दे मंतर अब तिन्हैं बिडारौ ॥ १ ॥

काम क्रोध मोह लोभ गर्ब ने ।
मन बौराय किये अपभाये* ॥
जिनके हाथ परो जिव मेरो ।
घेरा घेरि बहुत दुख पाये ॥ २ ॥
एक घरी मोहिं छोड़त नाहीं ।
लहरि चढ़ाय कै बहुत निवाये† ॥
कपि ज्यों घर घर द्वार नचावै ।
उत्तम हरि को नाम छुटाये ॥ ३ ॥
अब की सरन गही है तुम्हरी ।
चरनहिं दास अजाने‡ ॥
किरपा करि यह व्याधि छुटावो ।
गुरु सुकदेव सयाने ॥ ४ ॥

शब्द १३

॥ राग सोरठ ॥

गुरुदेव हमारे आवो जी ।
बहूत दिनों से लगो उमाहो§ ।
आनंद मंगल लावो जी ॥ १ ॥
पलकन पंथ बुहारूँ तेरो ।
नैन परे पग धारो जी ॥

---

* मनमानी । † नीचा दिखलाया । ‡ नादान । § उमंग, लालसा ।

बाट तिहारी निस दिन देखूं ।
हमरी ओर निहारो जी ॥ २ ॥
करूं उछाह* बहुत मन सेती ।
आंगन चौक पुराऊं जी ॥
करूं आरती तन मन वारूं ।
बार बार बलि जाऊं जी ॥ ३ ॥
दै पैकरमा सीस नवाऊं ।
सुनि सुनि बचन अघाऊं जी ॥
गुरु सुकदेव चरन हूं दासा ।
दरसन माहिं समाऊं जी ॥ ४ ॥

करम भरम का निषेध

शब्द १

॥ राग जैजैवंती ॥

गुरु बिन ज्ञान नाहिं तिमिर नसावै ॥टेक॥
भाई भरमत फिरैं लोई जल और पाहन सेई ।
बात नहीं बूझै कोई तिन को वह ध्यावै ॥१॥
देवी और देव पूजै जहं कछु नाहिं सूझै ।
फेरि फेरि जावै दूजे तहां नहीं पावै ॥ २ ॥
बैदिक को भेद ठानै ज्योतिष बिचार जानै ।
काहू की कही नाहिं मानै करै मन भावै ॥ ३ ॥

* उत्साह ।

भूत टोना जादू सेवै प्रभु को न नाम लेवै ।
गुरु भक्ती में न चित देवै गुन नाहिं गावै ॥ ४ ॥
श्री सुकदेव कहैं चरन दास होय रहै ।
सोई मुक्ति धाम लहै आपा जो उठावै ॥ ५ ॥

शब्द २

॥ होरी राग धनाश्री ॥

साधो घूंघट भर्म उठाय होली खेलिये ॥टेक॥
बेद पुरान लाज तजिबे री इन में ना उरझैये ॥१॥
सिर सूं सकुच उतारि चद्दरिया पिय सूं रंग बढ़ैये॥२॥
रूप न रेख है सूरति मूरति ता के बलि बलि जैये ॥३॥
अचल अजर अबिनासी सोई सनमुख दरसन पैये ॥४॥
सत चेतन आनंद सदा हीं निरभय ताल बजैये ॥५॥
पाप पुन्य की संका त्यागो जहँ मर्जाद न पैये ॥६॥
ओला नीर बिचारो जैसे यौं आपा बिसरैये ॥७॥
चरनदास बासना तजि कै सागर बुंद समैये ॥८॥

शब्द ३

॥ राग बिलास ॥

घट में तीरथ क्यों न नहावो ॥टेक॥
इत उत डोलो पथिक बने हीं ।
भरमि भरमि क्यों जन्म गंवावो ॥१॥
गोमती कर्म सुकारथ कीजै ।
अधरम मैल छुटावो ॥२॥

सील सरोवर हित करि न्हैये।
काम अगिन की तपन बुझावो ॥३॥
रेवा* सोई छिमा को जानो।
तामें गोता लीजै ॥४॥
तन में क्रोध रहन नहिं पावै।
ऐसी पूजा चित दै कीजै ॥५॥
सत जमुना संतोष सरस्वति।
गंगा धीरज धारो ॥६॥
झूंठ पटकि निर्लोभ होय करि।
सब हीं बोझा सिर सूं डारो ॥७॥
दया तीर्थ कर्मनासा कहिये।
परसै बदला जावै ॥८॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं।
चौरासी में फिर नहिं आवै ॥ ९ ॥

शब्द ४

॥ राग बिलास ॥

घट में तीरथ यों तुम न्हावो ॥ टेक ॥
ता के न्हान अमर पद पहुंचो।
आदि पुरुस निस्चै करि पावो ॥ १ ॥

---

*नर्बदा नदी।

काशी सो तत करनी कीजै ।
कलिमल सकल नसावो ॥ २ ॥
रहनि गहनि पुष्कर करि जानो ।
यामें मज्जन क्यों न करावो ॥ ३ ॥
ध्यान द्वारिका दृढ़ करि परसो ।
हित की छाप लगावो ॥ ४ ॥
इन्द्रीजित सोइ बद्रीनाथा ।
सत करि चित में लावो ॥ ५ ॥
भंवरगुफा में है तिर्बेनी ।
सुरति निरति लै धावो ॥ ६ ॥
जोग जुक्ति सूं चुबकी लेकरि ।
काग पलटि हंसा होइ जावो ॥ ७ ॥
तन मथुरा अरु मन ब्रिन्दाबन ।
ता में रास रचावो ॥ ८ ॥
हिरदे कंवल खिले परकासा ।
दरसन देखि अधिक हुलसावो ॥ ९ ॥
गुरु चरनन में सबहीं तीरथ ।
सिमटि सिमटि तहं आवो ॥ १० ॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं ।
अपनो मस्तक भेंट चढ़ावो ॥ ११ ॥

* स्नान । † गोता ।

शब्द ५

॥ होरी राग धमार ॥

साधो चलो तुम संभारी जग होरी मचिरहिभारी ॥टेक॥
दंभ पखंड गहे कर में डफ हूबड़ हूबड़* की तारी ।
त्रैगुन तार तंबूरा साजे आसा तृस्ना गति धारी ॥१॥
पाप पुन्य दोउ ले पिचुकारी छोड़त हैं बारी बारी ।
सनमुख ह्वै करि जो नर खेलो ताकेचोटलगीकारी ॥२॥
लोभ मोह अभिमान भरो लै माया गागरि डारी ।
राजा परजा जोगी तपसी भींज रहे संसारी ॥ ३ ॥
कुबुधि गुलाल डारि मुख मींजोकामकलापुटलीमारी।
जुग जुग खेलत यौं चलि आई काहू ते नाहीं हारी ॥४॥
जड़ चेतन दोउ रूप संवारे एक कनक दूजी नारी ।
पांच पचीसलियेसंगअबलाहंसिरमिलगावतगारी।५।
चतुरा फगुवा दै दै छूटे मूरख को लागी प्यारी ।
चरनदास सुकदेव बतावैं निर्गुन ज्ञान गली न्यारी॥६॥

शब्द ६

॥ राग बिलावल ॥

घट में खेलि ले मन खेला ॥ टेक ॥
सकल पदारथ घट ही माहीं हरि सूँ होय जो मेला ।१।
घट में देवल घट में जोती घट में तीरथ सारे ॥२॥
बेगहिं आव उलट घट माहीं बीतै† परबी‡ न्हा रे ॥३॥

* ताली बजाने की आवाज़ का धुन्यात्मक शब्द । † बीतती है । ‡ परब का दिन ।

घट में भरो है मान सरोवर मोती चुगै मराला ॥४॥
घट में ऊंचा ध्यान शब्द का सोहं सोहं माला ॥५॥
घट में बिन सूरज उजियारा राति दिना नहिं सूझै।६।
अमृत भोजन भोग लगतु है बिरला जन कोइ बूझै।७।
घट में पापी घट में धर्मी घट में तपसी जोगी ॥८॥
गुन औगुन सब घट ही माहीं घट में वैद अरु रोगी।९।
राम भक्ति घट ही में उपजै घट में प्रेम प्रकासा ॥१०॥
सुकदेव कहैं चौथा पद घट में पहुंच चरन हीं दासा।११।

शब्द ७

॥ राग सोरठ व बिलावल ॥

जो नर इत के भये न उत के ॥टेक॥

उत को प्रेम भक्ति नहिं उपजी।
इत नहिं नारी सुत के ॥ १ ॥

घर सूं निकसि कहा उन कीन्हा।
घर घर भिच्छा मांगी ॥ २ ॥

बाना सिंह चाल भेड़न की।
साध भये अकि स्वांगी ॥ ३ ॥

तन मूड़ा पै मन नहिं मूड़ा।
अनहद चित्त न दीन्हा ॥ ४॥

इन्द्री स्वाद मिले बिषयन सूं ।
बक बक बक बक कीन्हा ॥ ५ ॥
माला कर में सुरति न हरि में ।
यह सुमरिन कहु कैसा ॥ ६ ॥
बाहर भेख धारि के बैठे ।
अंतर पैसा पैसा ॥ ७ ॥
हिंसा अक्रम कुबुधि नहिं छोड़ी ।
हिरदै सांच न आया ॥८॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं,
बाना पहिरि लजाया ॥९॥

शब्द ८

॥ राग गौरी ॥

सब जग भर्म भुलाना ऐसे ।
ऊंट कि पूंछ से ऊंट बंध्यो ज्यों भेड़ चाल है जैसे ॥टेक॥
खर* का सोर† भूंस‡ कूकर§ की देखा देखी चाली ।
तैसे कलुआ‖ जाहिर भैरों‖ सेढ़‖ मसानी‖ काली‖ ॥१॥
गांव भूमिया हित करि धावैं, जाय बटोही दौरे ।
सद्दो¶ सरवर इष्ट धरत हैं, लोग लोगाई बौरे ॥२॥
राखं भाव स्वान§ गर्धभ को, उनको लाय जिमावैं** ।
ठेठ चमारन को सिर नावैं, ऊंची जाति कहावैं ॥३॥

---

* गदहा । † रेंकना । ‡ भूंकना § कुत्ता । ‖ बनाये हुए देवी और देवता । ¶ शेख सद्दो । ** खिलाते हैं ।

दूध पूत पाथर से मांगैं, जाके मुख नहिं नासा।
लपसी पपड़ी ढेर करत हैं, वह नहिं खावै मासा* ॥४॥
वाके आगे बकरा मारैं, ताहि न हतया जाने।
लै लोहू माथे सों लावैं, ऐसे मूढ़ अयाने ॥ ५ ॥
कहैं कि हमरे बालक जावै,† बड़ी अयुर्बल‡ दीजै।
उनके आगे बिन्ती करते, अंसुवन हिरदा भीजै॥६॥
भोये भटरे§ के पग लागैं, साधु संत की निंदा।
चेतन को तजि पाहन‖ पूजैं, ऐसा यह जग अंधा ।७।
सत संगति की ओर न झांकैं, भक्ति करत सकुचावैं।
चरन दास सुकदेव कहत हैं, क्यों न नरक को जावैं ।८।

शब्द ९

॥ राग गौरी ॥

अरे नर क्या भूतन की सेवा।
दृष्टि न आवै मुख नहिं बोलै ना लेवा ना देवा ॥टेक॥
जेहिं कारन घी जोति जलावै, बहु पकवान बनावै।
सो खर्चै तू अधिक चाव सूं, वह सुपने नहिं खावै ।१।
राति जगावैं भोपा¶ गावैं, झूठे मूंड़ हिलावैं।
कुटुंब सहित तोहिं पैर पड़ावैं, मिथ्या बचन सुनावैं ।२।

*माशा भर। †जनमै। ‡उमर। §भाट। ‖पत्थर। ¶देवी पूजा में जो गीत गाते हैं।

ताहि भरोसे जन्म गंवावैं, जीवत मरत न साथा ।
बड़ भागन नर देही पाई, खोवैं अपने हाथा ॥३॥
चारि बरन में मैली बुधि का, ऊंच नीच किन होई ।
जो कोइ झूठी आसा राखै, अगत जायगा सोई ॥४॥
ताते सत बिस्वास टेक गहि, भक्ति करो हरि केरी ।
चरन दास सुखदेव कहत हैं, होय मुक्ति गति तेरी ।५

शब्द १०

॥ राग सोरठ ॥

साधो भरमा यह संसारा ॥टेक॥
गति मति [illegible], बड़ाई उरझै कैसे हो छुटकारा ॥१॥
भर्म पड़े नाना बिधि सेती, तीरथ बर्त अचारा ॥२॥
देह कर्म अभिमानी भूले, छूंछ पकरि तत डारा* ॥३॥
जोगी जोग जुक्ति करि हारे, पंडित बेद पुराना ॥४॥
षट दरसन पग आप पुजावैं, पहिरि २ रंग बाना ॥५॥
जानत नाहिं आप हम को हैं, को है वह भगवाना ॥६॥
को यह जगत कौन गति लागै, समझै ना अज्ञाना ॥७॥
जा कारन तुम इत उत डोलौ, ताको पावत नाहीं ॥८॥
चरन दास सुकदेव बताये, हरि हैं अंतर माहीं ॥९॥

*सार छोड़ कर असार को पकड़ा ।

शब्द ११
॥ राग सारंग ॥

घट घट में रमता रमि रहेव ॥टेक॥
चेतन तजै भजे जल पाहन ।
मूरख भ्रम में भ्रमि रहेव ॥१॥
एक अखंड रहेव सब व्यापक ।
लख चौरासी समि रहेव ॥२॥
प्रगट भानु* ऐसे हरि दरसैं ।
संपुट† में नहिं खमि‡ रहेव ॥३॥
आपा जानि भूल फिर आपन ।
नख सिख सूं नहिं हम रहेव ॥४॥
चरन दास सुकदेवहिं रलि गयो ।
बचन बिलास न गम रहेव ॥५॥

शब्द १२
॥ चौपाई ॥

ब्राह्मन सो जो ब्रह्म पिछानै ।
बाहर जाता भीतर आनै ॥१॥
पांचौ बस करि झूठ न भाखै ।
दया जनेऊ हिरदे राखै ॥२॥
आतम बिद्या पढ़ै पढ़ावै ।
परमातम का ध्यान लगावै ॥३॥
काम क्रोध मद लोभ न होई ।
चरन दास कहैं ब्रान सोई ॥४॥

*सूरज । †डिबिया जिस में शालिगराम रखते हैं। ‡छपा ।

शब्द १३

॥ अरिल छंद ॥

आतम ज्ञान बिना नहिं मुक्ता ।
बेद भेद करि देखा जोय ॥ १॥
ब्रह्मा सेस महेस पूज करि ।
बस वह लोक रहत नहिं सोय ॥ २ ॥
जल पाहन अरु भूत भवानी ।
पूजि पूजि भरमा सब कोय ॥ ३॥
चरन दास तत बिरला जानै ।
आवा गवन दुख बहुरि न होय ॥ ४॥

शब्द १४

॥ राग सवैया ॥

न ऊरध बाहु न अंग भभूति
न धूनी लगाय जटा सिर धारूं ।
न मूंड़ मुड़ाय फिरूं बन हीं बन
तीरथ बर्त नहीं तन गारूं ॥१॥
उलटि लखो घट में प्रतिबिंब सो ।
दीपक ज्ञान चहूं दिस जारूं ।
चरनदास कहैं मन हीं मन में ।
अब तुही तुही करि तोहिं पुकारूं ॥ २ ॥

शब्द १५

॥ राग होरी ॥

वह देस अटपटा बिकट पंथ ।
कोइ गुरुमुख पहुंचै होय संत ॥ टेक ॥

बहुत चले मग चाव चाव ।
औरन सूं कहि आव आव ॥ १ ॥

हमहुं पहुंच तुम्हैं दें बसाय ।
ऐसो जान्यो सुलभ दाय* ॥ २ ॥

बहुतक तपसी कष्ट साध ।
बहुतक पंडित पोथी लाद ॥ ३ ॥

बहुतक चुंडित जटा धारि ।
चहुं ओर पावक जारि जारि ॥ ४ ॥

बहुतक मुंडित पूजा राखि ।
बहुतक भक्तन पिछली साखि† ॥ ५ ॥

बहुतक जोगी पवन जीति ।
हरि मिलबे की करैं रीति ॥ ६ ॥

कायर थाके बाट माहिं ।
कछु इक आगे चले जाहिं ॥ ७ ॥

---

* दांव । † बुजुर्गों का पक्ष ।

द्वै* कनक कामिनी लिये घेरि ।
सो भी उनके पड़े फेरि ॥ ८ ॥
कोइ उन से छुट आगे जाय ।
जहं ऋद्धि सिद्धि लेवैं लगाय ॥ ९ ॥
सुकदेव कहैं सब डारि आस ।
व्हां प्रेमी पहुंचै चरनदास ॥ १० ॥

शब्द १६

त्रिकुटीमें तीरथ अगम तिरबेनी जेहिं नाम ।
न्हाय जोग की जुक्ति सूं पूरन हों सब काम ॥१॥
रनजीत† कहैं जहं न्हाइये त्रिकुटी तीरथ धाम ।
नित परबी जहं होत है भजन करौ निःकाम।२॥
जा तीरथ को पवन न लागै ।
जा तीरथ में जन अनुरागै ॥ १ ॥
जा तीरथ में पवन अनेका ।
पूरे गुरु सूं मिलि मिलि देखा ॥ २ ॥
वा तीरथ में जो कोइ न्हावै ।
भवसागर में बहुरि न आवै ॥ ३ ॥
जहां न चंद्र सूर नाहिं तारे ।
गुरुगम पहुंचै अति मतवारे ॥ ४ ॥
जा तीरथ का बँधा जो नीर ।
उज्जल निरमल गहिर गँभीर ॥ ५ ॥

---

*दो । †चरनदास जी का घरऊ नाम ।

ब्रह्मा बिस्नु जहां त्रय देवा ।
जोग जुक्ति में लावें सेवा ॥ ६ ॥
बारह मास दामिनी* दमकै ।
सोन पटीला जुगनू झमकै ॥ ७ ॥
रनजीत मीत बास जहं कीजै ।
नित अस्नान महा सुख लीजै ॥ ८ ॥

शब्द १७

॥ राग सोरठ ॥

सुनु राम भक्ति गति न्यारी है ।
जोग जज्ञ संजम अरु पूजा
प्रेम सबन पर भारी है ॥टेक॥
जाति बरन पर जो हरि जाते ।
तौ गनिका क्यों तारी है ॥ १ ॥
सेवरी सरस† करी सुर मुनि ते ।
हीन कुचील जो नारी है ॥ २ ॥
दुस्सासन पत खोवन लागेव ।
सब हीं ओर निहारी है ॥ ३ ॥
होय निरास कृश्न कहं टेरी ।
बाढ़ो चीर अपारी‡ है ॥ ४ ॥

* बिजली † बराबरी । ‡ जब दुशाशन जुए में पांडवों से उनकी स्त्री द्रोपदी को जीता और नंगा करने को उस की सारी खींचने लगा ते। द्रोपदी ने सब की ओर देखा पर कोई सहायक न हुआ तब निरास होकर उस ने श्रीकृश्न को टेरा जिन्हों ने उसकी सारी को इतना बढ़ाया कि खींचते २ दुशाशन हार गया ।

टेढ़ी लैंडी कंस रजा की ।
दीन्हो रूप करारी है ॥ ५ ॥
एक सें एक अधिक बृज नारी ।
कुबिजा कीन्ही प्यारी है ॥ ६ ॥
पांचौ पँडवन जाय सजो है ।
सगरो सजी संवारी है ॥ ७ ॥
बालमीक* बिन काज न होतो ।
बाजो संख मुरारी है ॥ ८ ॥
साधैं की सेवा में राचो ।
भूप की सुरति बिसारी है ॥ ९ ॥
सैना† भक्त के कारन हरि जू ।
वाकी सूरत धारी है ॥ १० ॥
दास कबीरा जाति जोलाहा ।
भये संत उपकारी है ॥ ११ ॥
साखि सुनो रैदास चमारा ।
सो जग में उंजियारी है ॥ १२ ॥
कनक जनेऊ काढ़ि दिखायो ।
बिप्र गये सब हारी है ॥१३॥
अजामील सदना तिरलोचन ।
नाभा नाम अधारी है ॥१४॥

* भंगी जाति का भक्त । † नाई जाति का भक्त ।

धना जाट कालू अरु कूवा ।
बहुत किये भौ पारी है ॥१५॥
प्रीत बराबर और न देखै ।
बेद पुरान बिचारी है ॥१६॥
चरन दास सुकदेव कहत हैं ।
ता बस आप मुरारी है ॥१७॥

शब्द १८

॥ राग रामकली ॥

चारि बरन सूं हरि जन ऊंचे ।
भये पबित्तर हरि के सुमिरे तन के उज्जल मन के सूचे॥१॥
जो न पतीजै साखि बताऊं सवरी के जूंठे फल खाये।
बहुत ऋषीसर हूांईं रहते तिन के घर रघुपति नहिं आये॥२॥
भिल्लनि पांव दियो सरिता* में सुद्ध भयो जल सब कोइ जानै।
मंद हुतो सो निरमल हूवो अभिमानी नर भये खिसाने॥३॥
ब्राह्मन छत्री भूप हुते बहु बाजो संख सुपच जब आयो।
बालमीक जग पूरन कीन्हो जैजैकार भयो जस गायो॥४॥
जाति बरन कुल सोई नीको जाके होय भक्ति परकास।
गुरु सुकदेव कहत हैं तो को हरि जन सेव चरन हीं दास ॥५॥

*नदी ।

शब्द १९

॥ राग रामकली ॥

सब जातिन में हरि जन प्यारे ॥टेक॥
रहनी तिनकी कोइ न पावै ।
तन सूं जग में मन सूं न्यारे ॥१॥
साखि सुनो अंबरीष भूप की ।
दुरबासा जहं आयो ॥२॥
लगो स्राप देन राजा को ।
चक्र सुदरसन जारन धायो ॥३॥
प्रभु जी आये दुरजोधन के ।
वह मन में गरबायो* ॥४॥
नाना बिधि के ब्यंजन त्यागे ।
साग बिदुर घर रुचि सूं पायो ॥५॥
सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग ।
मान संत को राखो ॥६॥
भक्तन बस भगवान सदा हीं ।
वेद पुरानन में जो भाखो ॥७॥
ब्राह्मन छत्री बैस्य सूद्र घर ।
कहीं होय क्यों न बासा ॥८॥
धनि वह कुल सुकदेव बखानैं ।
यह तुम सुनो चरनहों दासा ॥९॥

*अहंकार किया ।

शब्द २०

॥ छप्पै छंद ॥

पग तब होवैं सुद्ध साधु के पग को ध्यावै ।
हस्त सुद्ध तब होयं दोऊ कर सीस नवावै ॥ १ ॥
नैन सुद्ध जय होयं साध के दर्सन पावै ।
रसन सुद्ध तब होय राम गुन मुख सूं गावै ॥ २ ॥
भन चरनदास सब सुद्ध होय जब चरन परस गुरदेव के।
वै आतम तत्व बिचार दें कर दरसन अलख अभेव* के।३।

शब्द २१

॥ राग बिलावल ॥

थोथे सुमिरन कहा सरै ॥ टेक ॥
मन के रोग सोक नहिं खोये ।
हिंसा डूबे अकस जरै ॥ १ ॥
नारी सुत सूं मोह कियो है ।
नेक न हरि के प्रेम अड़े ॥ २ ॥
कुल नाते परिवार संभारे ।
साधन की नहिं टहल करै ॥ ३ ॥
माला तिलक सुधारि संवारे ।
राखत छलबल मकर घने ॥ ४ ॥

*जिस का भेद न मिले ।

अंतर और निरंतर औरै।
सिंह गऊ मुख रहत बने ॥ ५ ॥
ऐसी भक्ति मुक्ति नहिं पावै।
करम लगैं अरु नरक परै ॥ ६ ॥
जम की दंड दहन पावक की।
जनम मरन यों नाहिं टरै ॥ ७ ॥
लच्छन प्रेम* सहित जप कीजै।
भीतर बाहर उघर† नचे ॥ ८ ॥
चरन दास सुकदेव कहत हैं।
हरि रीझैं जब ब्याधि बचै ॥ ९ ॥

शब्द २२

॥ राग बिलावल ॥

हमारे चरन कंवल को ध्यान ॥ टेक ॥
मूरख जगत भरमता डोलै चाहत जल अस्नान ॥१॥
सब तीरथ वाही सूं प्रगटे गंगा आदिक जान।
साकित‡ गिरही बानेधारी§ हैं सब हीं अज्ञान ॥२॥
हरि सों‖ हीरा छांड़ि दियो है पूजैं कांच पखान।
हरि चरनन की महिमा जानैं हैं वे संत सुजान ॥३॥

*प्रेम लच्छना जो दसवां प्रकार भक्ति का है। †खुल कर। ‡मुर्दा दिल। §भेखी। ‖ऐसा।

जिनसे ये सब पातक नासैं नित होवै कल्यान ।
भोंदू नर माया के चेरे इनको कह*पहिचान ॥४॥
चरन दास सुकदेव गुरू ने दीन्हो अंजन ज्ञान ।
सांचो प्रीतम जानि परो है बिसरि गये सब आन ॥५॥

शब्द २३

॥ छप्पै छंद ॥

माला तिलक बनाय पूर्ब अरु पच्छिम दौरा ।
नाभि कंवल कस्तूरि हिरन जंगल भो†बौरा ॥१॥
चांद सूर्य्य थिर नहीं नहीं थिर पवन न पानी ।
तिरदेवा थिर नहीं नहीं थिर माया रानी ॥२॥
चिरन दास लख दृष्टि भर एक शब्द भरपूर है ।
नरखिं परखि ले निकट हीं कहन सुनन कूं दूर है ॥३॥

———o———

सूरमा का अंग ।

शब्द १

॥ राग सोरठ ॥

ना कोइ संत समान है सूरा ।
मोह सहित सब सेना मारी ऐसो सावंत‡ पूरा ॥१॥

*क्या । †भया । ‡बहादुर ।

छिमा की ढाल गही कर अपने बांधे सस्त्र उदारा[*] ।
करम धरम के दल को पेलै पल पल बारंबारा ॥ २॥
सुरत को तीर हृदय को तरकस ध्यान कमान बनावै ।
प्रेम हाथ सूं खैंचन लागै चोट निसाने लावै ॥ ३ ॥
बुद्धि बिबेक कटारी बांधे बचन बिलास कि बरछी ।
सत पुरसों के हियरे बेधै कहि कहि बतियां तिरछी ॥४॥
चित में चाव चौगुनो उनके सुनि सुनि अनहद तूरा ।
अगम पंथ सूं पग न डिगावै होय जाय चकचूरा[†] ॥५॥
मन हुलास आस धर पिय की सुनत खेत में धावै ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं अमर लोक पद पावै ॥६॥

शब्द २

॥ राग सोरठ व आसावरी ॥

साधू पैज[‡] गहै सोइ सूरा ।
जाके मुख पर नूर है जब बाजै मारू तूरा ॥१॥
कलंगी अरु गजगाह[§] बनावै इनका परन दुहेला[‖] ।
सावँत भेख बनाय चलत हैं यह नहिं सहज सुहेला[¶] ॥२॥

---

*उदारता का हथियार । † चूर चूर । ‡टेक । §झब्बों या फुंदनों की माला जिसे हाथी या घोड़े को पहिनाते हैं । ‖कठिन । ¶आसान ।

या बाने को नेम यही है पग धरि फिरि न उठावे ।
जो कुछ होय सो आगेहिं आगे आगे हीं को धावै॥३॥
रन में पैठि झड़ाझड़ि खेलै सन्मुख सस्तर खावे ।
खेत न छोड़े हूांईं जूझै तब हीं सोभा पावे ॥४॥
गुरु सुकदेव दियो है हेला ऐसा होय सो आवे ।
चरनदास बाना संतन का तौलै सीस चढ़ावे ॥५॥

शब्द ३

॥ राग सोरठ व आसावरी ॥

साधो टेक हमारी ऐसी ।
कोटि जतन करि छूटै नाहीं कोऊ करो अब कैसी॥१॥
यह पग धरो संभाल अचल होइ बोल चुके सोइ बोले।
गुरु मारग में लेन न देनो अब इत उत नहिं डोले॥२॥
जैसे सूर सती अरु दाता पकरी टेक न टारैं ।
तन करि धन करि मुख नहिं मोड़ैं धर्म न अपनो हारैं ३
पावक जारो जल में बोरो टूक टूक करि डारो ।
साध संगति हरि भक्ति न छोड़ूं जीवन प्रान हमारो ४
पैज न हारूं दाग न लागै नेक न उतरै लाजा ।
चरनदास सुकदेव दया से सब बिधि सुधरैं काजा ५

शब्द ४

॥ राग सारंग ॥

हमारे राम नाम की टेक टारी ना टरै।
लाख करो कोड़ कोट करो जिय को तौ कुछ न सरै ॥१॥
ज्यों कामी कूं तिरिया प्यारी ज्यों लोभी कूं दाम।
अमलदार कूं अमल पियारो ऐसे हम कूं नाम ॥२॥
कर सूं दृढ़ गहि गहि कै पकरों हारिल* की लकड़ी भई।
अब कैसे करि छूटै मो सों रोम २ तन मन मई ॥३॥
ज्यों प्रहलाद पैज दृढ़ कीन्ही हरनाकुस से बहु अरे†।
उबरो भक्त असुर गहि मारो परगट हो हरि आ खरे‡ ४
गुरु सुकदेव सहाय करी है अब पग पाछे क्यों परै।
चरनहिंदास बचन नहिं मोड़ै सूर सती मूए टरै ॥५॥

शब्द ५

॥ राग सारंग ॥

साधो टेक गई जाको सब गयो।
लाज गई अरु काज गये
सब बचन धर्म कछु ना रह्यो ॥१॥
जग में हांस फांस हिय माहीं
कायरपन यों दहि गयो।
अब पछिताये होत कहा है
वह पान पतेरो बहि गयो ॥२॥

---

*एक चिड़िया जो लकड़ी को ऐसा पकड़ती है कि मरे पर भी नहीं छोड़ती †। दुशमन। ‡खड़े।

पैज* तजी मुख कारो हूवो
धृग धृग जीवन तासु को।
बोझ गयो ओछे की संगति
यह परताप कुबास को॥ ३ ॥
चरनदास सुकदेव कहैं यों
टेक न देवो सिर देवो।
बार बार नर देह न पइये
अपजस जग में क्यों लेवो॥ ४ ॥

शब्द ६

॥ राग सोरठ ॥

अरे ले गुरु के बचन चित धर रे।
छिन छिन तेरी आयु घटत है
बेग संभारो घर रे॥ १ ॥
सील छिमा जत† दृढ़ करि राखो
गर्ब गुमान निवारो।
पांचो इन्द्री बस करि अपने
मन गनीम‡ को मारो॥ २ ॥
काया कोट§ बुहारि‖ जुक्ति सूं
सत्त सिंहासन धरिये।
ता पर बैठि अमर पदवी ले
राज अभयपुर करिये॥ ३ ॥

---

* टेक। † जती का धर्म याने इन्द्रियों को बस में रखना।
‡ दुश्मन। § क़िला। ‖ साफ़ करके।

सब पर अमल चलै जब तेरो
तो सम और न कोई ।
सेवक साहब लोहा कंचन
बुंद समुन्दर होई ॥ ४ ॥
बिघ्न कलेस आपदा नासै
निर्मल आनंद पावै ।
चरनदास सुकदेव दया सूं
रहनि गहनि समुझावै ॥ ५ ॥

शब्द ७

॥ राग सोरठ ॥

साधो जो पकरी सो पकरी ।
अब तौ टेक गही सुमिरन की
ज्यों हारिल की लकरी* ॥ १ ॥
ज्यों सूरा ने सस्तर लीन्हो
ज्यों बनिये ने तखरी† ।
ज्यों सतवंती लियो सिंधौरा
तार गह्यो ज्यों मकरी ॥ २ ॥
ज्यों कामी कूं तिरिया प्यारी
ज्यों किरपिन‡ कूं दमरी§ ।
ऐसे हम कूं राम पियारे
ज्यों बालक कूं ममरी|| ॥ ३ ॥

*पृष्ठ ८८ का नोट देखिये । †तराज़ू । ‡कंजूस । §दमड़ी जो नौ कौड़ी की होती है । ||माता ।

ज्यों दीपक कूं तेल पियारो
ज्यों पावक कूं समरी* ।
ज्यों मछली कूं नीर पियारो
बिछुरे देखै जम री ॥ ४ ॥
साधों के संग हरि गुन गाऊं
ता ते जीवन हमरी ।
चरनदास सुकदेव दृढ़ायो
और छुटी सब गम† री ॥ ५ ॥

शब्द ८

॥ राग कल्यान ॥

वह राजा सो यह बिधि जानै ।
काया नगर जीतिबो ठानै ॥ १ ॥
काम क्रोध दोउ बल के पूरे ।
मोह लोभ अति सावंत सूरे ॥ २ ॥
बल अपनो अभिमान दिखावै ।
इन को मारि राह गढ़ धावै ॥ ३ ॥
पांचो प्यादे देहि उठाई ।
जब गढ़ में कूदै मन लाई ॥ ४ ॥
ज्ञान खड़्ग लै दुंद मचावै ।
कपट कुटिलता रहन न पावै ॥ ५ ॥

---

*सेमर की रुई । †रंज ।

चुनि चुनि दुरजन हनि सब डारै ।
रहते सहते सकल बिडारै ॥ ६ ॥
मन सूं ब्रह्म होय गति सोई ।
लच्छन जीव रहे नहिं कोई ॥ ७ ॥
अचल सिंहासन जब तू पावै ।
मुक्ति खवासी चंवर ढुरावै ॥ ८ ॥
आठौ सिद्धि जहां कर जोरैं ।
सौंहीं* ताकैं मुख नाहिं मोरैं ॥ ९ ॥
निस्चल राज अमल करै पूरा ।
बाजै नौबत अनहद तूरा ॥ १० ॥
तीन देव अरु कोटि अठासी ।
वै सब तेरी करैं खवासी ॥ ११ ॥
गुरु सुकदेव भेद दियो नीको ।
चरनदास मस्तक कियो टीको ॥ १२ ॥
रनजीता यह रहनी पावै ।
थोथी करनी कथनि बहावै ॥ १३ ॥

शब्द ९

॥ राग करखा ॥

सोई जन सूर जो खेत में मंड़ि रहै
भक्ति मैदान में रहै ठाढ़ा ।
सकल लज्जा तजै महा निरभय गजै
पैज† नीसान जिन आय गाढ़ा ॥ १ ॥

---

* सामने ही । † पृष्ठ ८९ का नोट देखिये ।

भये बहु बीर गंभीर जे धीर मति
सबन कूं जस कहत ग्रन्थ होई ।
तिन बिषै कछू इक नाम बरनन करूं
सुनो हो सन्त दै चित्त सोई॥ २ ॥
पिता सूं रूठि ध्रुव पांच हीं बर्ष को
टेक गहि भक्ति के पंथ धायो ।
छल भयो ना डिगो टेक पूरी भई
जीत मैदान हरि दर्स पायो ॥ ३ ॥
हठेव* प्रहलाद हरि नाम छांड़ो नहीं
बाप ने त्रास दै बहु डिगायो ।
टेक जब ना टरी राम रच्छा करी
दुष्ट कूं मारि कै जन जितायो ॥ ४ ॥
कबीर दादू† धने पहिर बक्तर‡ बने
नामदेव§ सारिखे बहुत कूदे ।
सैन§ सदना§ बली§ भक्त पीपा§ बड़ो
राम की ओर कूं चले सूधे ॥ ५ ॥
मलूक§ जैदेव§ गजगाह‖ कलंगी धरे
सूर§ रैदास§ मुख नाहिं मोड़ा ।
ध्यान बंदूक में प्रेम रंजक जमा
मीर माधव§ चला कुदाय घोड़ा ॥ ६ ॥

* हठ किया । † धना भक्त । ‡लोहे की ज़ंजीर का वस्त्र जिसे योधा लड़ाई में पहिनते हैं । §भक्तों के नाम । ‖पृष्ठ ८६ का नोट देखिये ।

दास मीरा पिली प्रेम सन्मुख चली
छोड़ दई लाज कुल नाहिं माना ।
और सेवरी मढ़ी तोड़ ऊंची गढ़ी
दौर कर माचली* प्रेम जाना ॥ ७ ॥
श्री सुकदेव रनजीत सावँत किये।
लड़े कलिजुग बिषै खंभ गाड़े ।
बहुत सेना लिये ललक हूहू किये
चरनही दास संग नाहिं छांड़े ॥ ८ ॥

शब्द १०

॥ राग सोरठ ॥

जो नर इक छत† भूप कहावै ॥
सत्त सिंहासन ऊपर बैठै जत‡ ही चंवर ढुरावै ॥१॥
दया धर्म दोउ फौज महा लै भक्ति निसान चलावै ।
पुन्न नगारा नौबत बाजै दुरजन सकल हलावै ॥२॥
पाप जलाय करै चौगाना हिंसा कुबुधि नसावै ।
मोह मुकद्दम काढ़ि मलुक सूं ला बैराग बसावै ॥३॥
साधन नायब जित तित भेजै दै दै संजम साथा ।
राम दोहाई सिगरे फेरै कोइ न उठावै माथा ॥४॥
निरभय राज करै निस्चल ह्वै गुरु सुकदेव सुनावै ।
चरनदास निस्चै करि जानौ बिरला जन कोइ पावै॥५॥

---

* मचल गई । †छत्रधारी । ‡जती का धर्म याने इंद्रियों को बस में रखना ।

शब्द ११

॥ राग कान्हरा ॥

धनि वे नर हरि दास कहाये ।
राम भक्ति दृढ़ही करि पकरी आन धर्म सबही बिसराये।
आठ पहर गलतान* भजन में प्रेम मगन हिय में हुलसाये
आप तरैं तारैं औरन कूं बहुतक पापी पार लगाये ।२।
प्रभुदरसनबिनऔरनआस।धर्मकामअरुमोच्छनचाहे।
आठौ सिद्धि फिरैं संग लागी नेक न देखैं नैन उठाये।३।
तिन को ऋखि मुनि जाप करत हैं हरि जन हरि
दोउ संगहिं गाये ।
ऊंची पदवी इंदर हूं ते देवन देखि अधिक ललचाये ।४।
कहें सुकदेव चरनही दासा धनि माता ऐसे जन जाये
जीवत सोभा जग में पाई तन छूटे हरि माहिं समाये।५।

चेतावनी का अंग

शब्द १

॥ राग मंगल ॥

महा मूढ़ अज्ञान भक्ति में क्या करा ।
गुरु सूं बेमुख होय बड़ापन चित धरा ।१।
मुक्ति पंथ की ओर मँसूबे सूँ चला ।
तैसे बर्त† पै जाय जो नट भूला कला ॥२॥

---

* मतवाले । †रस्सा ।

गिरा धरनि पर आय भया तन चूर है ।
जो कोइ ऐसा होय बड़ा ही कूर* है ॥ ३ ॥
जैसे बृच्छ तें टूटि बिगड़ फल जात है ।
ऐसे गुरु तें छूटि कछू न रहात है ॥ ४ ॥
द्रुम† हीं सूं लगि रहा जु फल नीका भया ।
पक्का भली ही भांति धनी के कर गया ॥५॥
यही समझ गुरु संग कबहुं नहिं त्यागिये ।
मन में निस्चै लाय सरन हीं लागिये॥६॥
सब तन अंगन माहिं दीनता छाइये ।
गुरु के चरन निहारि कै सीस नवाइये ॥७॥
दोनों कर को जोरि कै अस्तुति कीजिये ।
दरसन करि सुख पाय कै सिच्छा लीजिये।८।
श्री सुकदेव दयाल ने मो सूं यों कही ।
चरनदास सिख जानि कै ऐसा हो सही९

शब्द २

॥ राग बिलावल ॥

करि ले प्रभु सूँ नेहरा मन माली यार ।
कहा गर्ब मन में धरै जीवन दिन चार ।१।
ज्ञान बेलि गहु टेक की दया क्यारी सँवार ।
जत सत दृढ़ के बीजहीं बोवो तासु मंझार ।२।

---

*दुष्ट । † पेड़ ।

सील छिमा के कूप को जल प्रेम अपार ।
नेम डोल भरि खैंचि कै सींचो बाग बिचार ॥ ३ ॥
छल कीकर* कूं काटि कै बांधो धीरज बार ।
सुमति सुबुद्धि किसान कूं राखौ रखवार ॥ ४ ॥
धर्म गुलेल जु प्रीत की हित धनुष सुधार ।
झूठ कपट पच्छीन कूं ता सूं मार बिडार ॥ ५ ॥
भक्ति भाव पौधा लगै फूलै रंग फुलवार ।
हरि रस माता होय के देखै लाल बहार ॥ ६ ॥
सत संगति फल पाइये मिटै कुबुधि बिकार ।
जब सतगुरु पूरा मिलै चाखै अमृत सार ॥ ७ ॥
समझावैं सुकदेव जी चरनदास संभार ।
तेरी काया में खिलै सांचो गुलजार ॥ ८ ॥

शब्द ३

॥ राग देव गंधार ॥

मनुवां राम के ब्यौपारी ।
अब के खेप भक्ति की लादी बनिज कियो तैं भारी ॥१॥
पांचो चोर सदा मग रोकत इन सूं कर छुटकारी ।
सतगुरु नायक के संग मिलि चल लूट सकै नहिं धारी† ॥२॥
दो ठग मारग माहिं मिलैंगे एक कनक इक नारी ।
सावधान हो पेंच न खैयो रहियो आप संभारी ॥३॥

---

* बबूल का पेड़ । † लुटेरों की एक जाति ।

हरि के नगर में जा पहुंचोगे पैहो लाभ अपारी।
चरनदास तो कूं समुझावैं हे मन बारम्बारी ॥४॥

शब्द ४

॥ राग धनाश्री ॥

अपना हरि बिन और न कोई।
मातु पिता सुत बंधु कुटुंब सब स्वारथ हीं के होई ॥१॥
या काया कूं भोग बहुत दै मरदन करि करि धोई।
सो भी छूटत नेक तनिक सो संग न चाली वोई ॥२॥
घर की नारि बहुत हीं प्यारी तिन में नाहीं दोई*।
जीवत कहती साथ चलूंगी डरपन लागी सोई ॥३॥
जो कहिये यह द्रब्य आपनी जिन उज्जल मति खोई।
आवत कष्ट रखत रखवारी चलत प्रान ले जोई ॥४॥
या जग में कोई हितू न दीखै मैं समझाऊं तोई।
चरनदास सुकदेव कहैं यों सुनि लीजै नर लोई ॥५॥

शब्द ५

॥ राग धनाश्री ॥

मन में दीरघ भरे बिकारा।
सतगुरु साहब बैद मिले बिनु कटैं न रोग अपारा ॥१॥
त्रैगुन के त्रै दोष पगो है काम क्रोध ज्वर जारा।
तृस्ना बायु उठी उर अंतर डोलत द्वारहिं द्वारा ॥२॥
बिषै बासना पित कफ लागी इन्द्रिन के सुख सारा।
सतसंगति रस करुवा लागे करत न अंगीकारा ॥३॥

* एक जान दो क़ालिब।

सत पुरुसन को कहा न मानै सील छिमा नहिं धारा ।
रसना स्वाद तजो नहिं मूरख आपनपौ न संभारा ॥४॥
चरनदास सुकदेव मिले जब औषधि ज्ञान बिचारा ।
तन मन को सब रोग मिटायो आवा गवन निवारा ॥५॥

शब्द ६

॥ राग नट व बिलाबल सारंग ॥

हमारे राम भक्ति धन भारी ।
राज न डांड़ै चोर न चोरै लूटि सकै नहिं धारी ॥१॥
प्रभु पैसे अरु नाम रुपैये मुहर मोहब्बत हरि की ।
हीरा ज्ञान जुक्ति के मोती कहा कमी है ज़र* की ॥२॥
सोना सील भंडार भरे हैं रूपा रूप अपारा ।
ऐसी दौलत सतगुरु दीन्ही जा का सकल पसारा ॥३॥
बांटौं बहुत घटै नहिं कबहूं दिन दिन डेवढ़ी डेवढ़ी ।
चोखा माल द्रब्य अति नीका बहा लगै न कौड़ी ॥४॥
साह गुरू सुकदेव बिराजैं चरनदास बन जोटा† ।
मिलि मिलि रंक‡ भूप होइ बैठे कबहुं न आवै टोटा ॥५॥

शब्द ७

॥ राग काफी ॥

क्या दिखलावै सान§ यह कुछ थिर न रहैगा ।
दारा सुत अरु माल मुलुक का कहा करै अभिमान ॥१॥

---

* रुपया, सोना । † ब्यौपारी । ‡ दरिद्र । § शान ।

रावन कुंभकरन हरनाकुस राजा कर्न समान ।
अरजुन नकुल भीम से जोधा माटी हुए निदान ॥२॥
छिन छिन तेरो तन छीजत है सुन मूरख अज्ञान ।
फिर पछताये कहा होयगा जब जम घेरै आन ॥३॥
बिनसैं* जल थल रबि ससि तारे सकल सृस्टि की हानि ।
अजहूं चेत हेत करु हरि सूं ताही को पहिचान ॥४॥
नवधा भक्ति साधु की संगति प्रेम सहित कर ध्यान ।
चरनदास सुकदेव हिं सुमिरौ जो चाहौ कल्यान ॥५॥

शब्द ८

॥ राग मालश्री ॥

थिर नहिं रहना है आखिर मौत निदान ॥टेक॥
देखत देखत बहुतक बिनसे आवत तुम्हरी बारि ।
जतन करो कोइ नाना बिधि के बचै नहीं नर नारि१॥
वे जोगेस्वर बस करि मौतै जड़ दियौ बज्र किवाड़ ।
ह्वै बैठे ज्यों मरना नाहीं माटी ह्वै गये हाड़ ॥२॥
कित गये रावन कुंभकरन से हरनाकुस सिसुपाल ।
संकर दियो अमर बर जिनको सो भी खाये काल ॥३॥
यह तन बरतन कांच को रे ठेस लगे खुलि जाय ।
आज मरै कै कोटि बर्स लैं अंत नहीं ठहराय ॥४॥
बीतत अवधि चलावा आवै छांड़ि जगत की आस ।
गुरु सुकदेव चितावैं तो कूं समुझ चरन हीं दास ॥५॥

---

*नाश होंगे।

शब्द ९

॥ राग गौरी ॥

आवो साधो हिलि मिलि हरि जस गावैं ।
प्रेम भक्ति की रीति समुझ करि हित सूं राम रिझावैं१॥
गोबिंद के कौतुक गुन लीला ता को ध्यान लगावैं ।
सेवा सुमिरन बंदन अरचन* नौधा सूं चित लावैं॥२॥
अब की औसर भलो बनो है बहुरि दांव कब पावैं।
भजन प्रताप तरैं भव सागर उर आनंद बढ़ावैं ॥३॥
सतसंगति को साबुन लेकर ममता मैल बहावैं ।
मन कूं धो निरमल करि उज्जल मगन रूप हो जावैं॥४॥
ताल पखावज झांझ मजीरा मुरली संख बजावैं ।
चरनदास सुकदेव दया सूं आवागवन मिटावैं ॥५॥

शब्द १०

॥ राग आसावरी ॥

गुरुमुख यह जग झूंठ लखाया ।
साध संत अरु बेद कहत हैं और पुरानन गाया ॥१॥
मृग तृस्ना के नीर लोभाना। सीपी रूपा जाना ।
फटिक सिला पर पीक परी है मूरख लाल लोभाना २॥
सुपने में सब ठाठ ठटो है कुल नाते परिवारा ।
दृष्टि खुली जब सब हीं नासे रहो नहीं आकारा ॥३॥

* पूजन ।

ताते चेत भजन कर हरि को यहां मत मन को पागो।
वा घर गये बहुरि नहिं आवो आवा गवन न लागो४॥
या सुपने में लाभ यही है चरनदास मुख भाखो।
जोगेस्वरजापद मिलिरहियातुरियाहितचितराखो॥५॥

शब्द ११

॥ राग मालश्री॥

छिन भंगी छल रूप यह तन ऐसा रे॥ टेक॥
जा को मौत लगौ बहु बिधि सूं नाना अँग ले बान।
बिख अरु रोग सस्त्र बहुतक हैं और बिघन बहु हान॥१
निस्चै बिनसै बचै न क्यों हीं जतन किये बहु दान।
गृह नच्छत्र अरु देव मनावैं साधैं प्रान अपान॥२॥
अचरज जीवन मरिबो सांचो यह औसर फिर नाहिं
पिछले दिन ठगियन संग खोये रहे सो यों हीं जाहिं३
जो पल है सो हरि कूं सुमिरो साध संगति गुरुसेव।
चरन दास सुकदेव बतावैं परम पुरातन भेव॥४॥

शब्द १२

॥ राग मालश्री॥

जानै कोइ संत सुजान यह जग सुपना है॥ टेक॥
सुप्न कुटुंबी आपा मानै सुप्न बैरागी लय।
सुपनै लेना सुपनै देना सुपनै निर्भय भय॥ १॥
सुपनै राजा राज करत है सुपनै जोगी जोग।
सुपनै दुखिया दुख बहु पावै सुपनै भोगी भोग॥२॥

सुपनै सूरा रन में जूझै सुपनै दाता दान।
सुपनै पिय संग पावक जरिया सुप्र मान अपमान।३
सुपनै ज्ञानी गुरु गम जागै अपना रूप निहारि।
अज्ञानी सोवत सुपने में डसै अविद्या नारि ॥ ४ ॥
चरन दास सुकदेव चितावैं सुपना सो सब झूठ।
अचरज समझ अगाध पुरानी मौन गही यहि मूठ।५

शब्द १३

॥ राग बरवा ॥

या तन को कह गर्ब करत है
ओला ज्यों गलि जावै रे ॥ टेक ॥
जैसे बरतन बनो कांच को
ठपक* लगे बिनसावै† रे।
झूंठ कपट अरु छलबल करि कै
खोटे कर्म कमावै रे ॥ १ ॥
बाजीगर के बांदर सा ज्यों
नाचत नाहिं लजावै रे।
जब लौं तेरी देह पराक्रम
तब लौं सबन सोहावै रे ॥ २ ॥
माय कहै मेरा पूत सपूता
नारी हुकुम चलावै रे

* ठेस। † टूट जाता है।

पल पल पल पल पलटै काया
छिन छिन माहिं घटावै रे ॥ ३ ॥
बालक तरुन होय फिर बूढ़ा
जरा मरन पुनि आवै रे ।
तेल फुलेल सुगंध उबटनो
अंबर अतर लगावै रे ॥ ४ ॥
नाना बिधि सूं पिन्ड संवारै
जरि बरि धूरि समावै रे ।
कोटि जतन सूं बचै न क्योंहीं
देबी देव मनावै रे ॥ ५ ॥
जिनकूं तू अपनो करि जानै
दुख में पास न आवै रे ।
कोई झिड़कै कोइ अनखावै*
कोई नाक चढ़ावै रे ॥ ६ ॥
यह गति देखि कुटँब अपने की
इन में मत उरझावै रे ।
अब हीं जम सूं पाला परि है
कोई नाहिं छुड़ावै रे ॥ ७ ॥
औसर खोवै पर के काजे
अपनो मूल गंवावै रे ।
बिन हरि नाम नहीं छुटकारो
बेद पुरान बतावै रे ॥ ८ ॥

* क्रोध करै ।

चेतन रूप बसै घट अंतर
भर्म सूल* बिसरावै रे।
जो टुक ढूंढ़ खोज करि देखै
सो आपहिं में पावै रे ॥ ९ ॥
जो चाहे चौरासी छूटै
आवा गवन नसावै रे।
चरन दास सुकदेव कहत हैं
सतसंगति मन लावै रे ॥ १० ॥

शब्द १४

॥ राग बरवा ॥

तन का तनिक भरोसा नाहीं
काहे करत गुमाना रे।
ठोकर लगे नेकहूं चलतै
करि हैं प्रान पयाना रे ॥ १ ॥
ऐंठ अकड़ सब छोड़ बावरे
तेज तमक इतराना रे।
रंचक जीवन जगत अचंभो
छिन माहीं मर जाना रे ॥ २ ॥
मैं मैं मैं मैं क्यों करता है
माया माहिं लोभाना रे।
बहु परिवार देखि कै फूलो
मूरख मूढ़ अयाना रे ॥ ३ ॥

* कष्ट।

टेढ़ो चले मिरोरत मूछैं
बिषय बास लिपटाना रे।
आपन कूं ऊंचो करि जानै
माते मद अभिमाना रे। ॥ ४ ॥
पीर फकीर औलिया जोगी
रहैं न राजा राना रे।
धरनि अकास सूर ससि नासैं
तेरो क्या उनमाना* रे॥ ५ ॥
ठाढ़ा घात करै सिर पै जम
ताने तीर कमाना रे।
पलक पैंड़† पै तकि तकि मारै
काल अचानक बाना‡ रे॥ ६ ॥
स्वांस निकसि चढ़ि आंखि जाहिं जब
काया जरै निदाना रे।
तोकूं बांधि नरक लै जै हैं
करि हैं अगिन तपाना रे॥ ७ ॥
अजहूं चेत सीख ले गुरु की
करि ले ठौर ठिकाना रे।
अमर नगर पहिचान सिदौसी§
तब नाहिं आवन जाना रे॥ ८ ॥

* हैसियत। † रास्ता। ‡ तीर। § जल्दी।

हरि की भक्ति साधु की संगति
यह मति बेद पुराना रे।
चरनदास सुकदेव कहत हैं
परम पुरातन* ज्ञाना रे ॥९॥

शब्द १५

॥ राग सोरठ ॥

दम का नहीं भरोसा रे
करिले चलने का सामान।
तन पिंजरे सूं निकस जायगो
पल में पंछी प्रान ॥ १ ॥
चलते फिरते सोवत जागत
करत खान अरु पान।
छिन छिन छिन छिन आयु घटत है
होत देह की हान ॥ २ ॥
माल मुलक औ सुख सम्पति में
क्यों हूवा गलतान।
देखत देखत बिनसि जायगो
मत करु मान गुमान ॥ ३ ॥
कोई रहन न पावै जग में
यह तू निस्चै जान।
अजहूं समुझि छांडु कुटिलाई
मूरख नर अज्ञान ॥ ४ ॥

*प्राचीन, पुराना।

टेरि चितावैं ज्ञान बतावैं
गीता बेद पुरान।
चरनदास सुकदेव कहत हैं
राम नाम उर आन ॥ ५ ॥

शब्द १६

॥ राग काफी ॥

वह बोलता कित गया नगरिया तजि कै।
दस दरवाजे ज्यों के त्यों ही कौन राह गया भजि कै।१।
सूना देस गांव भया सूना सूने घर के बासी।
रूप रंग कछु औरै हूआ देही भई उदासी ॥ २ ॥
साजन थे सो दुरजन हूए तन को बांधि निकारा।
चिता संवारि लिटा करि ता में ऊपर धरा अँगारा।३।
ढह गया महल चुहल थी जा में मिलगयामाटी माहीं।
पुत्र कलित्तर भाई बंधू सब हीं ठोंक जलाहीं ॥४॥
देखत हीं का नाता जग में मुए संग नहिं कोई।
चरनदास सुकदेव कहत हैं हरि बिन मुक्ति न होई।५।

शब्द १७

॥ राग काफी ॥

समझो रे भाई लोगो समझो रे।
अरे ह्यां नहिं रहना, करना अंत पयाना ॥टेक॥
मोह कुटुंब के औसर खोयो, हरि की सुधि बिसराई।
दिन धंधे में रैन नींद में ऐसे आयु गंवाई ॥१॥

आठ पहर की साठौ घरियां सो तौ बिरथा खोई।
छिन इक हरि को नाम न लीन्हो कुसल कहां ते होई।२।
बालक था जब खेलत डोला तरुन भया मद माता
वृद्ध भये चिंता अति उपजी दुख में कछु न सुहाता॥३॥
भूला कहा चेत नर मूरख काल खड़ो सर* साधे†।
बिष को तीर खैंचि कै मारै आय अचानक बांधै॥४॥
झूंठे जग से नेह छोड़ करि सांचो नाम उचारो।
चरनदास सुकदेव कहत हैं अपनो भलो बिचारो॥५॥

शब्द १८

॥ राग काफी ॥

छले सब कनक कामिनि रूप।
सुर असुर अरु जच्छ गंधर्ब, इन्द्र आदिक भूप।१।
सावित्री बस कियो ब्रह्मा, पारबती त्रिपुरारि‡।
करन लीला संग लछमी, हरि लियो औतार॥२॥
रावन से अति बली मारे, मौत जिन बस कीन।
पसु नरन को को चलावै, ये तौ अति आधीन॥३॥
रूप रस में दे धतूरा, मोह फांसी डार।
तप की पूंजी छीनि कै किये, सृंगि रिषि कूं ख्वार§।४।
माया ठगनी ठगे सबहीं, बचे गुरु सुकदेव।
रनजीता कोइ ऊबरो, निजदास चरनन सेव।५।

* बान। † निशाना तके। ‡महादेव। §ख़राब।

शब्द १९

॥ राग बिहाग ॥

रे नर हरि प्रताप ना जाना
तुव कारनसबकुछनितकीन्हासोकरतानपिछाना।१।
जेहिं प्रताप तेरि सुन्दर काया हाथ पांव मुख नासा*।
नैन दिये जा सें सब सूझै होय रहा परकासा ॥२॥
जेहिं प्रताप नाना बिधि भोजन बस्तर भूषन धारै।
वा का नाहिं निहोरा† मानै ताको नाहिं संभारै ॥३॥
जेहिं प्रताप तू भूप भयो है भोग करै मन मानै।
सुख लै वा को भूलि गयो है करि करि बहु अभिमानै।४
अधिकी प्यार करै माता सूं पल पल में सुधि लेवै।
तू तौ पीठि दिये हो नितहीं सुमिरन सुरति न देवै ॥५॥
कृत्यघनो‡ औ नूनहरामी§ न्याय इंसाफ न तेरे।
चरन दास सुकदेव कहत हैं अजहूं चेतु सबेरे ॥६॥

शब्द २०

॥ राग आसावरी ॥

साधो भक्ति नफा करि लीजै
दिन दिन काया छीजै ॥ टेक ॥
मकर‖ तजै तौ मक्का¶ मन** में
कपट तजै तौ कासी।
और तीर्थ सबहीं जग न्हाया
नाहिं छुटी जम फांसी ॥१॥

---

* नाक। † इहसान। ‡ नाशुकरा। § नमक हराम। ‖ कपट।
¶ मुसलमानों का तीर्थ। ** घट, अन्तर।

भाल तले* तिरबेनी राजै
बिरले जन कोइ न्हावै ।
सगुरा† होय सो नित उठि परसै
निगुरा जान न पावै ॥ २ ॥
काया मंदिर में हरि कहिये
बेद पुरान बतावै ।
इत उत भूले लोग फिरत हैं
धोखे कूं सिर नावै ॥ ३ ॥
जंतर टोना मूड़ हिलावन
ता कूं सांच न मानो ।
तजि कै सार असार गह्यो है
ता पर भयो सयानो ॥ ४ ॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं
निज करि मूल गहीजै ।
पार ब्रह्म जिन सृष्टि उपाई‡
ताहि ओरि चित दीजै ॥ ५ ॥

शब्द २१

॥ राग बिलावल ॥

अजब फकीरी साहबी भागन सूं पैये ।
प्रेम लगा जगदीस का कछु और न चहिये ॥१॥
राव रंक कूं सम गिनैं कुछ आसा नाहीं ।
आठ पहर सिमिटे रहैं अपने ही माहीं ॥ २ ॥

* पेशानी के नीचे । † गुरमुख । ‡ पैदा की ।

बैर प्रीत उनके नहीं नहिं बाद बिबादा ।
रूठे से जग में रहैं सुनैं अनहद नादा ॥ ३ ॥
जो बोलैं तौ हरि कथा नहिं मौनै* राखैं ।
मिथ्या करुवा दुरबचन कबहूं नहिं भाखैं ॥ ४ ॥
जीव दया अरु सीलता नख सिख सूं धारैं ।
पांचौ दूतन बसि करैं मन सूं नहिं हारैं ॥ ५ ॥
दुख सुख दोनों के परे आनंद दरसावैं ।
जहां जाय अस्थल करैं माया पवन न जावैं ॥७॥
हरि जन हरि के लाड़िले कोइ लहै न भेवा ।
सुकदेव कही चरनदास सूं कर तिन की सेवा ॥ ८ ॥

शब्द २२

॥ राग बिलावल ॥

ऐसा ही दुरवेस हो जग को बिसरावै ।
ईमान सबूरी सांच सूं सोइ बख़्शा जावै ॥ १ ॥
ज़र† ज़न‡ और ज़मीन कूं दिल में नहिं लावै ।
फ़िक्र फ़क़ीरी को बुरा वह ज़िक्र छुटावै§ ॥ २ ॥
फ़े फ़ाक़े‖ का गुन यही राज़िक़¶ करे यादा ।
क़ाफ़ क़िनाअत** सुख घना आनंद अगाधा ॥ ३ ॥
रे रियाज़त†† बलवान है हरि कूं अपनावै ।
आख़िर को दीदार हीं निस्चै करि पावै ॥ ४ ॥

---

* चुप । † रुपया । ‡ औरत । § अभ्यास के लिये चिंता बड़ा बिघ्न है जिस से सुमिरन नहीं बन पड़ता । ‖ उपास । ¶ अन्नदाता । ** संतोष । †† भजन , बंदगी ।

इजुज़* को धारि रहै रहै सब सूं नीचा ।
सुकदेव कही चरनदास सूं पावै पद ऊंचा ॥ ५ ॥

शब्द २३

॥ राग केदारा ॥

सो मेरो कहो मान रे भाई ।
ज्ञान गुरु को राखि हिय में बंध कटि जाई ॥१॥
बालपन तैं खेलि खोयेगई तरुनाई ।
चेत अजहूं भली बर† है जरा‡ हूं आई ॥ २ ॥
जिन के कारन बिमुख हरि तें फिरत भटकाई ।
कुटुंब सब हीं सुख के लोभी तेरे दुखदाई ॥ ॥
साधु पदवी धारना घर छाडु कुटिलाई ।
बासना तजि भोग जग की होय मुक्ताई ॥ ४ ॥
बहुरि जोनी नाहिं आवै परम पद पाई ।
चरनदास सुकदेव के घर अनंद अधिकाई ॥ ५ ॥

शब्द २४

॥ रेख़ता ॥

दो दिन का जग में जीवना करता है क्यों गुमान
ऐ बेसहूर गीदी टुक राम को पिछान ॥ १ ॥
दावा खुदी का दूर कर अपने तु दिल सेती ।
चलता है अकड़ अकड़ के ज्वानी का जोस§ आन २॥
मुरसिद‖ का ज्ञान समझ के हुसियार हो सिताब¶।
गफलत को छोड़ सुहबत साधों की खूब जान ॥३॥

*आजिजी, दीनता । † बेला, अवसर । ‡ बुढ़ापा । § जोश । ‖ गुरू । ¶ जल्द ।

दौलत का ज़ौक़* ऐसे ज्यों आब† का हुबाब‡ ।
जाता रहैगा छिन में पछतायगा निदान ॥ ४ ॥
दिन रात खोवता है दुनिया के कारबार ।
इक पल भि याद सांइ की करता नहीं अजान ॥५॥
सुकदेव गुरू ज्ञान चरनदास को कहैं ।
भज राम नाम सांचा पद मुक्ति का निधान ॥६॥

शब्द २५

॥ रेखता राग मल्यार ॥

तज के जगत की रीत को कर आपनी तदबीर ।
इस जग भरोसे ख़्वार हो गये साह और अमीर ।।
सुन यार मन यार मन ॥ १ ॥
इक दम करारी है नहीं छिन छिन में फेरै रंग ।
कथहूं तो हैरां सुख घना चल बिचल बेढंग ॥
सुन यार मन यार मन ।। २ ।।
हशमत व शौकत§ थिर नहीं मत देख हो मग़रूर ।
ठहराव ता कूं है नहीं भग्गल बड़ाई धूर ।
सुन यार मन यार मन ॥ ३ ॥
जाहिं स्वांसा सब चले ज्यों आब दर ग़िरबाल‖ ।
याद साहब की करो सुमिर हरि हर हाल ।।
सुन यार मन यार मन ॥ ४ ॥

---

* चाह, लालसा। † पानी । ‡ बुलला । § ऐश्वर्य और दबदबा ।
‖ जैसे चलनी में पानी नहीं ठहरता ।

सुकदेव सतगुरु ने मुझे कायम बताया राम ।
चरनहिं दासा चित धरी जपौ आठौ जाम ।
सुन यार मन यार मन ॥ ५ ॥

शब्द २६

॥ राग बिलावल ॥

भक्ति गरीबी लीजिये तजिये अभिमाना ।
दो दिन जग में जीवना आखिर मरि जाना ॥१॥
पाप पुन्न लेखा लिखैं जम बैठे थाना ।
कहा हिसाब तुम देहुगे जब जाहि दिवाना* ॥२॥
मात पिता कोइ ह्वां नहीं सब हीं बेगाना ।
द्रव्य जहां पहुंचै नहीं नहिं मीत पिछाना ॥ ३ ॥
एक सों एकहिं होयगो ह्वां सांच तुलाना ।
काहू की चालै नहीं छनै दूध अरु पाना† ॥ ४ ॥
साहब की कर बंदगी दे भूखे दाना ।
समुझावैं सुकदेव जी चरनदास अयाना ॥ ५ ॥

शब्द २७

॥ राग काफी ॥

घरी दो में मेला बिछुरै साधो
देखि तमासा चलना ।
जो ह्यां आकर हुए इकट्ठे
तिन सूं बहुरि न मिलना ॥ १ ॥

* कचहरी । † पानी ।

जैसे नाव नदी के ऊपर
बाट बटाऊ आवैं ।
मिल मिल जुदे होयं पल माहीं
आप आप को जावैं ॥ २ ॥
या बारी बिच फूल घनेरे
रंग सुगन्ध सुहावैं ।
लागैं खिलैं फेरि कुम्हिलावैं
झरैं टूटि बिनसावैं ॥ ३ ॥
दारा सुत सम्पति को सुख
ज्यों मोती ओस बिलावैं ।
ह्यांइँ मिलैं और ह्यां नासैं
ताको क्यों पछितावैं ॥ ४ ॥
दै कुछ लै कुछ करिले करनी
रहनी गहनी भारी ।
हरि सूं नेह लगाव आपनो
सो तेरो हितकारी ॥ ५ ॥
सत संगति को लाभ बड़ो है
साध भक्त समुझावैं ।
चरनदास ही राम सुमिर ले
गुरु सुकदेव बतावैं ॥ ६ ॥

शब्द २८

॥ राग भैरो ॥

चेतौ रे नर करो बिचार ।
छल रूपी है यह संसार ॥ १ ॥

सुपना मात पिता सुत बंधू ।
सुपना है सबहीं संबंधू ॥ २ ॥
देखै कहै सुनै सो सुपना
या जग में नाहीं कोइ अपना ॥ ३ ॥
सुपना धरती और अकासा ।
सुपना चंद सूर परकासा ॥ ४ ॥
सुपना जल थल पावक पौन ।
सुपना जोग भोग अरु मौन ॥ ५ ॥
सुपना माया को ब्यौहार ।
सुपना कुल नाता परिवार ॥ ६ ॥
सुपना देस नाम अरु भेस ।
सुपना उत्पति परलय सेस ॥ ७ ॥
सुपना राजा राना राव ।
सुपनै बानिक बन्यौ बनाव॥ ८ ॥
सुपनै लरै मरै अरु भागै ।
सुपनै सोवै सुपनै जागै ॥९॥
सुप्ना है यह सबहीं ठाठ ।
उठी पैंठ जब मुंद गइ हाट ॥१०॥
जो कछु है सो सबहीं सुपना ।
सांचा हरि हरि हरि हरि जपना ॥११॥
क्यों भूला मूरख मस्तान ।
अजहूं समुझि लेहि गुरु ज्ञान ॥१२॥
गफलत छांड़ि भजौ हरि नाम ।
जो चाहै तू निस्चल धाम ॥१३॥

ज्यों सोवत सुपनो दरसाय।
आंखि खुले जबहीं मिटि जाय ॥ १४ ॥
ऐसे ही सब सुपना जान।
अचल अखन्ड रहै भगवान ॥ १५ ॥
सब ठां* ब्रह्म रह्यो भर पूर।
ना अति निकट नहीं बहु दूर ॥ १६ ॥
जो कोइ खोजै सोई पावै।
तत दरसी यह भेद बतावै ॥ १७ ॥
गुरु सुकदेव पुकारि चितावैं।
झूंठ सांच को न्याव चुकावैं ॥ १८ ॥
चरनदास सब सुपना जान।
सदा एक रस ब्रह्म पिछान ॥ १९ ॥

शब्द २९

॥ राग सोरठ ॥

मो कूं भय अति वाही दिन को।
जब यह पंछी माया लोभी त्यागै पिंजरा तन को ॥१॥
सुत दारा के मोह फंसो है लोभ लगो है धन को।
काम क्रोध को कांपा† खायो भयो अधीन सबन को।२।
पांच पहर धंधे में खोया नाम न लेत भजन को।
तीन पहर नारी संग मातो मानत सुख इन्द्रिन को ॥३॥
आपन को ऊंचो करि जानै करि अभिमान बरन‡ को।
सतसंगति के निकट न आवै जो है ठाठ तरन को ॥४॥

* ठिकाने। † लासा जिस्से चिड़िया फंसती है। ‡ जात पांत।

जम किंकर जब आनि गहैंगे तब ना धीर धरन को।
गुरु सुकदेव सहाय करैंगे आसरो दास चरन को ॥५॥

शब्द ३०

॥ राग हेली ॥

यह नहिं अपनी देस हेली* ह्यां नहिं मन को दीजये।
अपने घर को चालिये करि जोगिन को भेस ॥टेक॥
कानन मुद्रा जोग की हेली ज्ञान जटा सिर धारि।
चोला भक्ति सोहावनो धीरज आसन मारि ॥ १ ॥
सेली सत बैराग की हेली सील भभूति रमाय।
जत की सींगी कीजिये बारम्बार बजाय ॥ २ ॥
कर्म जलाय धुनी करो हेली झूमौ दसवें द्वार।
अमल सुधा रस पीजिये बाढ़ै रंग अपार ॥ ३ ॥
इस बाने पिय को मिलौ हेली सदा सुहागिन होय।
गुरु सुकदेव बतावईं चरनदास बनु सोय ॥ ४ ॥

शब्द ३१

॥ राग काफी ॥

गुमराही छोड़ दिवाने मूरख बावरे।
अति दुरलभ नर देह भया
गुरु देव सरन तू आव रे ॥ १ ॥
जग जीवन है निस को सुपनो
अपनो ह्यां कौन बताव रे।
तोहिं पांच पचीस ने घेरि लियो
लख चौरासी भरमाव रे ॥ २ ॥

---

* हे आली, हे सखी।

बीति गई सो बीति गई
अजहूं मन कूं समुझाव रे।
मोह लोभ सूं भागि के त्याग विषय
काम क्रोध कूं धोय बहाव रे॥ ॥
गुरु सुकदेव कहैं सबहीं तजि
मन मोहन सूं मन लाव रे।
चरनदास पुकारि चिताय दियौ
मत चूकै ऐसे दांव रे॥ ४॥

शब्द ३२

॥ राग सोरठ ॥

भाई रे अवधि* बीती जात।
अंजुली जल घटत जैसे, तारे ज्यों परभात† ॥ १ ॥
स्वांस पूंजी गांठि तेरे, सो घटत दिन रात।
साधु संगत पैंठ लागी, ले लगै सोइ हाथ ॥२॥
बड़ो सौदा हरि संभारौ, सुमिर लीजै प्रात।
काम क्रोध दलाल हैं, मतबनिज कर इन साथ ॥३॥
लोभ मोह बजाज ठगिया, लगे हैं तेरि घात।
शब्द गुरु को राखि हिरदय, तो दगा नहिं खात ॥४॥
आपनी चतुराइ बुधि पर, मत फिरै इतरात।
चरनदास सुकदेव चरनन, परस तजि कुल जात ॥५॥

* उमर। † सुबह।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस सीरीज़ की पुस्तकों के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तौ भी सर्व साधारण के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है और जो लोग सबस्क्रैबर अर्थात सीरीज़ के पक्के गाहक होकर २) (दो रुपये) वार्षिक मूल्य पेशगी भेज देंगे उन को डाक महसूल और मनीआर्डर कमिशन भी हर पुस्तक पर न देना पड़ेगा और जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं और जिन के नाम आगे लिखे हैं सब एक साथ लेने से दाम में एक रुपये की कमी करदी जायगी और डाक महसूल भी न लिया जायगा।

अब चरन दास जी की बानी का दूसरा भाग हाथ में लिया गया है।

मनेजर,
बेलवेडियर छापाख़ाना,
इलाहाबाद।

अगस्त सन १९०८

फ़िहरिस्त पुस्तकों की जो छप गई हैं

तुलसीदास साहब (हाथरस के प्रसिद्ध संत) की शब्दावली, ५२० पृष्ठ रायल अठपेजी ... २)

कबीर साहब के चुने हुए भजन, मय उनके जीवन चरित्र के पहिला भाग, १२० पृष्ठ अठपेजी ... ।≡)

कबीर साहब की बानी का दूसरा भाग १६४ पृष्ठ रायल अठपेजी ... ... ॥≡)

पलटू साहब की बानी, १२८ पृष्ठ रायल अठपेजी ॥)

चरनदास जी की बानी पहिला भाग १३६ पृष्ठ अठपेजी ... ... ॥)॥

सहजोबाई की बानी ६४ पृष्ठ अठपेजी ... ।)

दरिया साहब की शब्दावली ६८ पृष्ठ सोलह पेजी ।)

कबीर साहब की अखरावती २३ पृष्ठ सोलह पेजी -)

अहिल्याबाई का जीवन चरित्र भी अंगरेज़ी पद्य में छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संत बानी सीरीज़ की नहीं है) ... =)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

जो लोग दस जिल्द किसी एक पुस्तक की एक साथ मंगावेंगे उन से डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन न लिया जायगा।

अगस्त सन १९०८ ई०

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

चरनदासजी की बानी

दूसरा भाग

जिस में

उन के ग्रंथ के अति मनोहर और हृदयबेधक भजन,

चौपाई, दोहे आदिक, कई प्राचीन हस्त

लिखित पुस्तकों से चुन कर मुख्य २

अंगों और रागों के अनुसार

यथाक्रम रक्खे गये हैं

और

गूढ़ कड़ियों व कड़े या अनूठे शब्दों के अर्थ व

संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं।

[illegible]

[illegible] STEAM PRINTING [illegible],

[illegible]

1908.

सफ़हा १२४] [दाम ।≡)॥

निवेदन

संत बानी सीरीज़ (पुस्तक माला) के छपने की सूचना पहिले दी जा चुकी है और यह जनाया गया है कि इसका अभिप्राय जक्त प्रसिद्ध महात्माओं की बानी वा उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियां हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपीं थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय से देखे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहां तक मिल सके मोल या दाम के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मंगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। जहां तक बन पड़ता है सर्व साधारण के उपकारक शब्द चुनकर और कई लिपियों का मुकाबला करके ठीक रीति से शोध कर संग्रह किये जाते हैं, ऐसा नहीं होता कि दूसरों के छापे हुए ग्रंथों की भांति बेसमझे और जांचे छाप दिये जायं। शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारण की समझ योग्य और अति मनोहर और हृदय बेधक हों जिनसे आंख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरण शुद्ध हो।

दो बरस से यह पुस्तक माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ी हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवनचरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम मात्र नहीं हैं।

॥ अंगों का सूची पत्र ॥

॥ शब्दों की सूची ॥

शब्द	पृष्ठ

क

ग

च

छ

शब्द	पृष्ठ
न	
निरंतर अटल समाधि	१३४
प	
पर आसा है दुखदाई	१६९
परम सखी सोइ साध	१६५
प्रेम नगर के माहिं	१५५
परसिया देस	१२४
पांचन मोहिं लियो बिलमा	१९३
पांच सखी ले लार	१३३
फ	
फिर फिर मूरख जन्म गंवायो	१८४
ब	
ब्रह्म दरियाव नहिं वार पारा	१३०
बिथा मोरी जानत हौ	१६८
भ	
भइ हूं प्रेम में चूर हो	१६४
भाई रे समझ जग ब्योहार	१७४
भागो साथिन हे	१४८
म	
माला फेरे कहा भयो	१७१
मेरे सतगुर खेलत	१५१
मो बिरहिन की बात हेली	१५०
मंगल आरत कीजे प्रात	१६१
मंदिर क्यों त्यागे	१८२

शब्द	पृष्ठ

य

व

स

चरनदासजी की बानी

दूसरा भाग

भेद बानी

शब्द १

॥ होरी राग धनाश्री ॥

गुरु दूती बिन सखी पीव न देखो जाय ।
भावैं तुम जप तप करि देखो भावैं तीरथ न्हाय ॥१॥
पांच सखी पच्चीस सहेली अति चातुर अधिकाय ।
मोहिं अयानी जानि कै मेरो आलम लियो छुकाय ॥२॥
वेद पुरान सबै जो ढूंढ़े स्रुति सुम्रिति सब धाय ।
आनि धर्म औ क्रिया कर्म में दीन्हो मोहिं भरमाय ॥३॥
भटकत भटकत जन्मै हारी चरन सखी गहे आय ।
सुकदेव साहब किरपा करि कै दीन्हो अलख लखाय ॥४॥
देखत हीं सब भ्रम भय भागे सिर सूं गई बलाय ।
चरनदास जब प्रीतम पायो दरसन कियो अघाय ॥५॥

शब्द २

॥ राग केदारा ॥

अवधू सहसदल अब देख ।
सेत रंग जहं पंखरी* छबि अग्र† डोर‡ विसेख ॥१॥

---

* बिचौलिया । † [illegible] । ‡ कंवल की पखरी ।

अमृत बर्षा होत अति झरि तेज पुंज प्रकास ।
नाद अनहद बजत अद्भुत महा ब्रह्म बिलास ।२।
घंट किंकिनि मुरलि बाजै संख धुनि मन मान।
ताल भेरि[१] मृदंग[१] बाजत सिंधु गरजन जान ॥३॥
काल का जहं पहुंच नाहीं अमर पदवी पाव ।
जोति आठौ सिद्धि ठाढ़ी गगन मद्धे आव । ॥४॥
करै गुरु परताप करनी जाय पहुंचै सोय ।
चरनदास सुकदेव किरपा जीव ब्रह्मै होय ॥५॥

शब्द ३

॥ राग बिहागरा ॥

सब जग पांच तत्व को उपासी ॥टेक॥
तुरियातीत सबन सूं न्यारा अबिनासी निर्बासी ॥१॥
कोई पूजै देवल मूरत सो पृथ्वी तत जानो ॥२॥
कोई न्हावै पूजै तीरथ सो जल को तत मानो ॥३॥
अग्निहोत्र अरु सूरज पूजा सो पावक तत देखा ॥४॥
पवन खैंच कुंभक को राखै वायु तत्त को लेखा ॥५॥
कोई तत्व अकास[२] को पूजै ता को ब्रह्म बतावै ॥६॥

बाजों के नाम। [२] चिदाकाश (चैतन्य आकाश) जिस को कोई २ विद्याज्ञानी ब्रह्म मानते हैं ।

जो सब के देखन में आवै सो क्यों अलख कहावै ॥७॥
परम तत्व पांचो से आगे गुरु सुकदेव बखानैं ॥८॥
चरनदास निस्चै मन आनौ बिरला जन कोइ जानै॥९॥

शब्द ४

॥ राग परज ॥

सुधा रस कैसे पैये हो ।
कूप कहां केहि ठौर है कैसे करि लहिये हो ॥१॥
नेजू किन किन गागरी किन भरने वालो हो ।
कैसे खुलै कपाट हीं को ताला ताली हो ॥ २ ॥
कौन समय किस ग्रह विषै अंचवै किन माहीं हो ।
तुमसे जानैं भेद कूं अरु वहुतक नाहीं हो ॥३॥
पीकर किस कारज लगै अरु स्वाद बतावो हो ।
फल या का कहि दीजिये सब खोलि जतावो हो ॥४॥
सुकदेव सूं पूंछन करै यह चरनहिं दासा हो ।
किरपा करिकै कीजिये मेरि पूरन आसा हो ॥५॥

शब्द ५

॥ राग सोरठ ॥

जब गुरु शब्द नगारे बाजैं ॥टेक॥
पांच पचीसौ बड़े मवासी सुनि के डंका भाजैं ॥१॥

*शब्द चैतन्य अर्थात वह जौहर जिसको सतों ने शब्द करके पुकारा है। लेजुर, रज्जू, रस्सी। तुम्हारे समान। ज़बरदस्त।

दृढ़ दस्तक ले ज्ञान सजावल जाय नगर के माहीं ॥२॥
हरि के धाम भजन कर मांगे चित्त चौधरी पाहीं ॥३॥
कानूंगोय लोभ के खोटे छल बल पाहीं झूठे ॥४॥
काम किसान औ मोह मुकद्दम सबै बांधि कर लूटे ॥५॥
तृस्ना आमिल मद को मातो पकरि गांव सूं काढ़ै ॥६॥
मन राजा को निस्चल झंडा प्रेम प्रीत हित गाड़ै ॥७॥
सुबुधि दिवान सील को बकसी जत को हाकिम भारी ॥८॥
धर्म कर्म संतोष सिपाही जाके अज्ञाकारी ॥९॥
सांच करिन्दा औ पटवारी धीरज नेम बिचारै ॥१०॥
दया छिमा औ बड़ी दीनता पूरी जमा संभारै ॥११॥
मगन होय चौकस* कन† धरि कै सुमति जेवरी‡ आपै ॥१२॥
दरसन द्रव्य खजाने को पूरन बांछा पावै आपै ॥१३॥
श्री सुकदेव अमल करि गाढ़ो सूच्छम देस नसावै ॥१४॥
चरनदास हूं तिन को नायब तन परवाना पावै ॥१५॥

शब्द ३

॥ राग करखा ॥

परसिया देस जहं भेस नाहीं।
घाट निस लगि जहां चाह सूझै नहीं
सुरति के चांदने संत जाहीं ॥१॥

*महसूल, लगान। †खेत की पैदावार का कूत या तख़मीना।
‡डोरी।

चंद खोड़स दिपैं गंग उलटी वहै
सुखमना सेज पर लम्प दमकै।
तासु के ऊपरै अर्गा को ताल है
झिलमिली जोत परकास चमकै ॥ २ ॥
चारि जोजन परै सून्य अस्थान है
तेज अति सून्य परलोक राजै।
द्वार पच्छिम धसे मेरु हीं दन्ड हो
उलट करि आय छाजे विराजै ॥ ३ ॥
नूर जगमग करै खेल आगाध है
वेद हूं कहि नहिं पार पावैं।
गुरुमुखी जाइ हैं अमर पद पाइ हैं
सीस का लोभ तजि पंथ धावैं ॥ ४ ॥
तीन सुन छेदि रनजीत चौथे वसै
जन्म औ मरन फिर नाहिं होई।
चरनदास करि बास सुकदेव बकसीस सूं
पूज बेगम पुरी अमर सोई ॥ ५ ॥

शब्द ७

॥ राग सोरठ ॥

गुरु बिन वह घर कौन दिखावै।
जेहिं घर अग्नि जलै जल माहीं यह अचरज दरसावै॥१

ओति।

काम धेनु जहं ठाढ़ी सो। हैं नैन हाथ बिन दुहना।
घाये* दूधा थोड़ा देवै भूखे देवै दूना ॥ २ ॥
पीवैं जन जगदीस पियारे गुरुगम बहुत अघावैं।
मूरख कायर और अजोगी सो ये नेक न पावैं ॥३॥
अमृत अंचवै वा पद पहुंचै महा तेज को धारै।
होय अमर निस्चल ह्वै बैठै आवा गवन निवारै ॥४॥
भेद छिपावै तौ फल पावै काहू से नहिं कहिये।
वह अद्भुत है ठौर अनूठी बड़ भागन सूं लहिये ॥५॥
या साधन के बहु रखवारे ऋषि मुनि देवत† जोगी।
करन न देवैं बुधि हरि लेवैं होय न गोरस भोगी ॥६॥
लोभी हलके को नहिं दीजै कहैं सुकदेव गोसाईं।
चरनदास त्यागी वैरागी ताहि देहु गहि बांहीं ॥७॥

शब्द ८

॥ राग सोरठ ॥

गुरु गम मगन भया मन मेरा।
गगन मंडल में निज घर कीन्हो पंच विषै नहिं घेरा ॥१॥
प्यास छुधा निद्रा नहिं ब्यापी अमृत अंचवन कीन्हा।
छूटी आस बास नहिं कोई जग में चित नहिं दीन्हा ॥२॥

*अघाये। †देवता।

दरसी जोति परम सुख पायो सब ही कर्म जलावै ।
पाप पुन्न दोऊ भय नाहीं जन्म मरन बिसरावै ॥३॥
अनहद आनंद अति उपजावै कहि न सकूं गति सारी ।
अति ललचावै फिर नहिं आवै लगी अलख सूं यारी ।४।
हंस कमल दल सतगुरु राजैं रुचि रुचि दरसन पाऊं ।
कहि सुकदेव चरनहीं दासा सब बिधि तोहि बताऊं ।५।

शब्द ९

॥ राग रामकली ॥

वह अच्छर कोइ बिरला पावै ।
जा अच्छर के लाग न बिंदी सतगुरु सैनहिं सैन बतावै।१
छर ही नाद बेद अरु पंडित छर ज्ञानी अज्ञानी ।
बांचन अच्छर छर ही जानो छरही चारौ बानी॥२॥
ब्रह्मा सेस महेसर छर ही छर ही त्रैगुन माया ।
छर ही सहित लिये औतारा छर हूं तक जहं माया ।३।
पांचो मुद्रा जोग जुक्ति छर छर ही लगै समाधा।
आठौ सिद्धि मुक्ति फल छरही छर ही तन मन साधा४
रबि ससि तारा मंडल छरही छरही धरनि अकासा ।
छर ही नीर पवन अरु पावक नर्क स्वर्ग छर बासा।५
छर ही उतपति परलय छर ही छर ही जानन हारा ।
चरनदास सुकदेव बतावैं नि:अच्छर है सब सूं न्यारा ॥६॥

शब्द १०

॥ राग धनाश्री ॥

जो जन अनहद ध्यान धरै ॥ टेक ॥
पांचों निरबल चंचल थाके जोबन हा जु मरै ॥ १ ॥
सोधै मूलबंध दै राखै आसन सिद्ध करै ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुरति लाय ठहरावै कुंभक पवन भरै ॥ ३ ॥
घन गरजै अरु बिजुली चमकै कौतुक गगन धरै ॥ ४ ॥
बहुत भांति जहं बाजन बाजैं सुनि सुनि सिंधु अरै* ॥५॥
सहज सहज में हो परकासा बाधा सकल हरै† ॥ ६ ॥
जग की आस बास सब टूटै ममता मोह जरै ॥ ७ ॥
सून्य सिखर पर आपा बिसरै काल सूं नाहिं डरै ॥८॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं सब गुन ध्यान धरै ॥ ९ ॥

शब्द ११

॥ राग धनाश्री ॥

जब से अनहद घोर सुनी ।
इन्द्री थकित गलित मन हूवा आसा सकल भुनी ॥१॥
घूमत नैन सिथिल भइ काया अमल जु सुरत सनी ।
रोम रोम आनंद उपज करि आलस सहज भनी ॥२॥

*ऐसे मधुर बाजे कि जिनकी धुनि से समुद्र की लहरें थिर हो जायं । †दूर हो ।

मतवारे ज्यों शब्द समाये अंतर भींज कनी ।
करम भरम के बंधन छूटे दुविधा बिपति हनी ॥३॥
आपा बिसरि जक्त कूं बिसरो किन रहिं पांच जनी ।
लोक भोग सुधि रही न कोई भूले ज्ञानि गुनी ॥ ४ ॥
हो तहँ लीन चरनहीं दासा कहै सुकदेव मुनी ।
ऐसा ध्यान भाग सूं पैये चढ़ि रहै सिखर अनी ॥५॥

शब्द १२

॥ राग धनाश्री ॥

सहज गति ज्ञान समाधि लगाई ।
रूप नाम जहँ किरिया छूटी, हौं मैं रहन न पाई ॥१॥
बिन आसन बिन संजम साधन, परमातम सुधि पाई ।
सिव सक्ती मिलि एक भये हैं, मन माया निहुराई[1] ॥२॥
मगन रहौं दुख सुख दोउ मेटे, चाह अचाह मिटाई ।
जीवन मरन एक सूं लागै, जब तें आप गँवाई ॥३॥
मैं नाहीं नख सिख हरि राजैं, आदि अन्त मध्याई ।
संका कर्म कौन कूं लागै, का की होय मुक्ताई ॥४॥
सकल आपदा ब्याधि टरी सब, दुई कहां मो माहीं ।
सब हमहीं रामै नहिं पैये सब रामै हम नाहीं ॥५॥
नित आनन्द काल भय नाहीं, गुरु सुकदेव समाधी ।
चरनदास निज रूप समाने, यह तौ समझ अगाधी ॥६॥

* नोक । [1] झुके, ज़ेर हुए ।

शब्द १३

॥ राग करखा ॥

ब्रह्म दरियाव नहिं वार पारा ।
आदि अरु मध्य कहुं अंत सूझै नहीं
नेत ही नेत बेदन पुकारा ॥ १ ॥
मूल परकिर्त सी बहुत लहरैं उठैं
सकै को पाय गुन हैं अपारा ।
बिरंच* महादेव से मीन बहुतै जहां
होयं परगट कभी गोत मारा ॥ २ ॥
तासु में बुदबुदे अंड उपजैं मिटैं
गुरु दई दृष्टि जा सूं निहारा ।
छका छबि देखि कै अतिथि का भेख करि
जगे जब भाग निरखी बहारा ॥३॥
मरजिया† पैठिया थाह पाई नहीं
थका हुाहीं रहा फिर न आया ।
गया था लाभ कूं मूल खोया सबै
भया आस्चर्ज आपन गंवाया ॥ ४ ॥

* ब्रह्मा । † जो मोती निकालने को समुद्र में डुबकी लगाते हैं।

पाले बिन सिद्धि अरु निरा आनंद है
आप ही आप हो निरअधारा ।
चरनदास सुकदेव दोऊ तहां रल मिले,
तुरत हीं मिटि गया खोज सारा ॥ ५ ॥

शब्द १४

॥ राग सोठना ॥

सुन सुरत रंगीली हो कि हरि सा यार करौ ॥टेक॥
जब छूटै बिघन बिकार कि भौजल तुरत तरौ ॥१॥
तुम त्रैगुन छैल बिसारि गगन में ध्यान धरौ ॥२॥
रस अमृत पीवौ हो कि बिषया सकल हरौ ॥ ३ ॥
करि सील संतोष सिंगार छिमा की मांग भरौ ॥४॥
अब पांचो तजि लगवार अमर घर पुरुष बरो ॥५॥
कहैं चरनदास गुरु देखि पिया के पांव परो ॥ ६ ॥

शब्द १५

॥ राग सोठना ॥

टुक रंग महल में आव कि निरगुन सेज बिछी ।
जहं पवन गवन नहि होय जहां जा सुरति बसी ॥१॥

रोक, परदा ।। छैल चिकनिया ।

जहं त्रैगुन बिन निर्बान जहां नहिं सूर ससी ।
जहं हिल मिलि कै सुख मान मुक्तिकी होय हंसी॥२॥
जहं पिय प्यारी मिलि एक कि आसा दुई नसी ॥
जहं चरनदास गलतान कि सोभा अधिक लसी॥३॥

शब्द १६

॥ राग सोरठ॥

ऐसा देस दिवाना रे लोगो जाय सो माता होय ।
बिन मदिरा मतवारे झूमैं जन्म मरन दुख खोय॥१॥
कोटि चंद सूरज उजियारो रवि ससि पहुंचत नाहीं।
बिना सीप मोती अनमोलक बहु दामिनि दमकाहीं॥२॥
बिन ऋतु फूले फूल रहत हैं अमृत रस फल पागे ।
पवन गवन बिन पवन बहत है बिन बादर झरि लागे३
अनहद शब्द भंवर गुंजारै संख पखावज बाजैं ।
ताल घंट मुरली घनघोरा भेरि दमामे गाजैं ॥४॥
सिद्धि गर्जना अति हीं भारी घुंघुरू गति झनकारैं ।
रंभा नृत्य करैं बिन पग सूं बिन पायल ठनकारैं॥५॥
गुरु सुकदेव करैं जब किरपा ऐसो नगर दिखावैं ।
चरनदास वा पग के परसे आवा गवन नसावैं ॥६॥

शब्द १७

॥ राग होली ॥

पांच सखी ललार हेली काया महल पग धारिये ॥टेक॥
जोग जुक्ति डोला करौ हेली प्रान अपार कहार ॥१॥
कुज कुंज सब देखिये हेली नाना बाग बहार ॥२॥
मान सरोवर न्हाइये हेली सदा बसन्त निहार ॥३॥
बिना सीप मोती बने हेली बिन गूंद फूलन हार ॥४
बिन दामिन चमकार है हेली बिन सूरज उंजियार ॥५॥
अनहद उत बाजे बजैं हेली अचरज बहुतक ख्याल ॥६॥
तेज पुंज की सेज पै हेली कागा होहिं मराल ॥ ७ ॥
श्री सुकदेव कृपा करैं हेली जब पावै यह भेद ॥८॥
चरनदास पिय सूं मिलै हेली छूटैं जग के खेद ॥ ९ ॥

शब्द १८

॥ राग मलार ।

साधो समुझो अलख अरूपा ।
गुप्त सूं गुप्त प्रगट सूं परगट, ऐसा है निज रूपा ॥१॥
भींजै नहीं नीर सूं वह तत, ताहि सस्त्र नहिं काटै ।
छोटा मोटा होय न कबहूं, नहीं घटै नहिं बाढ़ै ॥२॥
पवन कभी नहिं सोखै ता कूं, पावक तेज न जारै ।
सीत उस्न दुख सुख नहिं पहुंचै, ना वह मरै न मारै ॥३॥

इक रस चेतन अचरज दरसै, जा सम तुल नहिं कोई।
ता पटतर कोइ दृष्टि न आवै, वही वही पुनि वोई॥४॥
भीतर बाहर पूरि रह्यो है, अन्ड पिन्ड सूं न्यारा।
सुकदेवा गुरु भेद बतायौ, चरनहिं दासा वारा॥ ५॥

शब्द १९

॥ राग धनाश्री ॥

निरंतर अटल समाधि लगाई।
ऐसी लगी टरै नहिं कबहूं करना आस छुटाई॥१॥
काकौ जप तप ध्यान कौन कूं कौन करै अब पूजा।
कियो विचार नेक नहिं निकसै हरि बिन और न दूजा॥२॥
मुद्रा पांच सहज गति साधी आलस आस नसोई।
सब रस भूल ब्रह्म जब सोधा आप विसर्जन होई॥३॥
भूलो बंध मुक्ति गति साधन ज्ञान विवेक भुलाना।
आतम अरु परमातम भूला मन भयो तत गलताना ४
अचल समाधि अंत नहिं ता को गुरु सुकदेव बताई।
चरनदास की खोज न पैये सागर लहरि समाई॥५॥

शब्द २०

॥ राग केदारा व सोरठ।

सो लखि हम निर्गुन झरि लाई।
जहां न बेद कितेब पहुंचै नहीं ठकुराई॥ १ ॥

नाश हुई।

चारि बरन आस्रम नाहीं नहीं कर्मना काई ।
नरक अरु बैकुंठ नाहीं नहीं तन ताई ॥२॥
प्रेम अरु जहं नेम नाहीं लगन ना लाई ।
आठ अंग जहं जोग नाहीं नहीं सिद्धाई ॥३॥
आदि अरु जहं अंत नाहीं नहीं मध्याई ।
एक ब्रह्म अखन्ड अविचल माया ना राई ।४॥
ज्ञान अरु अज्ञान नाहीं नहीं मुक्ताई ।
चरनदास सुकदेव सम* तहं दुई जरि जाई ॥५॥

शब्द २१

॥ राग हिंडोलना ॥

झूलत हरि जन संत भक्ति हिंडोलने ॥ टेक ॥
नाम के दृढ़ खम्भ रोपे प्रेम डोरी लाय ।
टेक पटरी बैठ सजनी अति अनंद बढ़ाय ॥ १ ॥
ध्यान के जहं मेघ बरसैं होय उमंग हुलास ।
गुरुमुखी जहं समझ भीजैं पूर्न हरि के दास ॥ २ ॥
बुधि विबेक बिचारि गावैं सखी सहेली साथ ।
अगम लीला रटैं सजनी जहां ब्रह्म बिलास ॥ ३ ॥
परम गुरु श्री जनक झूलैं झूलैं गुरु सुकदेव ।
चरनदास सखि सदा झूलैं कोइ न पावै भेव ॥ ४ ॥

*बर बर, एक ।

शब्द २२

॥ राग करखा ॥

गुरु दया जोग यहि बिधि कमायो॥ टेक ॥

मूल कूं सोधि संकोच करि संखिनी
खैंचि आपान उलटो चलायो ॥ १ ॥
बंध पर बंध जब बंध तीनो लगैं
पवन भइ थकित नभ गर्जि आयो ॥२॥
द्वादसा पलट करि सुरति दो दल धरी
दसो परकार अनहद बजायो ॥ ३ ॥
रोक जब नवन कूं द्वार दसवें चढ़ी
सून्य के तख़्त अनँद बढ़ायो ॥ ४ ॥
सहल दल कमल को रूप अद्भुत महा
अमी रस उमंग आ झरि लगायो ॥५॥
तेज अति पुंज पर लोक जहं जगमगे
कोटि छबि भानु परकास लायो ॥ ६ ॥
उनमुनी और चित हेत करि बसि रहे
देखि निज रूप मनुवां मिलायो ॥ ७ ॥
काल अरु ज्वाल जग व्याधि सब मिटि गई
जीव सूं ब्रह्म गति बेगि पायो ॥ ८ ॥
चरनदास रनजीत सुकदेव की दया सूं
अभय पद परसि अवगति समायो॥ ९ ॥

शब्द २३

॥ राग सारंग व बिलावल व सोरठ ॥

साधो अजब नगर अधिकाई ।
औघट घाट बाट जहं बांकी उस मारग हम जाई ।१।
स्रवन बिना बहु बानी सुनिये बिन जिभ्या स्वर गावैं ।
बिना नैन जहं अचरज दीखै बिना अंग लिपटावैं ।२।
बिना नासिका बास पुष्प की बिना पांव गिर चढ़िया ।
बिना हाथ जहं मिलो धाय के बिन पाध* जहं पढ़िया।३।
ऐसा घर बड़भागी पाया पहिरि गुरू का बाना ।
निस्चल ह्वै के आसा मारी मिटि गयो आवन जाना।४।
गुरु सुकदेव करी जब किरपा अनुभौ बुद्धि प्रकासी ।
चौथे पद में आनंद भारी चरनदास जहं बासी ॥५॥

शब्द २४

॥ राग सोठना ॥

टुक निर्गुन छैला सूं, कि नेह लगाव री ।
जा को अजर अमर है देस, महल बेगमपुर री ॥१॥
जहं सदा सोहागिन होय, पिया सूं मिलि रहु री ।
जहं आवा गवन न होय, मुक्ति चेरी तेरी ॥२॥
कहैं चरनदास गुरु मिले, सोई ह्वां रहु बौरी ।
तब सुख सागर के बीच, कलहरी[1] ह्वै रहु री ॥ ३ ॥

*पहाड़ । [1]कलवारिन ।

शब्द २५

॥ राग सीठना ॥

तू सुन हे लंगर बौरी ॥ टेक ॥

तू पांचौ घेरि पचीसो घेरी विषै बासना की है चेरी ।
बारी बारी दौरी ॥१॥

तैं पिय भूली चौरासी डोली अंग अंग के सुख में फूली ।
माया लई ठौरी ॥ २ ॥

तैं काम क्रोध सूं नेह लगायो मनमानी सब जग भरमायो
मोह यार पाकड़ी रे ॥ ३ ॥

चरनदास सुकदेव बतावैं निर्गुन छैला तोहिं मिलावैं ।
जो टुक चेतन होरी ॥ ४ ॥

शब्द २६

॥ राग हेली ॥

वह घर कैसा होय हेली जित के गये न बाहुरे ।
अमरपुरी जा सूं कहैं हेली मुक्ति धाम है सोय ॥टेक॥
बिकट घाट वा ठौर की हेली सठ नहिं पावैं पंथ ।
गुरुमुख ज्ञानी जाइ हैं हरि सूं सन्मुख संत ॥१॥
त्रैगुन मति पहुंचै नहिं हेली छहौं ऋतू ह्वां नाहिं ।
रवि ससि दोऊ ह्वां नहीं नहीं धूप नहिं छांहिं ॥२॥

बार बार । निवास, ठिकाना । लौटे ।

अवधि नहीं काया नहिं हेली कलह कलेस न काल ।
संसय सोक न पाइये नहिं माया कूं जाल ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया करैं हेली चरनदास लखै देस ।
बिन सतगुरु नहिं पाइये जो नाना कर भेस ॥ ४ ॥

शब्द २७

॥ राग सोरठ ॥

हो अवगति जो जानै सोई जानै ।
सब की दृष्टि परे अबिनासी कोइ कोइ जन पहिचानै ॥१॥
रेख जहां नहिं लिख सकै रे उहरै ना ह्वां राई ।
चीत्त चितेरा ना सकै रे पुलाक लिखा न जाई ॥२॥
सेत स्याम नहिं राता रे पीरा हरा भांति नहिं होई ।
अति आसूंख अदृष्ट अकथ है कहि सुनि सकै न कोई ॥३॥
सर्वस में अरु सब देसन में सर्ब अंग सब माहीं ।
फटै जलै भीजै नाहिं डूबै उड़ै चलै वह नाहीं ॥४॥
नहिं गाढ़ा नहिं झीना कहिये नहिं सूच्छम नहिं भारी ।
बाला तरुना बूढ़ा नाहीं रे वह पुरुष न नारी ॥५॥
नहीं दूर नहिं निकट हमारे नहीं प्रगट नहिं गूझै ।
ज्ञान आंख की पलक उघारो अब देखो रे सूझै ॥६॥
वा सूं उतपति परलय होई वह दोऊ नें न्यारा ।
चरनदास सुकदेव दया में सोई तत्त निहार ॥७॥

* चित्त से चिंतवन करना । † नाना रंग का । ‡ छिपा हुआ ।

शब्द २८

राग ईमन

सखी री हिलि मिलि रहिया पीव ।टेक॥

पुष्प मध्य ज्यों गंध बिराजै पिन्ड माहिं ज्यों जीव।१।
जैसे अग्नि काठ के अंतर लाली है मेंहदीव ॥ २ ॥
माटी में भांड़े हैं तैसे दूध मध्य ज्यों घीव ॥ ३ ॥
सुकदेवा गुरु तिमिर नसायो ज्ञान दियो कर दीव*।।४॥
चरनदास कहैं परगट दरसो अमर अखंडित सीव†।५।

शब्द २९

राग बिलास बिहागरा

गुरू बिन कौन डुबोवन हारा ।

ब्रह्म समुद्र में जो कोइ बूड़ो छुटि गये सकल बिकारा।१।
सिंधु अथाह अगाध अचल है जा को वार न पारा।
वा की लहरि मिटत वाही में कौन तरै को तारा ॥२॥
त्रैगुन रहित सदा हीं चेतन ना काहू उनहारा‡ ।
निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा ॥३॥
अकर्ता§ अलख अरूप अनादी तिमिर नहीं उजियारा ।
ता में अन्ड दिपत|| ऐसे करि ज्यों जल मद्धे तारा ॥४॥
काल जाल भय भूती नाहीं तहां नहीं भ्रम भारा ।
चरनदास सुकदेव दया सूं बूड़ि गये ही पारा ।५।

* ज्ञान का हाथ में दीपक दिया । † स्वामी । ‡ पटतर, मिस्ल ।
§ अकर्ता । || चमकता है ।

शब्द ३०

॥ राग धनाश्री व बिलावल व सोरठ ॥

साधो भाई यह जग यों सत नाहीं ।
मीन पहार समुद बिच मिरगा खेत अकासे माहीं ।१।
जल की पोट कोट धूवां को अखिल ब्रह्म को तीरं ।
बांझ को पूत सींग सस्सा को मृग तृस्ना को नीरं ।२।
स्वप्न को भूप द्रव्य स्वपने को अरु जंगल को द्वारं ।
गनिका सील नाच भूतन को नारि सों ब्याहन नारं ।३।
मावस को ससि रैन को सूरज दूध नरन की छानी ।
यह सब कहनि कहावनि देखी चींटी ले भागी हाथी ।४।
ऐसेहि झूंठ जगत सच नाहीं भेद बिचारो पायो ।
चरनदास सुकदेव दया सूं सांचहि सांच मिलायो ॥५॥

शब्द ३१

॥ राग धनाश्री ॥

कोइ जानै संत सुजान उलटे भेद कूं ॥ टेक ॥
बृच्छ चढ़ो माली के ऊपर धरती चढ़ी अकास ।
नारि पुरुष बिपरीत भये हैं देखत आवै हांस ॥१॥
बैल चढ़ो संकर के ऊपर हंस ब्रह्म के सीस ।
सिंह चढ़ो देबी के ऊपर गुरुहीं की बक्सीस ॥२॥

नाव चढ़ी केवट की ऊपर सुत को गोदी माय ।
जो तू भेदी अमर नगर को तौ तू अर्थ बताय ॥३॥
चरनदास सुकदेव सहाई अब कह करिहै काल ।
बांबी उलटि सर्प में पैठी जब सूं भये निहाल ॥४॥

शब्द ३२

॥ राग मलार ॥

चहुं दिस झिलमिल झलक निहारी ।
आगे पीछे दहिने बायें तल ऊपर उंजियारी ॥ १ ॥
दृष्टि पलक त्रिकुटी ह्वै देखै आसन पद्म लगावै ।
संजम साधै दृढ़ आगधै जब ऐसी सिधि पावै॥ २ ॥
बिन दामिनि चमकार बहुत हीं सीप बिना लर मोती ।
दीप मालिका बहु दरसावैं जगमग जगमग जोती ॥३॥
ध्यान फलै तब नभ के माहीं पूरन हो गति सारी ।
चांद घने सूरज अनकी* ज्यों सूभर† भरिया भारी ।४।
यह तौ ध्यान प्रतच्छ बतायौ सरधा होय तो कीजै ।
कहि सुकदेव चरन हीं दासा सो हम सूं सुनि लीजै ॥५॥

शब्द ३३

॥ राग सोरठ ॥

हमारे गुरु मारग बतलाया हो ।
आनि देव की सेवा त्यागी अज+ अबिनासी ध्याया हो१

---

*अनेक । † बालू के कण जो धूप में चमकते हैं । +अजर, अजन्मा ।

हरि पूरन परस्यों निस्चै सूं छांड़यों झूंठी माया हो ।
इक रस आतम नित हों जानौं छिन भंगी है काया हो ।२।
चाहौ मुक्ति करौ तन किरिया भर्म अधिक भरमाया हो ।
बो करि पेड़ बबूल सूल के आम कहो किन पाया हो ॥३॥
अपना खोज किया नहिं कबहूं जल पाहन भटकाया हो ।
जैसे फल सेवत सेमर को कीर१ अधिक पछताया हो ॥४॥
ज्ञानपदारथकठिनमहानिधिबिनभेदोकिनपायाहो ।
चरनदास घट सोहं सोहं तामें उलटि समाया हो ॥५॥

शब्द ३४

॥ राग बिहागरा ॥

गुप्त मते की बात हेलो जानै सोइ जानै ।
पसू ज्ञान इजमत२ कूं देखो अन भुस एकै ठानै ॥१॥
चलनी की गति सबकी मति है मन में अधिक सयानै ।
गहि असार सार कूं डारै निस्चल बुधि नाहिं आनै ॥२॥
हूं३ गूंगो जग को नहिं सूझै सैन नहीं कोइ मानै ।
कासूं कहूं अरु को सुनै सजनो कहूं तो को पहिचानै ॥३॥
सत्य ब्रह्म को जानत नाहीं मुरख मुग्ध अयानै ।
चरनदास समुझत नहिं भोंदू फिर फिर झगरो ठानै ४

तन कृपा से मुक्ति नहीं हो सकती । १तोता । २करामात ।
३गूंगे का " हूं " करना ।

शब्द ३५

॥ राग हिंडोलना ॥

झूलत गुरुमुख संत अलख हिंडोलने ॥टेक॥
नाम त्रिकुटी खम्भ रोपे सोहं डोरी लाय ।
सुरति पटही* बैठि सजनी छिन आवै छिन जाय ॥१॥
मन मनसा दोउ लगे झूलन धारना ले संग ।
ध्यान झोंके देत सजनी भलो लागो रंग ॥ २ ॥
सखि सहेली सिमिटि आईं पेंग पेंगन नेह ।
बूंद आनंद सब भिगोई सघन बरसै मेह ॥ ३ ॥
चार बानी खड़ी गावैं महा रंगीली नार ।
मुक्ति चारौ मालिनी गुहि गुहि लावैं हार ॥४॥
त्रिगुन बकुला उड़न लागे देखि बादल लय† ।
संग पिय के सदा झूलैं ता तें लगै न भय ॥ ५ ॥
चरनदास कूं नित झुलावैं ईस झुलैं सुकदेव ।
सिव सनकादिक नारद झूलैं करि करि गुरु की सेव॥६॥

---

* पटरा । †समा ।

सावन व हिंडोला झूला

शब्द १

॥ राग हिंडोलना हेली ॥

छूटे काल जंजाल हेली, चरन कमल के आसरे।
भर्म भूत सबहीं छुटे री हेली सौन* नछत्तर नाल†। टेक।
जंतर मंतर सब छुटे री हेली छूटे बीर मसान।
मूठ डीठ‡ अब ना लगै री नहीं घात को बान ॥१॥
सनीचर बल अब ना चलै री हेली नहीं राहु अरु केतु।
मंगल बिरस्पति ना दहैं री नहीं भोग उन देतु ॥२॥
जोति बाल परसूं नहीं री हेली मानूं न देवी देव।
सतगुरु देव बताइया सांचो झूंठो भेव ॥ ३ ॥
अरसठ तीरथ ना फिरूं री हेली पूज न पाथर नीर।
स्री सुकदेव छुटाइया जन्म मरन की पीर ॥ ४ ॥
निस्चल होइ हरि को भई री हेली सुमिरूं निर्मल नांव।
अनन्य भक्ति दृढ़ सूं गही मारग आन न जांव ॥५॥
गोबिंद तजि औरन भजै री हेली जाके मुखड़े छार§।
चरनदास यों कहत हैं राम उतारै पार ॥ ६ ॥

---

* स्वन। † साथ। ‡ जादू टोना। § धूल।

शब्द २

॥ राग सावन ॥

सखि सजनी हे तेरो पिया तेरे पास।
अरी बौरी इत उत भटकी क्यों फिरै जी ॥१॥
सखि सजनी हे सुरति निरति करि देख।
अरी बौरी अपने महल रंग मानिये जी ॥ २ ॥
सखि सजनी हे मान अहं सब खोय।
अरी बौरी यह जोबन थिर ना रहै जी ॥ ३ ॥
सखि सजनी हे बालम सन्मुख होय।
अरी बौरी पिछली अर* सब खोइये जी ॥ ४ ॥
सखि सजनी हे पिया मिलन को साज।
अरी बौरी न्हाय सिंगार बनाइये जी ॥ ५ ॥
सखि सजनी हे चित की चौकी धराय।
अरी बौरी नाइन सुमति बुलाइये जी ॥ ६ ॥
सखि सजनी हे सुचरचा अगिन जराव।
अरी बौरी नीर गरम करि न्हाइये जी ॥ ७ ॥
सखि सजनी हे जोग उबटनो लगाव।
अरी बौरी कर्म को मैल उतारिये जी ॥ ८ ॥
सखि सजनी हे करनी कंगही बहाव।
अरी बौरी बेनी मुक्ता† गुंधाइये जी ॥ ९ ॥

---

* अड़, टेक। †मोती।

सखि सजनी हे गुरु के चरन चित लाव ।
अरी बौरी सत संगति पग लागिये जी ॥ १० ॥
सखि सजनी हे लाज सिंदूर निकासि ।
अरी बौरी खोलि सिंगार बनाइये जी ॥ ११ ॥
सखि सजनी हे नवधा भूषन धारि ।
अरी बौरी जा सूं पिया रिझाइये जी ॥ १२ ॥
सखि सजनी हे प्रीत को काजल आंज ।
अरी बौरी प्रेम की मांग संवारिये जी ॥ १३ ॥
सखि सजनी हे बुधि बेसर सजि लेहि ।
अरी बौरी पान बिचारि चबाइये जी ॥ १४ ॥
सखि सजनी हे दया की मेंहदी लगाव ।
अरी बौरी सांचो रंग ना उतरै जी ॥ १५ ॥
सखि सजनी हे धीरज चूनरि लाल ।
अरी बौरी नख सिख सील सिंगारिये जी ॥ १६ ॥
सखि सजनी हे काम क्रोध तजि लोभ ।
अरी बौरी मोह पीहर सूं जिन करो जी ॥ १७ ॥
सखि सजनी हे पांच सहेली साथ ।
अरी बौरी इन कूं संग न लीजिये जी ॥ १८ ॥
सखि सजनी हे चलौ पिया के पास ।
अरी बौरी सुखमन बाट सोहावनी जी ॥ १९ ॥

नैहर, मायका ।

सखि सजनी हे गगन मंडल पग धार ।
अरी बौरी पीव मिलै दुख सब हरै जी ॥ २० ॥
सखि सजनी हे निर्गुन सेज बिछाव ।
अरी बौरी हिलि मिलि कै रंग मानिये जी ॥ २१ ॥
सखि सजनी हे पावैगी अटल सोहाग ।
अरी बौरी अजर अमर घर निर्मल जी ॥ २२ ॥
सखि सजनी हे गुरु सुकदेव असीस ।
अरी बौरी चरनदास मनसा फलै जी ॥ २३ ॥

शब्द ३

॥ राग सावन ॥

भागौ साथिन हे यहि झूले मत झूल ।
अरी हेलो भर्म भूमि या देस की जी ॥ टेक ॥
भागौ साथिन हे बदरा* माया को रूप ।
अरी हेली कुमति बूंद जित तित परैं जी ॥ १ ॥
भगो साथिन हे कर्म बृच्छ की बेलि ।
अरी हेली वारी फल लगे बिष भरे जी ॥ २ ॥
भागौ साथिन हे दुर्मति हरियर दूब ।
अरी हेली छल रूपी फूले फूल हैं जी ॥ ३ ॥

---

* बादल ।

भागौ साथिन हे तिरगुन बोलत मोर ।
अरी हेली दम्भ कपट बकुला फिरैं जी ॥ ४ ॥
भागौ साथिन हे पाप पुन्न दोउ खम्भ ।
अरी हेली नर्क स्वर्ग झोटा लगै जी ॥ ५ ॥
भागौ साथिन हे मैं मेरी बंधी डोर ।
अरी हेली तृस्ना पटरी जित धरी जी ॥ ६ ॥
भागौ साथिन हे झूलत चावहिं चाव ।
अरी हेली नर नारी सब झूलहिं जी ॥ ७ ॥
भागौ साथिन हे तपसी जोगी गये भूल ।
अरी हेली फल चाहत अरु कामना जी ॥ ८ ॥
भागौ साथिन हे आसा झुलावत नारि ।
अरी हेली पांच पचीस मिलि गावहिं जी ॥ ९ ॥
भागौ साथिन हे या जग में ऐसी भूल ।
अरी हेली चरनदास झूलत बचे जी ॥ १० ॥
भागौ साथिन हे इत तजि उत कूं चाल ।
अरी हेली अमर नगर सुकदेव के जी ॥ ११ ॥

प ताल ।

शब्द ४

॥ राग हिंडोला हेली ॥

तरसैं मेरे नैन हेली राम मिलन कब होयगो ॥टेक॥
पिय दरसन बिन क्यों जिऊं री हेली कैसे पाऊं चैन ।
तीर्थ वर्त बहुतै किये री चित दै सुने पुरान ॥१॥
बाट निहारत ही रहूं री हेलो सुधि नहिं लीनी आय ।
यह जोबन यों ही चलो री चालो जन्म सिराय ॥२॥
बिरहा दल साजे रहै री हेली छिन छिन में दुख देहि ।
मन लालन* के बस परो भई भाक† सी देहि ॥३॥
गुरु सुकदेव कृपा करो जो हेली दीजै बिरह छुटाय ।
चरनदास पिय सूं मिलै सरन तुम्हारी धाय ॥४॥

शब्द ५

॥ राग हिंडोला ॥

मो बिरहिन की बात हेली बिरहिन हो सोइ जानि है ।
नैन बिछोहा जानती री हेलो बिरहै कीन्हो घात ।टेक।
या तन कूं बिरहा लगो री हेली ज्यों घुन लागो काठ ।
निस दिन खाये जातु है देखूं हरि की बाट ॥ १ ॥
हिरदे में पावक जरै री हेलो तपि नैना भये लाल ।
आंसू पर आंसू गिरैं यही हमारो हाल ॥ २ ॥

---

*प्रीतम । † भट्ठा, पजावा ।

प्रीतम बिन कल ना परै री हेली कलकल* सब अकुलाहिं।
डिगी† परूं सत+ ना रहो कब पिय पकरैं बांहिं ॥३॥
गुरु सुकदेव दया करैं री हेली मोहिं मिलावैं लाल।
चरनदास दुख सब भजैं सदा रहूं पति नाल§ ॥४॥

बसंत व होली

शब्द १

॥ राग बसंत ॥

मेरे सतगुरु खेलत नित बसंत।
जा की महिमा गावत साध संत ॥ १ ॥
ज्ञान बिबेक के फूले फूल।
जहं साखा जोग अरु भक्ति मूल ॥ २॥
प्रेम लता जहं रही झूल।
सत संगति सागर के कूल ॥ ३ ॥
जहं भर्म उड़त है ज्यों गुलाल।
अरु चोवा चरचै निस्चय बाल ॥४॥
जहं सील छिमा को बरसै रंग।
काम क्रोध को मान भंग ॥५॥
हरि चरचा जित है अनंत।
सुनि मुक्त होत सब जीव जंत ॥६॥

* ब्याकुल। † गिरी। + सत्ता, बल। § साथ।

आन धर्म सब जाहिं खोय ।
राम नाम की जै जै होय ॥ ७ ॥
जहं अपने पिय कूं ढूंढ़ि लेव ।
अरु चरन कंवल में सुरति देव ॥८॥
कहैं चरनदास दुख दुंद जाहिं ।
जब प्रीतम सुकदेव गहैं बांहिं ॥९॥

शब्द २

॥ राग बसंत ॥

वह बसंत रे वह बसंत ॥टेक ॥
कोइ बिरला पावै वह बसंत ।
जा की अद्‌भुत लीला रँग अनंत ॥१॥
जहँ झिलमिलि झिलमिलि है अपार ।
जहं मोती बरसैं निराधार ॥२॥
जहँ फूलन की लागी फुहार ।
जहँ अनहद बाजे बहु प्रकार ।३॥
जहँ ताल जो बाजै बिना हाथ ।
जहँ संख पखावजएक साथ ॥४॥
जहँ बिन पग घुंघुरू की टकोर ।
जहँ बिन मुख मुरली घना* घोर† ॥५॥

* बहुत या बड़ा † शोर ।

जहं अचरज बाजे और और ।
जहं चंद सूर नहिं सांझ भोर ॥६॥
जहं अमृत दरवै कामधेन ।
जहं मान क्रोध नहिं मोह मैन ॥७॥
जहं पांचो इन्द्री एक रूप ।
जहं थकित भये हैं मनुष भूप ॥८॥
सुकदेव बतावैं ऐसा खेल ।
चर्नदास करौ क्यों न वा सूं मेल ॥९॥

शब्द ३

। होली ।

हिल मिल होरी खेलि लई हो बालमा घर पाइया ॥टेक॥
पांच सखी पच्चीस सहेली अनंद मंगल गाइया ॥१॥
समझ बूझ का चोवा चर्चा भर्म गुलाल उड़ाइया ॥२॥
दुई गई जब इच्छा कैसी खेलन सकल बहाइया ।३।
चरनदास बासना तजि कै सागर लहर समाइया ॥४॥

शब्द ४

। होली ।

सखी री तत मत ले संग खेलिये रस होरी हो ॥टेक॥
निर्गुन नित निर्धार सरस रस होरी हो ।
सखी री सील सिंगार संवारी हो ॥ १ ॥

दुबिधा मान निवार सरस रस होरी हो।
सखी री बहुरि न ऐसो बार सरस रस होरी हो॥२॥
रहनी केसर घोरिये रस होरी हो।
सखी री सत गुन करि पिचकारि ले रस होरी हो।३।
तम रज को भर मार सरस रस होरी हो।
सखी री गर्ब गुलाल उड़ाइये रस होरी हो॥ ४॥
मोह मटुकिया डारि सरस रस होरी हो।
सखी री झिलमिल रंग लगाइये रस होरी हो॥५॥
चंदन चरच बिचार सरस रस होरी हो।
सखी री निस्चल सिद्धि समाइये रस होरी हो॥६॥
रिमझिम झनक फुहार सरस रस होरी हो।
सखी री सुन्न नगर में निर्तिये रस होरी हो॥ ७॥
अनहद झनक झिंगार सरस रस होरी हो।
सखी री सैन सुरत सूं समझिये रस होरी हो॥ ८॥
सोहं ब्रह्म खिलार सरस रस होरी हो।
सखी री पांच पचीसौ रल मिले रस होरी हो॥९॥
मंगल शब्द उचार सरस रस होरी हो।
सखी री अलख पुरुष फगुवा लहो रस होरी हो।१०।
चरनदास रमैया रमि रह्यो रस होरी हो।
सखी री दरसो है फाग अपार सरस रस होरी हो।११।

शब्द ५

। होली ।

हरि पीव कूं पाइया सखि पूरन मेरे भाग ।
सुख सागर आनंद में मैं नित उठि खेलूं फाग ॥१॥
चोवा चंदन प्रीत कै सखि केसर ज्ञान घसाय ।
पुष्प बास सूं जो वह झीनो ता के अंग लगाय।२।
बेरंगी के रंग सूं सखि गागर लई भराय ।
सुन्न महल में जाय कै सखि पिय पर दइ ढरकाय॥३॥
भरम गुलाल जब कर लियो सखि बालम गयो दुराय।
सतगुरु ने अंजन दियो तब सन्मुख दरसे आय ॥४॥
ताली लाई प्रेम की सखि अनहद नाद बजाय ।
सर्ब भई पिय पायकै हम आनंद मंगल गाय ॥५॥
रल मिल प्रीतम ह्वै गये सखि दुई गई सब भाग ।
चरनदास सुकदेव दया सूं पायो अचल सोहाग ॥६॥

शब्द ६

॥ होली ॥

प्रेम नगर के माहिं होरी होय रही ।
जब सों खेली हम हूं चित दै आपन हूं को खोय रही ॥१॥
बहुतन कुल अरु लाज गंवाई रहो न कोई काम ।
नाचि उठैं कभी गावन लागैं भूले तन धन धाम ॥२॥

बहुतन की मति रंग रंगी है जिन को लागो प्रेम ।
बहुतन को अपनी सुधि नाहीं कौन करै अस नेम ॥३॥
बहुतन की गदगद ही बानी नैनन नीर ढराय ।
बहुतन की बौरापन लागो ह्वां की कही न जाय ॥४॥
प्रेमी की गति प्रेमी जानै जाके लागी होय ।
चरनदास उस नेह नगर की सुकदेवा कहि सोय ॥५॥

सारांश निरूपन अंग

शब्द १

॥ राग मंगल ॥

जग में दो तारन कूं नीका ।
एक तो ध्यान गुरू का कीजे दूजे नाम धनी का॥१॥
कोटि भांति करि निस्चै कीयो संसय रहा न कोई ।
सास्तर बेद पुरान टटोले जिन में निकसा सोई ॥२॥
इन हीं के पीछे सब जानो जोग जज्ञ तप दाना ।
नौ बिधि नौधा नेम प्रेम सब भक्ति भाव अरु ज्ञाना॥३॥
और सबै मत ऐसे मानौ अन्न बिना भुस जैसे ।
कूटत कूटत बहुतै कूटा भूख गई नहिं तैसे ॥ ४ ॥
थोथा धर्म वही पहिचानो ता में ये दो नाहीं ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं समझि देख मन माहीं ॥५॥

॥ गुरु निरूपन ॥

शब्द २

॥ राग मंगल ॥

समझ रस कोइक* पावै हो ।
गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो ॥१॥
बहुत मनुष ढूंढत फिरैं, अंधरे गुरु सेवें हो ।
उनहूं को सूझै नहीं औरन कहं देवैं हो ॥ २ ॥
अंधरे को अंधरा मिलै नारी को नारी हो ।
ह्वां फल कैसे होयगा समझैं न अनारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सिष दोऊ एक से एकै व्यवहारा हो ।
गये भरोसे डूबि कै वै नरक मँझारा हो ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं चरनदास सूं इन का मत कूरा हो ।
ज्ञान मुक्ति जब पाइये मिलै सतगुरु पूरा हो ॥५॥

शब्द ३

॥ दोहा ॥

गुरु सेती सतगुरु बड़े, परमेसुर के रूप ।
मुक्ति छांह पहुंचाय दें, जक्त छोड़ावैं धूप ॥

मुरशिद मेरा दिल दरियाई दिल दे अंदर खोजा ।
उस अंदर में सत्तर काबे मक्के तीसौ रोज़ा ॥ १ ॥

---

* कोई एक, कोई कोई ।

चौदह तबक़ औलिया जिस में भेंट न होहि जुदाई।
शब्द के बांग निमाज़ में ठाढ़े दरशन जहां खोदाई॥२॥
हवा न हिर्स खुदी नहिं खूबी अनल हक्क जहँ बानी।
बे चिराग़ रौशन सब ख़ाने तिस में तख़्त सुभानी॥३॥
नहर बिना जहं कंवल फुलाने अब्र बिना जहँ बरसै।
बेशऊर तंबूर सब बाजै चश्मा हो मन दरसै॥४॥
जिस दरगाह मुसल्ला बैठा डारै चादर क़ाज़ी।
चाय करै चीनी को बूझै सब को राखै राज़ी॥५॥
ऐसा हो जब कामिल कहिये जब कमाल पद पावै।
साहब मिल साहब हो दरसै ज्यौं जल बुन्द समावै॥६॥
जा केवल दीदार किये से नादिर होय फ़क़ीर।
मारै काल क़लन्दर कर गहि दरद लिये धरि धीर॥७॥
ऐसा हो जब पीर कहावै मान मनी सब खोवै।
चरनदास वह ज़मीन रौशन पायं पसारे सोवै॥८॥

नाम निरूपन

शब्द ४

॥ राग रामकली ॥

सतगुर अच्छर मोहिं पढ़ाये।
लेखनि* लिखा न स्याही सेती।
ना वह कागद मध्य चढ़ाये॥ १॥

---

*क़लम

ना लग मात्र न माथे बन्दी अरुन पीन महिं काला।
एंड़ा बेंड़ा टेढ़ा नाहीं ना वह आल जंजाला ॥२॥
ता कूं देख थकी सब करनी सब ही साधन भागे।
सिद्धि भई भोर के तारे मुक्ति न दीखै आगे ॥३॥
जा के पढ़े पढ़न सब छूटे आसा पोथी फारी।
मैं ती भया करम का हीना कहै सरसुती ठाढ़ी ॥४॥
गुरु सुकदेव पढ़ाया अच्छर अगम देस चटसाला[†]।
चरनदास जब पंडित हूए धारि तिलक अरु माला ।५।

शब्द ५

॥ राग धनाश्री ॥

अब मैं सतगुरु सरनै आयो ॥टेक॥
बिन रसना बिन अच्छर बानी ऐसो हि जाप सुनायो।१।
काम क्रोध मद पाप जराये त्रैविधि पाप नसायो ॥२॥
नागिन पांच मुईं संग ममता दृष्टि सूं काल डेरायो ।३।
किरिया कर्म अचार भुलाना ना तीरथ मग धायो ॥४॥
समझा सहज बचन सतिगुरु के भर्म को बोझ बगायो ॥५॥
ज्यों ज्यों जमौं गरक हों वा में वह मो मांहिं समायो॥६॥
जग झूठो झूठो तन मेरो यों आपा नहिं पायो।७।
वा कूं जपै जन्म सोइ जातै सो मैं सुद्ध बतायो।८।
चरनदास सुकदेव दया यों सागर लहरि समायो।९।

*लाल। †पाठशाला, मकतब। ‡बगदाया, छिटकाया।
§ध्यान लगाऊं। ‖डूब जाऊं।

॥ दोहा ॥

गगन मंडल में जाप कर, जित है दसवां द्वार ।
चरनदास यों कहत हैं, सो पहुंचै हरि वार ॥

----o----

मिश्रित

शब्द १

॥ राग भैरो ॥

गुरु बिन मेरे और न कोय ।
जग के नाते सब दिये खोय ॥ १ ॥
गुरु ही मात पिता अरु वीर ।
गुरु ही सम्पति जीव सरीर ॥ २ ॥
गुरु ही जाति बरन कुल गोत ।
जहां तहां गुरु संगी होत ॥ ३ ॥
गुरु ही तीरथ ब्रत हमार ।
दीन्हे और धरम सब डार ॥ ४ ॥
गुरु ही नाम जपौं दिन रैन ।
गुरु कूं ध्यान परम सुख दैन ॥ ५ ॥
गुरु के चरन कमल कर बास ।
और न राखूं कोई आस ॥ ६ ॥
जो कुछ चाहैं गुरु ही करैं ।
भावै छांह धूप में धरैं ॥ ७ ॥

आदि पुरुष गुरु ही को जानूं ।
गुरु ही मुक्ती रूप पिछानूं ॥ ८ ॥
चरनदास के गुरु सुकदेव ।
और न दूजा लागै लेव* ॥ ९ ॥

शब्द २

॥ आरती राग भैरों ॥

मंगल आरति कीजे प्रात ।
सकल अविद्या घट गइ रात ॥ १ ॥
सूरज ज्ञान भयो उजियारा ।
मिटि गये औगुन कुबधि बिकारा ॥२॥
मन के रोग सोग सब नासे ।
सुमति नीर सुभ जलज† प्रकासे ॥३॥
भय अरु भर्म नहीं ठहराई ।
दुबिधा गई एकता आई ॥ ४ ॥
जाति बरन कुल सूझै नीके ।
सब संदेह गये अब जी के ॥ ५ ॥
घट घट दरसै दीनदयाला ।
रोम रोम सब हो गइ माला ॥६॥
दृष्टि न आवैं दुख जग जाला ।
काग पलटि गति भये मराला‡ ॥७॥

---

* लेवा, कीचड़ । † कमल । ‡ हंस ।

अनहद बाजे बाजन लागे ।
चोर नगरिया तजि तजि भागे ॥८॥
गुरु सुकदेव की फिरी दोहाई ।
चरनदास अंतर लौ लाई ॥ ९ ॥

शब्द ३

॥ राग सोरठ ॥

योंकहैं हरि जी दया निधान, संत हमारे जीवन प्रान ।१।
संत चलैं जहं संग हिं जावं, संत दियो सो भोजन खावं ।२
संत सुलावैं जिन रहुं सोय, संत बिना मेरे और न कोय ।
संत हमारे माई बाप, संतहि को मन राखूं जाप ॥४॥
संतकोध्यानधरौं दिनरैन, संतबिनामोहिंपरैनचैन ॥५॥
संत हमारी देहा जान, संतहिं की राखूं पहिचान ॥६॥
संत को सकल बलैयां लेवं, संत कूं अपनो सर्वस देवं ७॥
संतहि हेत धरूं औतार, रच्छा कारन करूं न वार ॥८॥
सुख देऊं दुख सब निवार, चरनदास मेरो परिवार ।९।

शब्द ४

॥ राग सोरठ ॥

वह पुरुषोत्तम मेरा यार, नेह लगा टूटै नहिं तार ॥१॥
तीरथ जाउं न ब्रत करूं, चरन कमल को ध्यान धरूं ॥२॥
प्रानपियारेमेरेहिंपास, बनबनमाहिंनफिरूंउदास ॥३॥
पढ़ूं न गीता बेद पुरान, एकहिं सुमिरूं श्रीभगवान ।४।

औरन को नहिं नाऊं सीस, हरि ही हरि हैं बिस्वे बीस ॥५॥
काहू की नहिं राखूं आस, तृस्ना काटि दई है फांस ॥६॥
उद्यम करूं न राखूं दाम, सहजहिं ह्वै रहैं पूरन काम ॥७॥
सिद्धि मुक्ति फल चाहौं नाहिं, नित ही रहूं हरि मंतन माहिं ॥८॥
गुरु सुकदेव यही मोहिं दीन, चरनदास आनंद लवलीन ॥९॥

शब्द ५

॥ राग केदारा ॥

अरे मन करो ऐसा जाप ।
कटैं संकट कोटि तेरे मिटैं सगरे पाप ॥ १ ॥
चेत चेतन खोज करि लै देख आपा आप ।
काग सूं जब हंस होवै नाम के परताप ॥ २ ॥
ध्यान आतम सुरति राखौ छुटैं त्रैगुन ताप ।
सुरति माला सुमिरि हिरदय छांडु सकल संताप ॥३॥
परा भक्ति अगाध अद्भुत बिमल अरु निष्काम ।
चरनदास सुकदेव कहिया बसै निजपुर धाम ॥४॥

शब्द ६

॥ राग बिलावल ॥

अब तू सुमिरन कर मन मेरे ।
अगले पिछले अब के कीये पाप कटैं सब तेरे ॥१॥
जम के दंड दहन पावक का चौरासी दुख प्रेरे ।
भर्म कर्म सबहीं कटि जैहैं जक्त व्याधि उरझेरे ॥२॥

पैहै भक्ति मुक्ति गति आनंद अमरहिं लोक बसेरो।
जनमै मरै न जोनी आवै या जग करै न फेरो ॥३॥
सुमिरनसाधनमाहिंसिरोमनिजोसुमिरन करि जानै।
काम क्रोध मद पाप जरावै हरि बिन और न मानै ॥४॥
गुरु सुकदेव बताय दियो है बिन जिभ्या करि लीजै।
चरनदास कहैं घेरि घेरि कर अर्ध उर्ध मन दीजै ॥५॥

शब्द ७

॥ राग नट व बिलावल ॥

जो नर हरि धन सूं चित लावै।
जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवाया पावै ॥ १ ॥
मन करि कोठी नावं खजाना भक्ति दुकान लगावै।
पूरा सतगुरु साभी करिकै संगति बनिज चलावै ॥२॥
हुंडी ध्यान सुरति ले पहुंचै प्रेम नगर के माहीं।
सीधा साहूकारा सांचा हेर फेर कछु नाहीं ॥ ३ ॥
जित सौदागर सबही सुखिया गुरु सुकदेव बसाये।
चरनहिंदास बिलमि रहे ह्वांई जूना पंथ न आये ॥४॥

शब्द ८

॥ राग बिहागरा ॥

भइ हूं प्रेम में चूर हो मोहिं दरसन दीजै।
हूं तो दासी तिहारी मोहन बेगि खबरिया लीजै ॥१

*पुनर्जन्म।

ज्ञान ध्यान अरु सुमिरन तेरो तुव चरनन चित राखूं ।
तेरोहि नाम जपूं दिन राती तुव बिन और न भाखूं ।२
तन ब्याकुल जिय रूंधोहि आवत परी प्रीत गल फांसी ।
तुम तो निठुर कठोर महा पिय तुमको आवै हांसी ॥३॥
बिरह अगिन नख सिख सूं लागी मनै कल्पना भारी ।
गिरोहि* प्रीत तन संभ्रम† नाहीं रहत भवन में डारी ॥४॥
की विष खाय तजों यह काया की तुम्हरे संग रहसूं । ॥
चरनदास सुकदेव बिछोहा तेरी सौं‡ नहिं सहसूं§ ॥५

शब्द ९

॥ राग मंगल ॥

परम सखी सोइ साध जो आपा ना थपै ।
मन के दोष मिटाय नाम निर्गुन जपै ॥ १ ॥
पर निन्दा पर नारि द्रव्य नाहीं हरै ।
जिन चालन हरि दूर बीच अंतर परै ॥ २ ॥
छिन नहिं बिसरै राम ताहि निकटै तकै ।
हरि चरचा बिन और बाद नाही बकै ॥ ३ ॥
झूंठ कपट छल भगल ये सकल निवारिये ।
जत सत सील संतोष छिमा हिय धारिये ॥४॥
काम क्रोध मद लोभ बिडारन कीजिये ।
मोह ममता अभिमान अकस तजि दीजिये ॥५॥

* ग्रसी । † सम्हाल । ‡ क़सम । § सह सकता हूं ।

सब जीवन निर्बैर त्याग बैराग लै।
तब निर्भय ह्वै संत भांति काहू न भै[y] ॥ ६ ॥
काग करम सब छोंड़ि होय हंसा गती।
तृस्ना आस जलाय सोई साधू मती ॥ ७ ॥
जग सूं रहै उदास भोग चित ना धरै।
जब रीझै करतार दास अपनो करै ॥ ८ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जो ऐसा हूजिये।
चरनहिं दास बिचारि प्रेम में भीजिये ॥ ९ ॥

शब्द १०

॥ राग हिंडोला ॥

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने ॥ टेक ॥
पौन उमाह उछाह धरती सोच सावन मास।
लाज के जहं उड़त बगुले मोर हैं जग हांस ॥ १ ॥
हरष सोक दोउ खंभ रोपे सुरत डोरी लाय।
बिरह पटरी बैठि सजनी उमंग आवै जाय ॥ २ ॥
सकल त्रिकल तहं देत झोके विपत गावन हार।
सखी बहुतक रंग राती रंगी पांचौ नार ॥ ३ ॥
नैन बादल उमंगि बरसैं दामिनी दमकात।
बुद्धि को ठहराव नाहीं नेह की नहिं जात ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं कोइ बली झूलै सीस देत अकोर[t]।
चरनदासा भये बौरे जाति बरन कुल छोर ॥ ५ ॥

---

[y] भय। [t] भेट, घूस।

शब्द ११

॥ राग बिलावल ॥

सांचा सुमिरन कीजिये जा में मान न मेख ।
ज्यों आगे साधुन किये यानी में देख ॥ १ ॥
टेक गहो दृढ़ भक्ति की नौधा हिय धारि ।
संतन की सेवा करो कुल कानि निवारि ॥ २ ॥
जा सूं प्रेमा ऊपजै जब हरि दरसायं ।
आगे पीछे हो फिरैं प्रभु छोड़ि न जायं ॥ ३ ॥
चारि मुक्ति बांदी भवै सिधि चरनन माहिं ।
तीरथ सब आसा करैं अघ देख नसाहिं ॥ ४ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जी चरनदास गुलाम ।
ऐसी साधन धारिये रहिये निस्काम ॥ ५ ॥

शब्द १२

॥ राग धनाश्री ॥

गुरु गम यहि बिधि जोग कमायो ।
आसन अचल मेर कियो सीधो कसि बंध मूल लगायो १
संजम साधि कला बस कीन्ही मन पवना घर आयो ।
नौ दरवाजे पट दै राखे अर्ध उर्ध मिलायो ॥२॥
नाभि तले पैंड़ो करि पैठै सक्ति पताल गई है ।
कांप्यो सेस कमठ अकुलायो सायर थाह दई है॥३॥

उलटि चले मठ फोरि इकीसौ गये अभय पद माहीं।
अतिउंजियारोअद्भुतलीलाकहनसुननगमनाहीं।४।
जितभयेलीनसबैसुधिबिसरीछुटी।जगतकीब्याधा।
चरनदास सुकदेव दया सूं लागी सुन्न समाधा॥५॥

शब्द १३

॥ राग धनाश्री ॥

ऐसी जोग जुक्ति गति भारी।
मूलहिं बंध लगाय जुक्ति सूं मूंदि दई नव नारी॥१॥
आसन पद्म महा दृढ़ कीन्हो हिरदय चिबुक* लगाई।
चंद सूर दोउ सम करि राखे निरतिसुरतिघरआई॥२॥
ऊपर खैंचि अपान सहज में सहजै प्रान मिलाई।
पवन फिरी पच्छिम कूं दौरी मेरुहि मेरु चलाई॥३॥
ऐसहिं लोक अमर पद पहुंचे सूरज कोटि उजारी।
सेत सिंहासन सतगुरु परसे करि दरसन बलिहारी।४।
आपा बिसरि प्रेम सुख पाये। उनमुन लागी तारी।
चरनदास सुकदेव दया सूं चरन दास छुटी बारी† ॥५॥

शब्द १४

॥ राग मलार ॥

बिथा मोरी जानत हो अकि‡ नाहीं।
नखसिखपावकबिरह लगाईबिछुरनदुखमनमाहीं।१।

* ठुड्डी। † चरन के दास का आवा गवन छूटा। ‡ याकि।

दिननहिंचैननींदनहिंनिसकूं नरूचलबुधिनहिंमेरा ।
कासूं कहूं कोउ हितु न हमारो लग्न लहरि हरि तेरी ॥२॥
तन भयो छीन हीन भये नैना अजहूं सुधि नहिं पाई ।
छतियां दरकत करक हिये में प्रीत महा दुखदाई ।३।
जलबिनमीनपियाबिनबिरहिन इन धीरजकहुकैसी ।
पच्छी जरै दव लागो बन में मेरी गति भइ ऐसी ।४।
तलफत हूं जिय निकसत नाहीं तन में अति अकुलाई ।
चरनदास सुकदेव हि विनवै[1] दरसन द्यो सुखदाई ।५।

शब्द १५

॥ राग सोरठा ॥

पर आसा है दुखदाई ॥ टेक ॥
जिन धीरज सो पति रसिया छांड़ो,
वांको मोह यार कियो गाढ़ो ।
क्रोध सूं प्रीति लगाई ॥ १ ॥
जिन जत सत देवर सूं मुख मोड़ा ।
दया बहिन सूं नाता तोड़ा ।
सुमति सौच बिसराई ॥ २ ॥
जो धर्म पिता के घर सूं छूटी ।
छिमा माय सूं यों हीं रूठी ।
कुमति परोसिन पाई ॥ ३ ॥

* आग । [1] बिनती करता है । , सफाई ।

संतोष चचा को कहा न माना ।
चची दीनता सूं रिसि ठाना ।
माया मद बौराई ॥ ४ ॥
चरनदास जब निज पति पावै ।
श्री सुकदेव सरन सो आवै ।
सील सिंगार बनाई ॥ ५ ॥

शब्द १६

॥ राग बिलाव ५ ॥

करनी की गति और है कथनी की औरे ।
बिन करनी कथनी कथैं बक बादी बौरे ॥ १ ॥
करनी बिन कथनी इसो[^] ज्यों ससि बिन रजनी ।
बिन सस्तर[†] ज्यों सूरमा भूषन बिन सजनी[‡] ॥२॥
ज्यों पंडित कथि कथि भले वैराग सुनावै ।
आप कुटुंब के फंद पड़े नाहीं सुरझावैं ॥ ३ ॥
बांझ झुलावै पालना बालक नहिं माहीं ।
वस्तु बिहीना जानिये जहं करनी नाहीं ॥ ४ ॥
बहु डिंभी करनी बिना कथि कथि करि मूए ।
संतों कथि करनी करी हरि के सम हूए ॥ ५ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जी चरनदास बिचारौ ।
करनी रहनी दृढ़ गहौ थोथी कथनी डारौ ॥ ६ ॥

[^] ऐसी । [†] हथियार । [‡] स्त्री ।

शब्द १७

॥ राग बिलावल ॥

माला फेरे कहा भयो ॥ टेक ॥

अंतर के मन को नहिं फेरा पाप करत सब जन्म गयो ।१।
परनिन्दापरनारिनभूलोखोटकपटकीओर नयो* ।।२।।
काम क्रोध मद लोभ न खोये ह्वै रह्यो मूरख मोह मयो ।३।
दुनियासांचसमझघरकीन्होधनजोरनकोपरनलयो ४
दयाधर्मदोउमारगछांड़ेमंगतनकोनहिंदानदयो ।।५।।
गुरु सूं झूंठ भगल साधन सूं हरि सूं नाहीं नेह जयो† ।६।
चरनदास सुकदेव कहत हैं कैसे कहियो मुक्ति हयो‡ ।७।

शब्द १८

॥ राग सोरठ ॥

अवधू ऐसी मदिरा पीजै ।

बैठि गुफा में यह जग बिसरै चंद सूर सम कीजै ।१।
जहां कुलाल चढ़ाई भाठी ब्रह्म ज्वाल परजारी ।
भरि भरि प्याला देत कुलाली बाढ़ै भक्ति खुमारी ।२।
माता§ ह्वै करि ज्ञान खड़ग लै काम क्रोध कूं मारै ।
घूमत रहै गहै मन चंचल दुबिधा सकल बिडारै ।३।
जो चाखै यह प्रेम सुधारस निज पुर पहुंचै सोई ।
अमर होय अमरा पद पावै आवा गवन न होई ।४।

---

*झुका । †जाना । ‡होगी । §मस्त ।

गुरु सुकदेव किया मतवारा तीन लोक तृन बूझा ।
चरनदास रनजीत भये जब आनंद आनंद सूझा ॥५॥

शब्द १९

॥ राग बिहागरा ॥

साधो निंदक मित्र हमारा ।
निंदक कूं निकटे ही राखौं होन न देउँ नियारा ॥१॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै सुनि मन मिटै बिकारा ।
जैसे सोना तापि अगिन में निरमल करै सोनारा ॥२॥
घन अहरन कसि हीरा निघटै कीमत लच्छ हजारा ।
ऐसे जांचन दुष्ट संत कूं करन जगत उजियारा ॥३॥
जोग जज्ञ जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा ।
बिन करनी मम कर्म कठिन सब मेटै निंदक प्यारा ॥४॥
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा ।
हमरी निंदा करने वाला उतरै भव निधि पारा ॥५॥
निंदक के चरनों की अस्तुति भाखौं बारम्बारा ।
चरनदास कहैं सुनियो साधो निंदक साधक भारा ॥६॥

शब्द २०

॥ राग सोरठा ॥

साधो होनहार की बात ।
होत सोई जो होनहार है का पै मेटी जात ॥१॥
कोटि सयानप बहु बिधि कीन्हे बहुत तर्क कुसिलात ।
होनहार ने उलटी कीन्ही जल में आग लगात ॥२॥

पीट करके । निर्मल होय ।

जो कुछ होय होतबता भोंड़ी जैसी उपजै बुद्धि ।
होनहार हिरदै मुख बोलै बिसरि जाय सब सुद्धि ।३।
गुरु सुकदेव दया सूं होनी धारि लई मन माहिं ।
चरनदास सोचे दुख उपजै समझे सूं दुख जाहिं ॥४।

शब्द २१

॥ राग परज ॥

जिन्हैं हरि भक्ति पियारी हो ।
मात पिता सहजै छुटैं छुटैं सुत अरु नारी हो ।१।
लोक भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारी हो ।
हानि लाभ नहिं चाहिये सब आसा हारी हो ।२।
जग सूं मुख मोरे रहैं करैं ध्यान मुरारी हो ।
जित मनुवां लागो रहै भइ घट उंजियारी हो ॥३॥
गुरु सुकदेव बताइया प्रेमी गति भारी हो ।
चरनदास चारौ बेद सूं औरै कछु न्यारी हो ॥४।

शब्द २२

॥ राग परज ॥

गुरु हमरे प्रेम पियायो हो ।
ता दिन तें पलटो भयो कुल गोत नसायो हो ॥१॥
अमल चढ़ो गगनै लगो अनहद मन छायो हो ।
तेज पुंज की सेज पै प्रीतम गल लायो हो॥ २ ॥

गये दिवाने देसड़े आनंद दरसायो हो ।
सब किरिया सहजै छुटी तप नेम भुलायो हो ॥३॥
त्रैगुन तें ऊपर रहूं सुकदेव बसायो हो ।
चरनदास दिन रैन नहिं तुरिया पद पायो हो ॥४॥

शब्द २३

॥ राग सोरठ ॥

भाई रे समझ जग ब्योहार ।
जब ताईं तेरे धन पराक्रम करैं सबहीं प्यार ॥ १ ॥
अपने सुख कूं सबहिं चाहैं मित्र सुत अरु नार ।
इन्हीं तौ अप* बस कियो है मोह बेड़ी डारि ॥ २ ॥
सबन तो कूं भय दिखायो लाज लकुटी+ मार ।
बाजीगर के बांदरा ज्यों फिरत घर घर द्वार ॥३॥
जबै तो कूं बिपति आवै जरा कोर बिकार ।
तबै तो सूं लाज मानैं करैं ना तेरि सार ॥ ४ ॥
इनकी संगति सदा दुख है समझ मूढ़ं गंवार ।
हरि प्रीतम कूं सुमिरि ले कहैं चरनदास पुकार ॥५॥

शब्द २४

॥ राग बिहागरा ॥

ये सब निज स्वारथ के गरजी ।
जग में हेत न कर काहू सूं अपने मन को बरजी‡ ॥१॥

---

* अपने । + लाठी ‡ मना करना ।

रोपैं फंद घात बहु डारैं इन तें रहु डरता जी ।
हिरदे कपट बाहर मिठ बोलैं यह छल हैगो कहा जी ।२।
दुख सुख दर्द दया नहिं बूझैं इनसे छुटावो हरि जी ।
सौगंद खाय झूंठ बहु बोलैं भौसागर कस तरि जी ।३।
बैरी मित्र सबै चुनि देखे दिल के महरम* कहूँ जी ।
इन को दोष कहा कहा दीजै यह कलजुग की झर जी।४।
दुनियाभगलकुटिलबहुखोटी देखि छातीमेरीलरजी† ।
चरनदास इन कूं तजि दीजै चल बस अपने घर जी ॥५॥

शब्द २५

॥ राग आसावरी ॥

साधो राम भजे ते सुखिया ।
राजा परजा नेमी दाता सबहीं देखे दुखिया ॥ १ ॥
जो कोई धनवंत जगत में राखत लाख हजारा ।
उनकूं तौ संसय है निस दिन घटत बढ़त व्यौहारा ॥२॥
जिनके बहु सुत नाती कहिये और कुटुंब परिवारा ।
वे तौ जीवन मरन के काजै भरत रहैं दुख भारा ॥३॥
नेमी नेम करत दुख पावैं कर अस्नान सबेरा ।
दाता कूं देबे का दुख है जब मंगतौं ने घेरा ॥४॥
चारि बरन में कोउ न देखे जाकूं चिंता नाहीं ।
हरि की भक्ति बिना सब दुख है समझ देख मन माहीं ५

---

* भेदी । † कांपी ।

सत संगति अरु हरिसुमिरनकरिसुकदेवागुरुकहिया ।
चरनदासबिपतासबतजिकैआनँदमेंनितरहिया ।३।

शब्द २६

॥ राग सोरठ ॥

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ टेक ॥
लखोअचानकअज*अबिनासीउघरिगयेदृगतारा।१।
भूमि रह्यो मेरे आंगन में टरत नहीं कहुं टारा।१।
रोम रोम हिय माहीं देखो होत नहीं छिन न्यारा ॥३॥
भयोअचरजचरनदासनपैयेखोजकियोबहुबारा ॥४॥

शब्द २७

॥ राग आसावरी ॥

हे मन आतम पूजा कीजै ।
जितनी पूजा जग के माहीं सबहुन को फल लीजै ॥१॥
जो जो देहीं ठाकुरद्वारे तिन में आप बिराजै ।
देवल में देवत है परगट आछी बिधि सूं राजै ॥२॥
त्रैगुन भवन संभारि पूजिये अनरस होन न पावै ।
जैसे कूं तैसा ही परसै प्रेम अधिक उपजावै ॥३॥
और देवता दृष्टि न आवै धोखे कूं सिर नावै ।
आदि सनातन रूप सदा हों मूरख ताहि न ध्यावै ।४।

*अजर ।

घट घट सूझै कोइ इक बूझै गुरु सुकदेव बतावैं ।
चरनदास यह सेवन कीन्हे जिवन मुक्ति फल पावैं ॥५॥

शब्द २८

॥ राग हेली ॥

समझि संभारो रामजी हेली और न मीता कोय ।
जीवत की रच्छा करें मुए मुक्ति करें तोय ॥१॥
अरु सब स्वारथ के सगे री हेली अंत न कोई साथ ।
सुख में सब ही रल मिलें दुख में सुनें न बात ॥२॥
छल करि मन की बूझ लें री हेली पाछे डारें घात ।
तिन कूं तू अपनो कहै सो दोषी ह्वै जात ॥३॥
भेद न अपनो दीजिये री हेली कोऊ कैसा होय ।
दयाहिर की हिरदय रहै हरि हो जानै सोय ॥४॥
कै गुरु अपनो जानिये री हेली कै सत संगति बास ।
गुरु सुकदेव बताइई देख चरन हीं दास ॥ ५ ॥

शब्द २९

॥ राग बिलावल ॥

अरे नर जन्म पदारथ खोया रे ॥टेक॥
बीतीअवधिकालजबआयासीसपकारिकैरोयारे ।१।
अबक्याहोयकहाबनिआवैमाहिंअविद्यासोयारे ।२॥
साधुसंगगुरुसेवन कीन्हीतत्वज्ञाननहिंजोया रे ।३।

आगे से हरि भक्ति न कीन्ही रसना राम न जोया रे ॥४॥
चौरासी जम दंड न छूटै आवा गवन का दोया* रे ॥५॥
जो कुछ किया सोई अब पावो वही लुनौ+ जो बोया रे ॥६॥
साहब सांचा न्याव चुकावै ज्यों का त्यों ही होया रे ॥७॥
कहूं पुकार सब सुनि लीजो चेति जाव नर लोया रे ॥८॥
कहैं सुकदेव चरन हीं दासा यह मैदान यह गोया॥ रे ९

शब्द ३७

॥ राग आसावरी ॥

जब सूं मन चंचल घर आया ।
निर्मल भया मैल गये सगरे तीरथ ध्यान जो न्हाया १
निर्बासी ह्वै आनंद पायें या जग सूं मुख मोड़ा ।
पांचौ भई सहज बस मेरे जब इनका रस छोड़ा ।२।
भय सब छूटे अब को लुटै दूजी आस न कोई ।
सिमिटि सिमिटि रहा अपने माहीं सकल बिकलन हिं होई
निज मन हूआ मिटि गा दूआ को बैरी को मीता ।
बंध मुक्ति का संसय नाहीं जन्म मरन की चीता\ ॥४॥
गुरु सुकदेव भेव मोहिं दोनो जब सूं यह गति साधी।
चरनदास सूं ठाकुर हूए बुटि|| गये बाद बिवादो ५

* दौड़ारी, डोरा । + काटो । । गेंद । \ चिन्ता । || लुट गये ।

शब्द ३१

॥ राग बिहागरा व बिलावल ॥

अब हम ज्ञान गुरू से पाया ।
दुबिधा खोय एकता दरसी निस्चल ह्वै घर आया ॥१॥
हिरदा सुद्ध हुवा बुधि निर्मल चाह रही नहिं कोई ।
ना कुछ सुनूं न परसूं बूझूं उलटि पलटि सब खोई ॥२॥
समझ भई जब आनंद पाये आतम आतम सूझा ।
सूधा भया सकल मन मेरा नेक न कहूं अरूझा ॥३॥
मैं सबहुन में सब मोहूं में सांच यही करि जाना ।
यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना ॥४॥
सुकदेवा ने सब सुख दीन्हे तिरपत होय अघायो ।
चरनदास निकसा नहिं रंचक परमातम दरसायो* ॥५॥

शब्द ३२

॥ राग मंगल व बिलावल ॥

कर्म करि निष्कर्म होवै, फेरि कर्म न कीजिये ।
भूलि कै कोइ कर्म साधै, उलटि कर्म न दीजिये ॥१॥
कर्म त्यागै जगै आतम, यह निस्चय करि जानिये ।
जब अभय पद सुलभ पावै, साँच हिय में आनिये ॥२॥
साँच हिय में राखि अवधू, नाम निर्गुन नित जपौ ।
अगिन इन्द्री कर्म लकड़ी, पंच अग्नी अस तपौ ॥३॥

* चरनदास का आपा नहीं रहा बरन परमात्मा में अभेद हो गया ।

जैसे टूट गहनो खोज मेटै, होय सोना अति सुखी।
ऐसे जोग भक्ति बैराग सेती, कर्म काटै गुरुमुखी ॥४॥
जासूं मिटै आपा आप सहजै, ब्रह्म विद्या ठानिये।
गुरु सुकदेवा जुक्ति भाखैं, चरनदास पिछानिये ॥५॥

शब्द ३३

॥ राग आसावरी ॥

हम तो आतम पूजा धारी
समझिसमझिकरनिस्चयकीन्ही,औरसबनपरभारी।१।
और देवल जहँ धुंधली पूजा, देवत दृष्टि न आवै।
हमरा देवत परगट दीखै, बोलै चालै खावै ॥ २ ॥
जित देखौं तित ठाकुरद्वारे, करों जहाँ नित सेवा।
पूजा की विधि नीके जानौं, जासूं परसन देवा ॥३॥
करि सन्मान असनान कराऊँ, चन्दन नेह लगाऊँ।
मीठे बचन पुष्प सोइ जानो हूं करि दीन चढ़ाऊं ॥४॥
परसन करि करि दरसन पाऊँ, बार बार बलि जाऊँ।
चरनदास सुकदेव बतावैं, आठ पहर सुख पाऊँ ॥५॥

शब्द ३४

॥ राग सोठना ॥

तेरी छिन छिन छीजत आयु, समझ अजहूं भाई ॥१॥
दिन दो का जीवन जानि, छांड़ दे गुमराई* ॥२॥

* गुमराही, भूल भटक।

सुन मूरख नर अज्ञान, चेत करु कोउ न रही ॥३॥
कह फूला फिरत गंवार, जगत झूंठे माहीं ॥ ४ ॥
कियौ काम क्रोध सूं नेह, गही है अकड़ाई ॥ ५ ॥
मतवारा माया माहिं, करत है कुटिलाई ॥ ६ ॥
तेरो संगी कोई नाहिं, गहै जब जम बाहीं ॥ ७ ॥
सुकदेव चितावैं तोहिं, त्याग रे मचलाई ॥ ८ ॥
चरनदास कहैं भजु राम, यही है सुखदाई ॥ ९ ॥

शब्द ३५

॥ सवैया ॥

आदिहुं आनंद, अन्तहुं आनंद,
मध्यहुं आनंद, ऐसे हिं जानौ ।
बंधहुं आनंद, मुक्तिहुं आनंद,
आनंद ज्ञान, अज्ञान पिछानौ ॥
लेटेहुं आनंद, वैठेहुं आनंद,
डोलत आनंद, आनंद आनौ ।
चरनदास बिचारि, सबै कुछ आनंद,
आनंद छांड़ि कै, दुक्ख न ठानौ ॥

शब्द ३६

कबित्त

मंदिर क्यों त्यागै अरु भागै क्यों गिरिवर कूं,
हरि जी कूं दूर जानि कल्पै क्यों बावरे ।
सब साधन बतायो अरु चारि वेद गायौ,
आपन कूं आप देखि अन्तर लौ लाव रे ॥
ब्रह्म ज्ञान हिये धरौ बोलते कौ खोज करौ,
माया अज्ञान हरौ, आपा विसराव रे ।
जैहैं जब आप धाप कहा पुन्न कहा पाप,
कहैं चरनदास तू निस्चल घर आव रे ॥

शब्द ३७

॥ भोर की धुन राग भैरव ॥

आरति रमता राम की कीजै ।
अंतर्ध्यान निरखि सुख लीजै ॥१॥
चेतन चौकी सत कूं आसन ।
मगन रूप तकिया धरि दीजै ॥२॥
सोहं थाल खैंचि मन धरिया ।
सुरत निरत दोउ बाती बरिया ॥३॥
जोग जुगति सूं आरति साजी ।
अनहद घंट आप सूँ बाजी ॥४॥

सुमति सांझ की बेरिया आई।
पांच पचीस मिलि आरति गाई ॥ ५ ॥
चरनदास सुकदेव कूं चेरा।
घट घट दरसै साहब मेरो ॥ ६ ॥

शब्द ३८

॥ भोर की धुन राग भैरव ॥

गगन मंडल में आरति कीजै।
उत्तम साज सकल साजि लीजै ॥ १ ॥
सुखमन अमृत कुंभ धरावै।
मनसा मालिनि फूल चढ़ावै ॥ २ ॥
घीव अखंडा सोहं बाती।
त्रिकुटी ज्योति जलै दिन राती ॥ ३ ॥
पवन साधना थाल करीजै।
ता में चौमुख मन धरि लीजै ॥४॥
रवि ससि हाथ गहौ तिहि माहीं।
खिन दहिने खिन बांये लाई ॥५॥
सहस कंवल सिंहासन राजै।
अनहद झांझरि नित हीं बाजै ॥६॥
यहि बिधि आरति सांची सेवा।
परम पुरुष देवन को देवा ॥ ७ ॥
चरनदास सुकदेव बतावै।
ऐसी आरति पार लगावै ॥ ८ ॥

घड़ा

शब्द ३९

॥ राग काफी ॥

कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान।

कहर गरूरी छांड़ि दिवाने, तजो अकस की बान।१।

चुगली चोरी अरु निन्दा लै, झूठ कपट अरु कान।

इनकूं डारि गहे जत सत कूं, सोई अधिक सयान।२।

हरिहरिसुमिरौछिननहिंबिसरौ,गुरुसेवामनठानि।

साधुन की संगति कर निस दिन, आवै ना कछुहानि।३।

मुड़ौ कुमारग चलौ सुमारग, पावौ निज पुर बास।

गुरु सुकदेव चेतावैं तोकूं,समुझ चरनहीं दास॥४॥

शब्द ४०

॥ राग रामकली ॥

फिरि फिरि मूरख जन्म गंवायो।

हरिकोभक्तिसाधुकीसंगति,गुरुकेचरननमनहिंआयो१

धन के जोरन को दृढ़ कीन्हो, महल करनब्रतधारो।

टेकपकड़करिनारी सेई,सिरपरबोझलियो अतिभारो ३

ह्वै हैं दुख नाना बिधि केरो, तन मन रोग बढ़ायो।

जीवतमरतनहींसुखपैहौ,आवागवनकूंबीज जगायो ४

भरमि भरमि चौरासी आयो, मनुषा देह पाई।

यातनकीकछुसारनजानी,फिरआगेचौरासीआई ।५।

आंख उघारि समुझ मन माहीं, हिरदय करौ बिचारा।
ऐसा जन्म बहुरि कब पैहौ, बिरथा खोवौ जग ब्यौहारा।६।
जानौगे जग छांड़ि चलौगे, कोई न संग तुम्हारे।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, याद करौगे बचन हमारे॥७॥

शब्द ४१

॥ राग कान्हरा ॥

हरि बिन कौन तुम्हारो माता।
कुटुंब संघाती स्वारथ लागे, तेरी काहू कूं नहिं चीता१
तैं प्रभु ओरी सूं मुख मोड़ा, झूठे लोगन सूं हित कीता।
अरु तैं अपनी आंखौं देखा, कई बार दुख सुख है बीता।२॥
सम्पति में सब हीं घिरि आवैं, बिपति परे अधिको दुख दीता।
मूठी बांधि जनम नर लायो, हाथ पसारि चलैगो रीता ३
धरि स्वांग फिरै तिन कारन, कपि ज्यौं नाचत ता ता थीता
मुए न संग होहिं तिहारे, बांधि जलावैं देह पलीता॥४॥
गुरु सेवा सतसंग न कीन्हीं, कनक कामिनो सों करि प्रीता।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, मरत मरत हरिनाम न लीता ५

शब्द ४२

॥ राग सोरठ ॥

कछु मन तुम सुधि राखौ वा दिन की।
जा दिन तेरी देह छुटैगी, ठौर बसौगे बन की॥१॥

जिन के संग बहुत सुख कीन्हे, मुख ढकि ह्वै हैं न्यारे।
जम को त्रास होय बहु भांती, कौन छुटावनहारे ॥२॥
देहरी लौं तेरी नारि चलैगी, बड़ी पौरि लौं माई।
मरघट लौं सब बीर भतीजे, हंस अकेलो जाई ॥३॥
द्रब्य गड़े अरु महल खड़े ही, पूत रहैं घर माहीं।
जिन के काज पचे दिन राती, सो सँग चालत नाहीं॥४॥
देव पितर तेरे काम न आवैं, जिन की सेवा लावै।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, हरि बिन मुक्ति न पावै ॥५॥

शब्द ४३

॥ राग हेली ॥

जग को आवन जान, हेली या का सोक न कीजे॥
यह संसार असार है, हेली हरि सूं करि पहिचान ॥२॥
कुटंब संग आयो नहीं, हेली ना कोइ संग को जाय।
ह्यांई मिलैं हियांई बीछुरैं, ता को झुरै बलाय॥१॥
महल द्रब्य किस काम के, हेली चलैं न काहू साथ।
राम तजे इन सों पगे, हारो अपने हाथ ॥ २ ॥
जीवत काया धोवते, हेली तिल फुलेल लगाय।
मजलिस करि कै बैठते, मूए काग न खाय ॥३॥
लाभ भये हरषै नहीं, हेली हानि भये दुख नाहिं।
ज्ञानी जन वहि जानिये, सब पुरुसन के माहिं ॥४॥
गुरु सुकदेव चितावई, हेली चरनदास हिय राखि।
मनुष जन्म दुर्लभ मिले, बेद कहत हैं साखि ॥५॥

शब्द ४४

॥ राग हेली ॥

हरि पाये फल देख, हेली पावत ही खोई गई ।
जातअटककुलखोयगये, हेलीखोयेबरन अरुभेस ॥टेक॥
जन्म मरन सब खो गये, हेली बंध मुक्ति गये खोय ।
ज्ञान अज्ञान न पाइये, नेम धर्म नहिं होय ॥१॥
लाजगईअरुभयगये, हेली साथहिं गई उपाध ।
आसा अरु करनी गई, खोये बाद बिबाद ॥ २ ॥
मैं नाहीं हरि ही रहे, तू दौरत हरि ओट ।
पावैगी जब जानि है, हरि पावन की खोट ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव सुनाइया, हेली चरनदास मन सोच ।
सब बातन सों जायगी' रहै न तेरो खोज ॥ ४ ॥

शब्द ४५

॥ राग होली ॥

अचरज अलख अपार, हेली वा की गति नहीं पाइये ।
बहु निषेध जो पै करै, हेली तौ जावैगा हार ॥टेक॥
बानी थकि बुधिहूंथकै, हेलीअनुभयथकिथकिजाय ।
ब्रह्मादिक सनकादि हूं, नारद थकि गुन गाय ॥१॥

'खोट के मानी 'ख़राबी' के हैं यह लफ़ज़ ताना के तौर पर इस्तेमाल किया गया है यानी हरि जब मिलेंगे तब मज़ा मालूम होगा कि कुछ बाक़ी न रहैगा ।

बेद थके अरु ब्यास हूं, हेली ज्ञानी थके अरु ज्ञान ।
संकर से जोगी थके, करि करि निर्मल ध्यान ॥ २ ॥
बहुतक कथि कथि हीं गये, हेली नेक न लिपटी बुद्ध ।
बाचक ज्ञानी कहत हैं, हमने पायो सुद्ध ॥ ३ ॥
पांचो ईन्द्रिन सूं लखै, हेली ताकूं सांचि न मानि ।
जो जो इन सूं देखिये, तिनकी निस्चय हानि ॥४॥
गुरु सुकदेव सुनावई, हेली समझ चरन हीं दास ।
अपने ही परकास में, आप रहा परकास ॥५॥

शब्द ४६

॥ राग काफी ॥

इन नैनन निराकार लहा ।
कहनसुननकीकौन पतीजै, ज्ञान अज्ञान हु सहज रहा १
जितदेखौतितअलषनिरंजन,अमरअडोलअबोलमहा ।
जोति जगत बिच झिलमिल झलकै, अगम
अगोचर पूरि रहा ॥२॥
अलख लखा जब बेगम हूआ, भर्मकोट जब तुर्त ढहा ।
सर्व मई सब ऊपर राजै, सुन्न सरूपी ठोस ठहा ।३।
जीवन मुक्त भया मन मेरा, निर्भय निर्गुन ज्ञानमहा ।
गुरु सुकदेव करी जब किरपा, चरनदाससुख सिंध बहा४

शब्द ४७

॥ राग बिहागरा ॥

अरे नर हरि का हेत न जाना ।
उपजाया सुमिरन के काजे, तैं कछु औरै ठाना ॥१॥
गर्भ माहिं जिन रच्छा कीन्ही, ह्वां खाने कूं दीन्हा ।
जठर अगिन सों राखि लियो है, अँग संपूरनकीन्हा २
बाहर आयबहुतसुधि लीन्ही, दसन*बिनापयप्यायो ।
दांतभये भोजन बहु भांती, हितसों तोहिं खिलायो ३॥
और दिये सुख नाना बिधि के, समुझिदेखुमनमाहीं
भूलो फिरत महा गर्बायो, तू कछु जानत नाहीं ॥४॥
तुव कारन सब कछु प्रभु कीन्हो, तूकीन्हानिजकाजा ।
जगब्यौहार पगो हीं बोलै, तोहिं न आवै लाजा ॥५॥
अजहूं चेत उलट हरि सौंहीं† जन्म सुफल करु भाई ।
चरनदास सुकदेव कहैं यौं, सुमिरन है सुखदाई ॥६॥

शब्द ४८

। राग सारंग ॥

दुनिया मगन भये धन धाम ।
लालच मोह कुटुंब के पागे, बिसरि गये हरि नाम ॥१॥
एक घरी छुटकारो नाहीं, बँधि रहे आठो जाम ।
पांच पहर धंधे में माते, तीन पहर सँग बाम‡ ॥२॥

* दशन = दांत । † ओर, तरफ़ । ‡ स्त्री ।

फूले फिरत महा गर्बाये, पवन भरे ये चाम ।
दीप कलसज्यों बिनसिजायगो,यातनकोयहिकाम॥३॥
साधु संग गुरु सेव न कीन्ही, सुमिरे ना श्री राम ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, कैसे पावो ठाम ॥ ४ ॥

शब्द ४९

॥ राग काफ़ी ॥

चला आवै चलावे* का द्योस,† कछु करिले भाई ॥टेक॥
ह्यांसे चलना होय अचानक, फिरपाछेरहैअफसोस ।१।
पी के बिषय मदिरा मतवारा, होय रहा बेहोस ॥२॥
बाट में सूल बबूल घने, अरु जाना है कइ कोस ।३।
दम ही दम ही दम छीजत है, पल पल घटै तन जोस‡॥४॥
माया मोह कुटुंब सुख ऐसे, जैसे दीखै मोती ओस ५।
सुकदेवदियोकिरपाकरि कै,राम रस काप्याला नोस§,६।
चरनदास कहैं यह बात भली, सुनि लीजै दोनों गोस‖ ७

शब्द ५०

राग सोरठ व सारंग ॥

पांचन मोहिँ लियो बिलमा¶ ।
नासा तुचा और सरवनिया, नैनन अरु रसना ॥१॥

---

*चाला, कूच । †दिवस = दिन । ‡बल । §पो । ‖गोश = कान ।
¶ रिझाय लिया ।

एक एक ने बारी बाँधी, गहि गहि लै लै जाहिँ ।
निसि दिन उनहीं के रस पागो, घर में ठहरत नाहिँ ॥२॥
अलि पतंग गजमीन मृगाज्यौं, ह्वै रह्यौ पर आधीन ।
अपनो आप सँभारत नाहीं, बिषय बासना लीन ॥३॥
ह्वै कुलवंती टोना सीखो, अनहद सुरति धरौं ।
गगन मंडल में उलटा कूवाँ, तासों नीर भरौं ॥४॥
भँवर गुफा में दीपक बारौं मंतर एक पढ़ौं ।
काम क्रोध मद लोभ होम करि लालन चित्त हरौं ॥५॥
जतन जतन करि पीव छुटाओं, फिर नहिं जानन दों ।
चरनदास सुकदेव बतावैं, निज मनहीं कर लों ॥६॥

॥ करनी ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

अरज करै कर जोरि कै, यह चरनन को दास ।
ए हो श्री सुकदेव जी, कछु पूंछन की आस ॥१॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

पूंछो मन कूं खोल करि, मेटौं सब संदेह ।
अरु तुम्हरे हिरदय बिषै, सदा हमारो ग्रेह ॥ २ ॥

भंवरा । † प्रीतम ।

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

मैं तौ चरनहिं दास हौं, तुम तौ परम दयाल ।
एकन पग पनहीं नहीं, एक चढ़ैं सुख पाल ॥३॥
यही जो मोहिं बताइये, एक मुक्ति को जाहिं ।
एक नरक को जाय करि, मार जमों की खाहिं ॥४॥
एक दुखी इक अति सुखी, एक भूप इक रंक ।
एकन को बिद्या बड़ी, एक पढ़े नहिं अंक ॥५॥
एकन को मेवा मिलै, एक चने भी नाहिं ।
कारन कौन दिखाइये, करि चरनन की छांहिं ।६।
यही मोहिं समझाइये, मन का धोखा जाय ।
ह्वै करि निस्संदेह मैं, रहौं चरन लिपटाय ॥७॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

जिन जैसी करनी करी, तैसे ही फल पाय ।
भुगतत हें वै जगत में, ता कूं बदला पाय ॥ ८॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

चरनदास यों कहत हैं, सुनो गुरू सुकदेव ।
ज्यों करि होवहिं कर्म हूं, ता कूं कहिये भेव ॥९॥

॥ गुरु वचन ॥

॥ चौपाई ॥

कहि सुकदेव संदेह मिटाऊं,
ज्यों की त्यों पूरा समझाऊं ॥
खोंटी करनी नरक हिं जावै ।
पाप छीन मृत लोक हिं आवै ॥
भले कर्म जा स्वर्ग मंझारा ।
पुन्न छीन मृत लोक हिं डारा ॥
ऐसे लोक लोक फिरि आवै ।
कर्म न छूटै दुख सुख पावै ॥
जैसे कर्म छुटै सो कहूं ।
तो पै दया करत हों रहूं ॥
खोंटे कर्म सु सकल निवारै ।
सुभ करनी कूं नीके धारै ॥
जा के फल कूं मन नहिं लावै ।
ह्वै निष्कर्म परम सुख पावै ॥
फल त्यागै सोइ चरनहिं दासा ।
चरन कमल की राखै आसा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सो पावै निर्बान पद, आवा गवन मिटाय ।
जनम मरन होवै नहीं, फिरि फिरि काल न खाय॥११॥

॥ शिष्य वचन ॥

॥ दोहा ॥

जो जो कहि गुरु देव जी, सो सो परी प्रतच्छ ।
चरनदास कूं दीजिये, साध होन की सिच्छ ॥१२॥

॥ गुरु वचन ॥

॥ दोहा ॥

वही साधवी जानिये, निरवारै सब कर्म ।
तन मन वचन सधे रहैं, पालै अपना धर्म ॥ १३ ॥
पहिले साधै वचन कूं, दूजे साधै देह ।
तीजे मन कूं साधिये, उर सूं राखै नेह ॥ १४ ॥
जिन हीं के उपदेस कूं, राखै अपनो चित्त ।
ता कूं मनन सदा करै, भूलै नाहिं नित प्रित्त ॥१५॥

॥ शिष्य वचन ॥

॥ दोहा ॥

जो जो कही सो जानिया, ए हो श्री सुकदेव ।
साधन तन मन वचन कूं, सब हीं कहिये भेव ॥१६॥

॥ गुरु वचन ॥

॥ दोहा ॥

सिष्य सो तो सों कहत हौं, नीके सुन दै कान ।
ज्यों ज्यों कर्म वचैं दसौ, ता करि पहिचान॥१७॥

॥ बचन के कर्मा का निर्णय ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम वचन के चार सुनाऊं ।
तेरे चित में नीके लाऊं ॥
एक यही जो झूठ न बोलै ।
सांच कहै तब हिरदय तोलै ॥
झूठ कहन को पातक भारी ।
जो जप करै सो देहि उजारी ॥
झूंठे का जप लागत नाहीं ।
सिद्ध होय नहिं निस्फल जाहीं ॥
अरु झूंठे की नहिं परतीतैं ।
झूंठे की खोटी सब रीतैं ॥

दूजे निन्दा नाहीं करिये ।
पर के औगुन चित्त न धरिये ॥
निन्दा का भारी है पाप ।
या सूं भी निरफल है जाप ॥
तीजे कडुवा बचन न भाखै ।
सब जीवन सों हित हीं राखै ॥
खोटा बचन महा दुखदाई,
जो साधै सो अति बलदाई ॥
खोटा बचन तपस्या खोवै,
नरक माहिं लै जाय समोवै ॥
मीठे बचन बोलि सुख दीजै,
उन के मन का सोक हरीजै ॥
कहै सुकदेवा चौथा सुनिये,
चरनदास लै मन में गुनिये ॥१८॥

॥ दोहा ॥

चौथे मौन गहे रहै, लच्छन अधिक अमोल ।
कर्म लगै जग बात सों, हरि चरचा में खोल ॥१९॥

॥ तन के कर्मों का निर्णय ॥

तन सों तीनि कर्म जो लागैं,
सो मैं कहूं तुम्हारे आगे ॥
चोरी जारी अरु हिंसा है,
इन पापन सों भारी भय है. ॥
कर्म छुटै जा की बिधि गाऊं,
भिन्न भिन्न तो कूं समझाऊं ॥
तन सों चोरी कबहुं न कीजै,
काहू की नहिं बस्तु हरीजै ॥
चोरी त्यागै सो सतबादी,
ता पर रीझैं राम अनादी ॥
जारी के कर्म ऐसे मानो ।
पर तिरिया कूं माता जानो ॥
तीजे हिंसा त्यागहिं कीजै ।
दया राखि जीवन सुख दीजै ॥
दया बराबर तप नहिं कोई ।
आतम पूजा ता सों होई ॥

कर्म छुटन की भारी गैला ।
ज्यों साबुन उजला पट* मैला ॥
सुकदेवा कहैं तन के कहे ।
तीन कर्म अब मन के रहे ॥

॥ मन के कर्मों का निर्णय ॥

॥ दोहा ॥

कहौं जो मन के तीन अब, झीनी जिन की बात ।
गुरू दिखाये दीखई, बिधि औरो न दिखात ।२०।
खोंटी चितवन बैर हीं, अरु तीजा अभिमान ।
इन सों कर्म लगैं घने, मेटैं संत सुजान ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

खोटी चितवन खोलि दिखाऊं ।
जा सों कहिये सो समुझाऊं ॥
कबहूं चितवै पर नारी कूं ।
कबहूं चितवै फल बारी कूं ॥
मन हीं मन में भोगै भोग ।
हाथ न आवै उपजै सोग ॥
कबहूं चितवै वा कूं मारौं ।
कबहूं चितवै फांसो डारौं ॥

* बस्त्र ।

कबहूं चितवै द्रब्य चुराऊं ।
वा को धन अपने घर लाऊं ॥
भांति भांति चितवन उपजावै ।
बुरे मनोरथ कर्म लगावै ॥
ता तें या का करै उपाऊ ।
होय जो साधू कर्म छुटाऊ ॥
जो चितवै तौ हरि गुरु चरना ।
ब्रह्म बिचार सदा ही करना ॥
खोंटी चितवन चितवै नाहीं ।
सदा रहै थिरता के माहीं ॥
कहि सुकदेव सो हिरदै रहै ।
इत उत कूं चित नाहीं बहै ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजा कर्म जो बैर है, महा पाप की पीट ।
सदा हिया जलता रहै, करै खोंट ही खोंट ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥

बैर भाव में औगुन भारी ।
तन छूटै जा नरक मंझारी ॥
बैरी याद रहै मन माहीं ।
हरि सों हेत लगन दे नाहीं ॥
ता तें बैर भाव नहिं कीजै ।
या कूं कर्म लाग नहिं दीजै ॥

अरु तीजा जानो अभिमाना ।
गुरु किरपा सों ना कूं जाना ॥
हूं हूं हूं हूं करता रहै ।
नीचो होय तौ अंतर दहै ॥
कबहूं फूलै मन के माहीं ।
मो समान कोउ ऊंचा नाहीं ।
मैं हौं यों कर यों कर करिया ।
मो बिन कारज कछू न सरिया ॥
अपने को चतुरा बहु जानै ।
और सबन कूं मूरख मानै ॥
अभिमानी ऐसा मन लावै ।
हरि के गुन किरिया बिसरावै ॥
गर्ब भरा खोटो बृत धारै ।
अपने मन में कबहु न हारै ॥
सुकदेव कहैं याही पहिचानो ।
नरक जायगा निस्चै आनो ॥
रनजीता सुन अभिमान न कीजै ।
कर्म बचाय परम सुख लीजै ॥ २४ ॥

॥ सुभ असुभ कर्म फल के दृष्टांत ॥

॥ दोहा ॥

कृत्यघनी* बेमुख भवै, गुरु सों बिद्या पाय ।
उन कूं जानै तनक हीं, आपन कूं अधिकाय ॥२५॥

---

* नाशुकरा ।

॥ चौपाई ॥

जैसे इक दृष्टांत सुनाऊं ।
कथा पुरानी कहि समुझाऊं ॥
महा पुरुष इक स्वामी पूरा ।
ज्ञान ध्यान में था भरपूरा ॥
लच्छन सभी हुते वा माहीं ।
आठ पहर हरि हीं को ध्याहीं ॥
उन को सिष्य आन इक भयो ।
वहि उपदेस जो नीको दयो ॥
करि कै प्यार निकट जो राखै ।
प्रीति करी अरु सब कुछ भाखै ॥
फिर रामत की अज्ञा लीन्ही ।
उन हूं करि किरपा तब दीन्ही ॥
पहुंचा एक नगर अस्थाना ।
हूां के नरन सिद्ध बड़ जाना ॥
ठहराया अरु पूजा कीन्ही ।
बहुत नरन ने कंठी लीन्ही ॥
बहुतक प्रानी आवैं जावैं ।
संध्या भोर सीस बहु नावैं ॥
महिमा देखि फूल मन माहीं ।
कहा कि हम सम गुरु भी नाहीं ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

गद्दी पर बैठा रहै, तकिया बड़ी लगाय ।
बहुत रहैं अज्ञा बिषे, सिर पर चंवर ढुराय ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु परताप नहीं वह जानै ।
अपनो ही बुधि बड़ो जु ठानै ॥
मूरख आगे क्यों नहिं भया ।
दीन होय करि द्वारे गया ॥
थोड़े ही से बहु इतराना ।
गुरु की कृपा प्यार ना जाना ॥
बार बार सोचै मन सोई ।
हमरौ गुरु क्या ऐसा होई ॥
उन कूं तो नर कोइ कोइ जानै ।
हम कूं सिगरो देस बखानै ॥
दिन दिन बढ़ता दीखै आगे ।
मेरे भाग बड़े हीं जागे ॥
मेरे मन में ऐसी आवै ।
उन का सिष्य जु कौन कहावै ॥
वहीं अचानक गुरु हूं आया ।
बैठे हीं सिर सिष्य नवाया ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

जैसे आते बैसनौ, करता वह डंडौत ।
ऐसे ही गुरु से किया, आदर किया न भैात[x] ॥ २९ ॥

x बहुत ।

॥ चौपाई ॥

देखि गुरू मन हांसी ठानी ।
वाकूं जाना बहु अभिमानी ॥
मुख सूं कह कर बहु झिड़कारा ।
कहा कि तू अभिमानी भारा ॥
नीकी बुधि तेरी गइ खोई ।
बसी मूर्खता घट में सोई ॥
मेरा सब उपदेस बिसारा ।
जग मोहन कूं मन में धारा ॥
दस बीसन कूं सिष करि भूला ।
गद्दी पर बैठो बहु फूला ॥
सिष ने कहा और क्या कीया ।
वही किया अज्ञा तुम दीया ॥
तुम ने हीं सतसंग बनाई ।
कीजो दीजो जिन मन लाई ॥
सिष्य सखा करि संग बढ़ाई ।
मेरी तुम्हरी भई बड़ाई ॥
देखि ईर्षा तुम कूं आई ।
हमरी देखी बहु अधिकाई ॥
फिरि हँसि गुरु कहि तू अज्ञानी ।
मैं कहि संगति तैं नहिं जानी ॥

मैं कहि भक्तन का संग कीजै ।
सत पुरुषन के चरन गहीजै ॥
दिन दिन ज्ञान होय सरसाई ।
हरि गुरु से हू प्रीति सवाई ॥
तेरी तो गति औरै भई ।
महा अविद्या में मति ठई ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

झरना मूंदे ज्ञान के, छाय रहा अज्ञान ।
राम रुठावन हीं किया, भई मुक्ति को हान ॥ ३१ ॥
कहा बात पूंजी कहा, इतने में गयो भूलि ।
मति ओछी घट थोथरा, ता पर बैठो फूलि ॥३२॥
विभव प्राप्त ते सिद्ध जो, देह बिसरजन होय ।
वह बीनो गुरु को तजै, जाय नरक को सोय ॥३३॥
कछू तपस्या ना करी, नाहिं किया कछु जोग ।
नातरु लगो समाधि हीं, ले बैठो तू भोग ॥ ३४ ॥
रज गुन तम गुन ले लिया, तजा सतो गुन अंग।
हरि गुरु को दइ पीठ हीं, करि बिषयन कूं संग ।३५॥
भक्ति भाव कूं छोड़ि कै, करी दंभ की हाट ।
मुक्ति पंथ कूं तजि दिया, लई नरक की बाट॥३६॥
इन बातन सों यथा सरे, बहुत भया बिख्यात ।
तुम से अधिकी मूढ़ नर, जग के घने दिखात॥३७॥

हुकुम बड़ा माया बड़ी, नामी बड़े जु भूप ।
नर नारी बहु टहल में, सुंदर अधिक अनूप ॥३८॥
संतन की गति और है, हरि गुरु से सन्मुक्ख ।
मुक्त होय छूटैं सबै, जन्म मरन के दुक्ख ॥ ३९ ॥
जगत बड़ाई में फँसे, परी अविद्या छाहिं ।
नरक भुगति जम दंड हीं, फिरि चौरासी माहिं॥४०॥

॥ चौपाई ॥

हरि औ गुरु को सिर पर धरिये ।
सतपुरुषन की संगति करिये ॥
रहिये साधुन के संग माहीं ।
ध्यान भजन जहँ छूटै नाहीं ॥
ह्वै परिपक्क जहां मन रहो ।
गुरु मत दया दीनता गहो ॥
सहज सहज उपदेस लगावो ।
भूले कूं हरि बाट बतावो ॥
तारन तरन बहुत जन भये ।
छिमा दीनता धारे गये ॥
पै उन कूं अभिमान न आया ।
नेक न पड़ी अविद्या छाया ॥

आपा मेटि गुरू हीं राखा।
जब बोले तब गुरु हीं भाखा ॥
तू अभिमानी जन्म गँवाया,
पाप बोझ सिर घना उठाया ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

वोहीं नभ की ओर से, बानी भई जु आय।
कियो गुरू से मान तैं, चौरासी कूं जाय ॥ ४२ ॥
हूां सूं गुरु रमते भये, सिष्यहिं दे फटकार।
कहा कि तेरे तन विषे, हूजो बड़ो बिकार ॥४३॥
ता पीछे कछु दिनन में, देही भयो बिकार।
निकट न आवें तासु के, हूां के कोउ नर नार ॥४४॥
कुष्ट भयो अर्धंग को, रहो न काहू जोग।
आठ पहर वा कूं भयो, निरा सोग ही सोग ॥४५॥
तन तजि कै नरकै गयो, फिरि चौरासी माहिं।
जो गुरू से मानै करै, ता की गति हू नाहिं ॥४६॥
कहैं गुरू सुकदेव जी, चरनदास परबीन।
मन सों तजि अभिमान कूं, गुरु सों रहिये दीन ॥४७॥
मान न काहू सूं करै, सब हीं सूं आधीन।
समरथ हरि की भक्ति में, जगत काज सों हीन ॥४८॥
दस कर्मों कूं जानिये, महा पाप की खान।
तन मन बचन संभारिये, यही जु अधिक सयान ॥४९॥

॥ दृष्टांत ॥

॥ दोहा ॥

कहूं एक दृष्टांत हीं, सो परमारथ भेस ।
सुनि समुझै हिरदै धरै, तौ लागै उपदेस ॥५०॥
रहै सोहावन नगर इक, बसैं लोग सुखमान ।
नर नारी सुन्दर सबै, अरु धनवंत बखान ॥५१॥
नया करैं जहं भूप हीं, बरष दिना के माहिं ।
संवत बीते तासु के, फिर वे राखैं नाहिं ॥५२॥

॥ चौपाई ॥

डारि देयं नद्दी के पारा ।
जहां भयानक अधिक उजारा* ॥
पसू आदि ताकूं भखि जावैं ।
सुपना सा देखै बिनसावै ॥
नया भूप करि अज्ञा मानैं ।
ताकूं अपना ईसुर जानैं ॥
रहैं हुकुम माहीं कर जोरैं ।
वा कूं बचन न कबहूं मोरैं ॥
छत्तर धारी हूांईं डारैं ।
सो मैं आगे कही उजारैं* ॥
कई सैकड़ों ऐसे भये ।
चेते नाहीं निस्फल गये ॥

---

* उजाड़ ।

राजा नया और इक किया ।
सो वह समझा चेता हिया ॥
मन हीं मन में कहै बिचारे ।
बहुत भूप जंगल में डारे ॥५३॥

॥ दोहा ॥

बरस दिना जब बीति है हमहुं क देहैं डारि ।
सरिता हीं के पार हीं अधिको जहां उजारि* ॥५४॥

॥ चौपाई ॥

या कूं कछू उपाय बिचारौं ।
ता सेती यह जन्म न हारौं ॥
एक दिना उन यहो बिचारा ।
देखन गयो नदी के पारा ॥
जहां भूप जा जा करि मरते ।
तिन के हाड़ हूई जा गिरते ॥
खड़ा जु होय देखि मन आई ।
नीको ठौर बनाऊं ह्यांई ॥
दृष्टि उठाय ऊंचि जो कीन्ही
कामदार कूं अज्ञा दीन्ही ॥
बन काटो अज्ञा दइ एता ।
फेरक पांच कोस में जेता ॥

* उजाड़ ।

सुंदर सा इक कोट बनावो।
ता में सुन्दर बाग रचावो॥
करो हवेली ता के माहीं।
जैसी भूपन हूं कै नाहीं॥
गिलम* बिछौने परदे लावो।
औ तैयारी सबै करावो॥
होय चुकै जब मोहिं सुनावो।
बहुत इनाम अधिक तुम पावो॥५५॥

॥ दोहा ॥

वैसे हीं बनने लगी, जैसी अज्ञा दीन।
बनते बनते बन चुकी, सुन्दर अधिक नवीन॥५६॥

॥ चौपाई ॥

फिरि राजा कूं आनि सुनाया।
राजा सुनि बहुतै सुख पाया॥
आछी बस्तु वहां पहुंचाई।
ह्यां जो रही न सुरति लगाई॥
कहा कि एक दिना ह्वां जाना।
छिन छिन होय अवधि की हाना॥
पांचक गांव कोट के साथा।
किये दिये लिखि अपने हाथा॥
अपना एक हितू मन भाई।
भरी कचहरी लिया बुलाई॥

* गलीचा।

करि इनाम ता कूं वह दिया ।
वा कूं देखा सांचा हिया ॥
और कही जो राजा होवै ।
वाहि तिलाक याहि जो खोवै ॥
वोहीं आठ महीने बीते ।
करनी करि भये मन के चीते ॥५७॥

॥ दोहा ॥

है निचिंत आनंद भये, चिंता भय नहिं कोय ।
अपना कारज करि चुके, ह्यां ह्वां एकहिं होय ॥५८॥

॥ चौपाई ॥

सुख ही में वह बर्ष बिताया ।
अवधि बीति फिरि वह दिन आया ॥
सब उमराव* जो घिरि कर आये ।
नया भूप करने कूं लाये ॥
याहि सिंहासन सूं दियो डारी ।
कहा कि तुम्हरी बीती बारी ॥
ऐसे कहि कर गहि लै चाले ।
पार नदी के जंगल घाले ॥
सुभ करनी कूं करि वह राजा ।
अपने महलन जाय बिराजा ॥

* अमीर ।

इत से भी उत सुख बहु भारी ।
ना कोइ बैरी ना जंजारी ॥
अपनी करनी से सुख पावै ।
रहै असोक न चिंता आवै ॥
कहि सुकदेव चरन हीं दासा ।
सुभ करनी करि पाया वासा ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे मानुस देह कूं, जानहु नगर समान ।
राजा या में जीव है, सुभ करनी परमान ॥ ६० ॥

॥ चौपाई ॥

नाहिं तो चौरासी जंगल है ।
भांति भांति का जितहीं भय है ॥
पसू पसू कूं जित भखि जावै ।
नित भय मानि नहीं सुख पावै ॥
बहु दुख पावै खोटी करनी ।
जैसी करनी तैसी भरनी ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

भूप उमरि अपनी क्रिया, अपना पूरन काम ।
ऐसे ही सुभ कर्म सूं, तुम हूं पावो धाम ॥ ६२ ॥

॥ दृष्टांत ३ ॥

॥ चौपाई ॥

कथा कहौं इक और पुरानी ।
करनी करै सु समझै प्रानी ॥
इंदु नाम इक ब्राह्मन हुता ।
जा के दस सुत और इक सुता ॥
सुता ब्याह दई घर की हुई ।
जा के पीछे माता मुई ॥
पिता मुवा दस पुत्र रहे थे ।
आपस में सब बैठि कहे थे ॥
ऐसी कछु जो करनी कीजै ।
जग में ऊंची पदवी लीजै ॥
इक ने कही हूजिये भूपा ।
सुन्दर देही धरो अनूपा ॥
तेज मुल्क में होवे भारी ।
हुकुम जु माने नर अरु नारी ॥
और एक ऐसे उठि बोला ।
सावधान ह्वै अंतर खोला ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

राजा हों को हुकुम तौ, थोरे ही में जोय ।
ऐसी करनी कीजिये, भूप चक्रवै* होय ॥ ६४ ॥

*चक्रवर्ती, चारो दिसा का ।

एक दीप नौ खंड में जा कूं पूरा राज ।
एक और उठि बोलिया, यह भी ओछा साज ॥ ६५ ॥
चक्रवर्ति में इंद्र बड़ देवन हूं कूं भूप ।
उमर बड़ी आनंद बड़े, दुख की लगै न धूप ॥ ६६ ॥

॥ चौपाई ॥

करनी करत इन्द्र हीं लोका ।
हो कर राजा कीजै भोगा ॥
जहां अप्सरा निर्त करत हैं ।
सुंदर अधिकी रूप धरत हैं ॥
और बड़ा भाई यों भाखा ।
सुर पति हूं कूं नाहीं राखा ॥
कहा कि पदवी ब्रह्मा की सी ।
और न दीखै काहू ही सी ॥
जा के एक दिवस हीं माहीं ।
चौदह इन्द्र सर्ब ह्वै जाहीं ॥
सब ब्रह्मांड आसरे वा के ।
बिनसि जायं मिटि जाये जा के ॥
तीनि लोक का पिता वही है ।
बेद पुरानन माहिं कही है ॥
करनी करि करि ब्रह्मा हूजै ।
ऐसी पदवी क्यों नहिं लीजै ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

सगरे यों उठि बोलिया, सत्य सत्य यह बात ।
ऐसा ही अब कीजिये, ठहराई सब भ्रात ॥ ६८ ॥

॥ चौपाई ॥

दसहू करन तपस्या लागे ।
पार ब्रह्म की ओरी पागे ॥
अधिक तपस्या कीन्हो भारी ।
मास सूखिगा दीखै नारी* ॥
हाड़ तुचा चिपटी रहि गई ।
लोहू धातु कछू ना ठई ॥
सब जन चित्रहिं से रहि गये ।
क्लिष्ट† तपस्या ऐसे ठये ॥
फूल पात जलहूं नहिं लीन्हा ।
ऐसा तप दस हूं ने कीन्हा ॥
तन त्यागे दूजे ही जन्मा ।
दसहूं भ्रात हुए जो ब्रह्मा ॥
जिन के दस ब्रह्मांड बने हैं ।
एक एक तिन माहिं ठने हैं ॥
करनी कबहुं न निस्फल जावै ।
जो मन वारै सोई पावै ॥ ६९ ॥

*नाड़ी, हड्डी । † क्लेशवाली ।

॥ दोहा ॥

करनी सूं भये इन्द्र हूं, करनी ब्रह्मा सोय ।
करनी सूं ईसुर भये, सुकदेवा कहै सोय ॥ ७० ॥
दस हजार इक बीस हीं, बरस तपस्या कीन्ह ।
हरि जा कूं बदलो दियो, मांगो सो बर दीन्ह॥७१॥
चारौ जुगके माहिं जो, करनी हीं परधान ।
गुरु सुकदेवा कहत है, चरनदास उर आन ॥ ७२ ॥
उज्जल करमन के किये, दिन दिन उज्जल होय ।
मन में उपजै भक्ति हीं, प्रेम पदारथ सोय ॥७३॥

॥ चौपाई ॥

चरन दास तुम करनी कीजै ।
या हीं में मन नीके दीजै ॥
ऐसा जनम बहुरि नहिं पैहौ ।
बीति जाय पुनि बहु पछितैहौ ॥
मानुष देह या दुर्लभ जानो ।
वा कूं पा सुभ करनी ठानौ ॥
या देही में करी कमाई ।
जाय स्वर्ग में नव निधि पाई ॥
मूरख करनी को नहिं जानै ।
कथनी कथि कथि बहुत बखानै ॥
थोथी कथनी काम न आवै ।
थोथा फटकै उड़ि उड़ि जावै ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

कथनी हीं के बीच में, लीजै तत्व बिचार ।
सार सार गहि लीजियो, दीजो डारि असार ॥७५॥

॥ चौपाई ॥

थोथी कथनी वही जु जानौ ।
बिन करनी जो करै बखानौ ॥
लोक परलोक न सोभा पावै ।
बकि बकि बकि खाली मरि जावै ॥
कथनी के सूरा वहु जाने ।
करनी में कायर अरु याने* ॥
सूरा वही जो करनी करै ।
दया धरम लै सन्मुख अरै† ॥
पांव धरै सो नाहिं उठावै ।
करनी करता चला जु जावै ॥
फिरै जबहिं फल लै कर आवै ।
सो वह सूरा मल्ल कहावै ॥
कायर बीचहिं सूं फिरि आवै ।
सो वह करनी कूं बिसरावै ॥
आपन खोंट न जानै भोंदू ।
वह तौ कथनी ही का गोंदू ॥ ७६ ॥

*बच्चे । †अड़ै ।

ऐसे जग में बहुत हैं, वैसे जग में नाहिं ।
कोई कोई देखिये, सतगुरु के मध माहिं ॥७७॥

॥ चौपाई ॥

होनहार को बहुत बतावैं ।
पै ता को कछु मरम न पावैं ॥
कहैं कि होनी होय सो होई ।
ता कूं मेटि सकै नहिं कोई ॥
या कूं समुझि उपाय न करिया ।
सरधा तजि कायर ह्वै परिया ॥
समुझि निरखहू गृहो भये हैं ।
भेख धारि बिन करनि रहे हैं ॥
जानत नाहिं जो पिछली करनी ।
अब के भई जो होनी भरनी ॥
परालब्ध अरु भाग कहावै ।
पिछले करमन से उपजावै ॥
अब के करै सो आगे आवै ।
कछू कछू फल अभी दिखावै ॥
कै काहू गाली दै देखो ।
कै काहू को मारि बिसेखो ॥

कै काहू को असन[1] खवावो ।
कै काहू को सीस नवावो ॥
कै करि चोरी धूत[2] हिं खेलौ ।
कै काहू को गुस्सा झेलौ ॥
दोनों का फल आगे आवै ।
चरनदास सुकदेव बतावै ॥
प्रगट देखिये यही तमासा ।
नीच ऊंच करनी परकासा ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

कोटि यही उपदेस है, यही जु सगरी बात ।
करनी हीं बलवंत है, यों सुकदेव दिखात ॥७९॥
मन की करनी ज्ञान ह्वै, परमातम लखि लेय ।
ब्रह्म रूप ह्वै जाय जब, छूटै सब हीं भेय ॥८०॥
भवसागर में भय घने, ता की लगै न आंच ।
झूठे को भय बहुत है, भय नहिं ब्यापै सांच ।८१।
करनी हीं सूं पाइये, पारब्रह्म का खोज ।
सतगुरु पै चल जाइये, मेटै सब हीं सोज ॥८२॥
बिना किये कछु होय ना, आपहि लेहु बिचार ।
करनी देखी दूर लौं, सोचा बारम्बार ॥८३ ॥
चरनदास तो सूं कहूं, उठि उद्यम कूं लाग ।
आलस सकल गंवाय कै, बिषयन में मत पाग ॥८४॥

[1] भोजन । [2] जुवा ।

कारज लोक प्रलोक के, बिन करनी हों नाहिं।
करनी हीं सूं होत है, करनी सब के माहिं ॥८५॥
खोटे करमन सूं दुखी, या दुनिया के बीच।
करनी हीं सूं होत है, नर ऊंचा औ नीच ॥८६॥
संगति मिलि करने लगे, ऊंचे नीचे कर्म।
बुधि मैली जो होत है, खोवै अपना धर्म ॥८७॥
सत संगति सूं रहत है, धर्म कुसंगति जाय।
चरनदास सुकदेव कहि दोनों दिये दिखाय ॥८८॥
धर्म गया जब सत गया, भ्रष्ट भई अति बुद्धि।
तबहिं पाप अरु पुन्न की, कछू रही ना सुद्धि ॥८९॥
बिरले जन को होत है, पाप पुन्न की सूझ।
सोइ छूटै जग जाल सूं, बहुतै रहे अरूझ ॥९०॥
तन मन साधै बचन हीं, पाप न लगने देह।
सुकदेव कहैं चरनदास सुनि, अधिकी साधन येह ॥९१॥
सब जीवन सुख दीजिये, सब सों मीठा बोल।
आतम पूजा कीजिये, पूजा यही अतोल ॥९२॥
दया पुष्प चंदन नवन*, धूप दीप दे मन्न।
भांति भांति नैवेद सूं, करै देव परसन्न ॥९३॥
जो कोइ आवे राजसी, देहु बड़ाई ताहि।
जा कूं देखो तामसी, करो नम्रता वाहि ॥९४॥

* दीनता।

जो कोइ होवे सातुकी, मिलो ताहि तजि मान ।
गुढ़ी* खोलि चरचा करो, लीजै तत मत छान ॥९५॥
सब हीं कूं परसन करै, आप रहै परसन्न ।
बास लहै हरि ध्यान हीं, ह्यां कहै सब धन धन्न ।९६॥
राजस तामस सातुकी, छेतर तीनहिं भांति ।
छेत्रक आतमदेव है, सब कोसहिं ये क्रांति† ।९७।
सब में देखै आप कूं, सब कूं अपने माहिं ।
पावै जीवन मुक्ति कूं, या में संसय नाहिं ॥९८॥
सब में देखै आतमा, आपन में करि ध्यान ।
यही ज्ञान ब्रह्म ज्ञान है, यही जु है विज्ञान ॥९९॥
अहंकार मिटि ब्रह्म हो, परमातम निर्बान ।
सुकदेवा हो कहत हूं, चरनदास हिय आन।१००॥
जो तैं पूछा सो कहा, भेद कहा सब खोल ।
अरु तेरे हिय में कछू, सकुच खोल कर बोल।१०१।

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

धन्न सिरी‡ सुकदेव जी, बचन तुम्हारे धन्न ।
सब संदेह मिटाय करि, निस्चल कीन्ह्यो मन्न।१०२।
मो से रंक गरीब की, तुम हीं पकरी बाँहैं ।
भव बूड़त राखा मुझे, चरनकँवल की छाहैं ।।१०३॥

* गूढ़ बातैं । † आतमदेव का प्रकाश तीनों कोषों में है । ‡ श्री ।

आपहिं तुम किरपा करी, मैं कित लहता तोहिं।
तुम कूं पाऊं ढूंढ़ करि, इतनी शक्ति न मोहिं।१०४।
व्यास पुत्र सुकदेव तुम, जक्त माहिं बिख्यात।
तुम दरसन दुर्लभ महा, पुरुषन कूं न दिखात॥१०५।
बड़े भाग मेरे जगे, पूरबले परताप।
किरपा श्री गोपाल की, आय मिले तुम आप।१०६॥
चरनदास अपनो कियो, दियो परम संतोष।
बैठि करूंगो ध्यानहीं, अब कुछ रह्यो न सोक१०७॥
चलत फिरत ह्यां आइया, तुम भरि दीन्ह्यो मोहिं।
नैन प्रान तन मन सभी, देखत अरपे तोहिं॥१०८॥
चाह मिटी सब सुख भये, रहा न दुख का मूल।
चाहूं तौ चाहूं यही, तुम चरनन की धूल॥१०९॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ दोहा ॥

जोग तपस्या कीजियो, सकल कामना त्याग।
ता कूं फल मन चाहियो, तजो दोष अरु राग।११०॥
अष्ट सिद्धि जो पै मिलैं, नेक न कीजै नेह।
धरि हिरदै परमातमा, त्यागे रहियो देह॥१११॥
जेती जग की बस्तु है, ता में चित्त न लाय।
सावधान रहियो सदा, दियो तोहिं समुझाय।११२।

बार बार तो सूं कहूं, ह्यां मत दीजो चित्त।
सिद्धि स्वर्ग फल कामना, तजि कीजो हरि मित्त।११३।
जो कीजै हरि हेत हीं, ए हो चरनहिं दास।
भक्तिजोग अरु सुभ करम, नीको ठौर निवास ॥११४॥

॥ शिष्य बचन ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे ही सब कहूंगो, तुम चरनन परताप।
अष्ट सिद्धि समुझो चहूं, बरनन कीजै आप ॥११५॥
समझूं तौ त्यागूं उन्हैं, करवावो पहिचान।
कहा नाम लच्छन कहा, कौन रहै अस्थान ॥११६॥

॥ गुरु बचन ॥

॥ दोहा ॥

कहि सुकदेव बरनन करूं, अष्ट सिद्धि के नावँ।
लच्छन गुन सब हीं सहित, नीके तोहिं समुझावँ।११७।

॥ अष्ट सिद्धि के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथमै अनिमा सिद्धि कहावै।
चाहै तौ छोटा ह्वै जावै॥
अनु* समान छिपि जावै सोई।
ऐसी कला जा पावै कोई॥

---

* बहुत छोटा।

दूजी महिमा लच्छन एता ।
चाहै बड़ा होय वह जेता ॥
तीजी लघिमा वह कहवावै ।
पुष्प तुल्य हलका ह्वै जावै ॥
चौथी गरिमा कहूं बिचारी ।
चाहै जितना होवै भारी ॥
पचवीं प्रापति सिद्धि कहावै ।
जित चाहै तित हीं ह्वै आवै ॥
छठवीं पराकाम्य गुन धरै ।
सक्ति पाय चाहै सो करै ॥
सतवीं सिद्धि ईसता रानी ।
सब कूं अज्ञा माहिं चलानी ॥११८॥

॥ दोहा ॥

बसीकरन सिधि आठवीं, कहैं सिरी सुकदेव ।
चाहै जिसको बसि करै, अपना हीं करि लेव॥११९॥
चरनदास सिद्धैं कहीं, समुझि लेहि मन माहिं ।
जो हैं जनुवां राम के, इन में उरझैं नाहिं॥१२०॥

॥ चौपाई ॥

जोग किये आठौ सिधि पावै ।
कै भोगै कै चित न लगावै ॥

जोग किये मन जीता जावै ।
पलटै जीव ब्रह्म गति पावै ॥
जोगेसुर चाहै सो करै ।
भरी रितावै* रीती भरै ॥
जोगेसुर ईसुर ह्वै जाई ।
दिन दिन बाढ़ै कला सवाई ॥
तजिये भोग जोग हीं करिये ।
तिरगुन परे ध्यान हीं धरिये ॥
चौथे पद में करै निवासा ।
काहू बिधि का रहै ना सांसा† ॥
जोग करै सोई परबीना ।
सुकदेव कहैं परगट कहि दीना ॥१२१॥

॥ दोहा ॥

पोथो माहीं देखि कर, करै जो कोई जोग ।
तन छीजै सिधि ना भवै, देही आवै रोग ॥१२२॥
देखि देखि गुरु सूं करै, ले अज्ञा रहि संग ।
सिद्धि होयं साधन सबै, कछू न आवै भंग ॥१२३॥
जोग तपस्या में बड़ा, पहुंचावै हरि पास ।
जनम मरन बिपता मिटै, रहै न कोई आस ॥१२४॥
ज्ञान सुरति दोउ एक ह्वै, पलटि अगोचर जाय ।
शब्द अनाहद में रतै, मन इन्द्री थिर पाय ॥१२५॥

* ख़ाली करै । † संसय ।

॥ शिष्य वचन ॥

॥ दोहा ॥

मैं समझी जानी सभी, सूझि भई हिय माहिं ।
किरपा करि जो जो कहा, ता कूं विसरूं नाहिं ॥१२७॥

॥ चौपाई ॥

व्यास पुत्र तुम मम गुरु देवा ।
करूं मानसी तुम्हरी सेवा ॥
मन में तुम्हरी सेवा साजूं ।
तुम सूं पूछि करूं सब काजू ॥
मेरे ध्यान सिताबी आये ।
जो थे सो संदेह मिटाये ॥
मैं तो ध्यान करत ही रहूं ।
तुम्हरी मूरति हिरदे गहूं ॥
मेरे जीवन प्रान अधारा ।
मैं नहिं रहूं चरन सूं न्यारा ॥
तुम्हरो चरनन दास कहाऊं ।
बार बार तुम पै बलि जाऊं ॥
तुम हीं को ईसुर करि मानूं ।
पार ब्रह्म तुम हीं कूं जानूं ॥
और न कोई दूजी आसा ।
मो हिरदय में राखौ बासा ॥ १२८ ॥

॥ दोहा ॥

अपने चरनहिं दास को, सब बिधि दिया अघाय ।
अस्तुति करूं तो क्या करूं, मो पै कही न जाय ॥१२९॥

—— :o: ——

॥ गुरुमुख लच्छन ॥

॥ चौपाई ॥

अब गुरुमुख के लच्छन गाऊं ।
जुदे जुदे करि सब समझाऊं ॥
इन कूं समुझि धरै हिय कोई ।
पूरा गुरुमुख कहिये सोई ॥
प्रथमहिं गुरु सूं झूठ न बोलै ।
खोटी खरी करै सब खोलै ॥
दूजे गुरु कूं पै न लगावै ।
निस्चय गुरु के चरन मनावै ॥
तीजे अज्ञाकारी जानो ।
इन लच्छन गुरुमुखी पिछानो ॥
जो कोइ गुरु का लेवै नाम ।
ताकूं निहुरि करै परनाम ॥
जो कहुं देखै गुरु का बाना ।
ता कूं जानै गुरू समाना ॥
चरनदास सुकदेव बखानै ।
गुरु भाई कूं गुरु सम जानै ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु भाई कूं पूजिये, धरिये चरनन सीस ।
चरनोदक फिरि लीजिये, गुरु मत त्रिस्वा बीस ॥२॥

॥ चौपाई ॥

जो कहुं गुरु का बसतर पावै ।
हिये लगाय चूमि दृग छ्वावै* ॥
गुरू देस का मानुष आवै ।
दै परिकरमा सीस नवावै ॥
कहां दया करि दरसन दीने ।
मेरे पाप भये सब छीने ॥
जो अपने गुरु द्वारे जैये ।
देखत पौरि† बहुत हरखैये ॥
ह्वांईं सूं दंडौत जु कीजै ।
दरसन करि करि सर्बस दीजै ॥
फिर ठाढ़ो रहै जोरे हाथा ।
बैठै जब अज्ञा दें नाथा ॥
जो बोलैं सो मन में धरिये ।
अपने अवगुन सब हीं हरिये ॥
चरनदास सुकदेव बतावै ।
ऐसा गुरुमुख राम रिझावै ॥ ३ ॥

* छुवावै । † देवढ़ी ।

चुने हुए दोहे जिन में मन को मोड़ कर गुरू और मालिक की भक्ति में लगाने का उपदेश है ॥

गुरू कहैं सो कीजिये, करैं सो कीजै नाहिं ।
चरनदास की सीख सुन, यही राख मन माहिं ॥१॥
कथा सुने ब्रत हूं किये, तीरथ किये अघाय ।
गुरुमुख के हूए बिना, जप तप निरफल जाय ॥२॥
दुखी न काहू कूं करै, दुख सुख निकट न जाय
सम दृष्टी धीरज सदा, गुन सात्विक कूं पाय ॥३॥
भंवर गुफा मंडल अखँड, तिरबेनी जहँ न्हान ।
नित परबी जहँ होत है, करै पाप की हान ॥ ४ ॥
कँवल हंस दल सातवां, सीस मध्य हीं बास ।
तहां देवता सतगुरू, पूरी करै जो आस ॥ ५ ॥
जग का कहा न मानिये, सतगुरु से ले बुद्धि ।
ता कूं हिय में राखिये, करो सिताबी सुद्धि ॥ ६ ॥
जिन कूं मन बिरकत* सदा, रहैं जहां चित होय ।
घर बाहर दोउ एक सा, डारी दुबिधा खोय ॥७॥
कै घर में कै बाहरे, जो चित आवै नाम ।
दोनों होयं बराबरी, कै जंगल कै ग्राम ॥ ८ ॥

*विरक्त ।

जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज* सर† माहिं ।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं ॥९॥
अब के चूके चूक है, फिर पछितावा होय ।
जो तुम जक्त न छोड़िहो, जन्म जायगो खोय ॥१०॥
छोड़ जगत की बासना, यही जु छुटन उपाव ।
हे मन ऐसी धारिये, अब हीं नीको दांव ॥११॥
जग माहीं न्यारे रहो, लगे रहो हरि ध्यान ।
प्रथवी पर देही रहै, परमेसुर में प्रान ॥ १२ ॥
ज्यों तिरिया पीहर‡ बसै, सुरति रहै पिय माहिं ।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि कूं भूलैं नाहिं ॥१३॥
ज्यों किरपिन§ बहु दाम हीं, गाड़ि जिमीं के नीच ।
सदा वाहि तकते रहै, सुरति रहै ता बीच ॥१४॥
तन छूटे हो सरप‖ हीं, जा बैठै वा ठौर ।
जहां आस तहँ बास है कहूं न भरमै और ॥१५॥
जग त्यागो बैराग लै, निस्चै मन कूं लाव ।
आठ पहर साठो घरी, सुमिरन सुरति लगाव ॥१६॥
सब सूं रखु निरबैरता, गहो दीनता ध्यान ।
अंत मुक्ति पद पाइहै, जग में होय न हानि ॥१७॥

* कंवल । † तालाब । ‡ मायके । § कंजूस । ‖ सांप ।

चरनदास यों कहत हैं, बड़ी दीनता जान ।
औरन की तो क्या चलै, लगै न माया बान ॥१८॥
दया नम्रता दीनता , छिमा सील संतोष ।
इन कूं लै सुमिरन करै, निस्चै पावै मोख[*] ॥१९॥
ये सब लच्छन राम में, परगट दीखैं मोहिं ।
जो वे आवैं तुझ बिषे, प्यार करैं हरि तोहिं ॥२०॥
मिटते सूं मत प्रीत करि, रहते सूं करि नेह ।
झूठे कूं तजि दीजिये, सांचे में करि गेह[†] ॥२१॥
ब्रह्म सिंध की लहर है, ता में न्हान सँजोय ।
कलिमल सब छुटि जायंगे, पातक रहै न कोय ॥२२॥
अरसठ तीरथ तोहि बिषे, बाहर क्यों भटकाय ।
चरनदास यों कहत हैं, उलटा हो घट आय ॥२३॥
भरमत भरमत आइया, पाई मानुख देह ।
ऐसो औसर फिर कहां, नाम सिताबी लेह ॥२४॥
करै तपस्या नाम बिन, जोग जज्ञ अरु दान ।
चरनदास यों कहत हैं, सब हीं थोथे जान ॥२५॥
अधिकी ऊंचा नाम है, सब करनी का जीव ।
अष्टादस[‡] अरु चारि[§] का, मथि कर काढ़ा घीव ॥२६॥
खाते पीते नाम ले, बैठे चलते सोय ।
सदा पबित्तर नाम है, करै उजला तोय ॥२७॥

[*] मुक्ति । [†] घर । [‡] अट्ठारह पुरान । [§] चार बेद ।

नीचन कूं ऊंचा करै, ऊंचन कूं करै देव ।
देवन कूं हरि हीं करै, रहै न दूजा भेव ॥२८॥
चारौ जुग में देखि ले, जिन जपिया जिन पाव ।
टेक पकरि आगे धसै, परा न पीछे पांव ॥२९॥
जैसी गति उनको भई, गावत साध पुरान ।
वैसी तेरी होयगी, यह निस्चै करि जान ॥३०॥
बाजीगर बाजी रची, सब गति पूरन साज ।
किये तमासे बहुत हीं, तोहिं दिखावन काज॥३१॥
देखि देखि देखत रहो, अस्तुति मुख सूं भाखि ।
वा की चतुराई सबै, लैकरि मन में राखि ॥३२॥
वैसा तौ रंगरेज ना, वैसा छीपी नाहिं ।
वैसा कारीगर नहीं, या दुनिया के माहिं ॥३३॥
अजब अजब अचरज किये, अद्भुत अधिक अपार ।
जल थल पवन अकास में, देखो दृष्टि उघार ॥३४॥
सृष्टि बाग माली रची, भांति भांति गुलजार ।
रीझि रीझि सिर दीजिये, ए हो निरखि बहार ॥३५॥
देखि होय परसन्न हीं, तू वा कूं गुन मान ।
चरन दास जो बुद्धि है, अधिक सुघरता जान ॥३६॥
बहुत प्यार तो पै करै, तू नहिं जानत सार ।
वाहि भुलाये हीं फिरै, नेक न करै संभार ॥३७॥
राम बिसारो आदि सूं, लियो द्रव्य अरु नार ।
याही तें भरमत फिरो, तन धरि बारम्बार ॥३८॥

गई सो गइ अब राखिले, ए हो मूढ़ अयान ।
निःकेवल हरि कूं रटो, सीख गुरू की मान ॥३९॥
सोवन में नहिं खोइये, जन्म पदारथ पाय ।
चरन दास ह्वै जागिये, आलस सकल गंवाय ।४०।
सोवन हीं में हानि है, जागन में बहु लाभ ।
बुद्धि उपज हीं होत है, मुख पर चढ़ै जु आभ ।४१।
दिन को हरि सुमिरन करो, रैनि जागि कर ध्यान ।
भूख राखि भोजन करो, तजि सोवन की बान।४२।
चारि पहर नहिं जगि सकै, आधि रात सूं जाग ।
ध्यान करो जप हीं करो, भजन करन कूं लाग ।४३।
जो नहिं सरधा दो पहर, पिछले पहरे चेत ।
उठ बैठो रटना रटो, प्रभु सूं लावहु हेत ।४४।
जागै ना पिछले पहर, ता के मुखड़े धूल ।
सुमिरै ना करतार कूं, सभी गवांवै मूल ॥४५॥
जागै ना पिछले पहर, करै न आतम ध्यान ।
ते नर नरकै जायँगे, बहुत सहैं जम सान ॥४६॥
जागै ना पिछले पहर, करै न गुरुमत जाप ।
मुंह फारे सोवत रहै, ताकूं लागै पाप ॥४७॥
पिछले पहरे जाग करि, भजन करै चित लाय ।
चरनदास वा जीव की, निस्चै गति ह्वै जाय ॥४८॥

¹ आब, रौनक़ । ² दृढ़ ।

पिछले पहरै जाग करि, भरि भरि अमृत पीव ।
बिषै जक्त की ना रहै, अमर होय कर जीव।४९।
जन्म छुटै मरना छुटै, आवा गवन छुटि जाय।
एक पहर को रात सूं, बैठा हो गुन गाय ॥५०॥
पहिले पहरे सब जगैं, दूजे भोगी मान ।
तीजे पहरे चोर ही, चौथे जोगी जान ॥५१॥
मरजादा की यह कही, क्या बिरक्त परमान ।
आठ पहर साठौं घरी, जागै हरि के ध्यान ।५२।
जो कोइ विरही नाम के, तिन कूं कैसी नींद ।
सस्तर लागा नेह का, गया हिये को बींध ॥५३॥
तिन से जग सहजै छुटा, कहा रंक कहा भूप ।
चले गये घर छोड़ि कै, धरि बिरक्त का रूप ।५४।
जिन को मन बिरकत सदा, रहो जहां चित होय ।
घर बाहर दोउ एकसा, डारी दुबिधा खोय ।५५।
सोये हैं संसार सूं, जागे हरि की ओर ।
तिन कूं इक रसहीं सदा, नहीं सांझ नहिं भोर ।५६।
उन कूं नींद न आवई, राम मिलन की चीत ।
सोवैं ना सुख सेज पै, तजि के हरि सूं मीत ।५७।
कैसे वे हरि सूं मिले, जिन के ऊंचे भाग ।
कैसे वे हरि त्याग के, रहे जक्त सूं लाग ॥५८॥
सोवन जागन भेद की, को इक जानत बात ।
साधू जन जागत तहां, जहां सबन की रात ।५९।

जो जागै हरि भक्ति में, सोई उतरै पार।
जो जागै संसार में, भवसागर में ख्वार ।६०।
कै जागत हूका* भरा, कै जागा बस काम।
कै जागा जग टहल में, लागि रहा धन धाम॥६१॥
ऐसे जनम गंवाय दे, महा मूढ़ अज्ञान।
चौरासी में फिर चले, मन का कहा जु मान।६२।
सतगुरु सरनै आय करि, कहा न मानै एक।
ते नर बहु दुख पाइ हैं, तिन कूं सुख नहिं नेक।६३।
सतगुरु सरना ना लगे, किया न हरि का खोज।
सो खर कूकर सूकरा, अरु जंगल का रोझ†।६४।
पेट भरे भर सोइया, ते नर पसू समान।
पर नारी कै आपनी, तिन का नाहीं ज्ञान॥६५॥
जैसा तैसा खाय करि, पेट भरे भरि लेह।
पड़ कर सोवे भोर लौं, सो सूकर की देह।६६।
हरि चरचा बिन जो बकै, सो कूकर की भूंस।
कहि रनजित वह सांझ लौं, खाय धूंस ही धूंस॥६७॥
जो पावै सोई चरै, करै नहीं पहिचान।
पीठ लदै हरि ना जपै, ताकूं खर हो जान॥६८॥
रोझ† जान वा देह कूं, ता कूं नहीं बिचार।
फिरै बिना मरजाद हीं, बहुता करै अहार॥७९॥
बहुता किये अहार ही, मैली रही जो बुद्धि।
हरि के निर्मल नाम को, कैसे आवै सुद्धि॥ ७०।

* हुक्का। † लीलगाय।

सूच्छम भोजन खाइये, रहिये ना परि सोय ।
ऐसी मानुख देह कूं, भक्ति बिना मन खोय ॥७१॥
जनम चलो ही जात है, ज्यों कूवे सैलाव* ।
दौरत मृग की छांह को, नेक नहीं ठहराव ॥७२॥
या सिगरो उपदेस हो, मैं आपन कूं कीन ।
मो मन कूं आपा घना, कहीं होय आधीन ॥७३॥
सतगुरू से मागूं यही, मोहिं गरीबी देहु ।
दूर बड़प्पन कीजिये, नान्हा हीं कर लेहु ॥७४॥
आदि पुरुष किरपा करौ, सब औगुन छुटि जाहिं ।
साध होन लच्छन मिलैं, चरन कमल की छांहिं ॥७५॥
तुम्हरी सक्ति अपार है, लीला को नहिं अंत ।
चरनदास यौं कहत हैं, ऐसे तुम भगवंत ॥७६॥
तुम्हरी कहा अस्तुति करूं, मो पै कही न जाय ।
इतनी सक्ति न जीभ को, महिमा कहै बनाय ॥७७॥
किरपा करी अनाथ पर, तुम हो दाना नाथ ।
हाथ जोड़ मांगूं यही, मम सिर तुम्हरा हाथ ॥७८॥
हिय हुलसो आनंद भयो, रोम रोम भयो चैन ।
भये पवित्तर कान ये, सुनि सुनि तुम्हरे बैन ॥७९॥
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु, गुरू देवन के देवा ।
सर्ब सिद्धि फल देव, गुरू तुम मुक्ति करेवा ॥८०॥
गुरु केवट तुम होय, करो भव सागर पारो ।
जीव ब्रह्म करि देत, हरो तुम ब्याधा सारो ॥८१॥

* सैलाब ।

श्री सुकदेव दयाल गुरु, चरनदास के सीस पर ।
किरपा करिअपनोकियो, सवहीं बिधि सूंहाथधरि॥८२
आदि पुरुष पर मात्मा, तुम्हैं नवाऊँ माथ ।
चरनन पास निवास दे, कीजै मोहिं सनाथ ।८३।
तुम्हरी भक्ति न छोड़ हूं, तन मन सिर क्यों न जाव।
तुम साहब मैं दास हूं, भलो बनो है दाव ॥८४॥
आपै भजन करैं नहीं, औरै मने करैं ।
चरनदास वै दुष्ट नर, भ्रम भ्रम नरक परैं ।८५॥
औरन कूं उपदेस करि, भजन करैं निष्काम ।
चरनदास वै साध जन, पहुंचैं हरि के धाम ।८६।
भक्ति पदारथ उदय सूं, होय सभी कल्यान ।
पढ़ै सुनै सेवन करै, पावै पद निर्बान ।८७।
भक्ति पदारथ मैं कही, कछु इक भेद बखान ।
जो कोइ समझै प्रीत सूं, छूटै जम दुख सान ।८८।
सुन्न सहर हम बसत हैं, अनहद है कुल देव ।
अजपा गोत बिचारि ले, चरनदास यहि भेव ।८९।
दाद सुनीद जहां नहीं, तहां न हाल न काल ।
जौहर जिसम इसम नहीं, चरन दास नहिं खाल ।९०।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस सीरीज़ की पुस्तकों के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें ।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तौ भी सर्व साधारण के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है और जो लोग सबसक्रैबर अर्थात सीरीज़ के पक्के गाहक होकर २) (दो रुपये) वार्षिक मूल्य पेशगी दे देंगे उन को डाक महसूल और मनीआर्डर कमिशन भी हर पुस्तक पर न देना पड़ेगा और जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं और जिन के नाम आगे लिखे हैं सब एक साथ लेने से दाम में एक रुपये की कमी कर दी जायगी और डाक महसूल भी न लिया जायगा ।

अब पलटू साहब की बानी का दूसरा भाग हाथ में लिया गया है।

मनेजर,

बेलवेडियर छापाख़ाना,

इलाहाबाद ।

सितंबर सन् १९०८

फ़िहरिस्त पुस्तकों की जो छप गई हैं

तुलसीदास साहब (हाथरस के प्रसिद्ध संत) की शब्दावली, ५२० पृष्ठ रायल अठपेजी ... २)

कबीर साहब के चुने हुए भजन, मय उनके जीवन चरित्र के पहिला भाग १२० पृष्ठ अठपेजी ... ।≡)

कबीर साहब की बानी का दूसरा भाग १६४ पृष्ठ ॥=)

पलटू साहब की बानी. १२८पृष्ठ अठपेजी ... ॥)

चरनदास जी की बानी, पहिला भाग १३६ पृष्ठ ॥)॥

चरनदास जी की बानी का दूसरा भाग १२४ पृष्ठ ।≡)॥

सहजोबाई की बानी ६४ पृष्ठ अठपेजी ... ।)

दरिया साहब की शब्दावली ६८ पृष्ठ सोलह पेजी ।)

कबीर साहब की अखरावती २३ पृष्ठ सोल्ह पेजी -)

अहिल्याबाई का जीवन चरित्र भी अंगरेज़ी पद्य में छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संत बानी सीरीज़ की नहीं है) ... =)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है ।

जो लोग दस जिल्द किसी एक पुस्तक की एक साथ मंगावेंगे उन से डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन न लिया जायगा ।

सितंबर सन १९०८ ई०

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद ।